



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं० 3] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 17, 1970 (पौष 27, 1891)
No. 3] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 17, 1970 (PAUSA 27, 1891)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

नोटिस (NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 18 दिसम्बर, 1969 तक प्रकाशित किये गये हैं :

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 18th December 1969:—

अंक (Issue No.)	संख्या और तिथि (No. and Date)	द्वारा जारी किया गया (Issued by)	विषय (Subject)
199	No. 197-ITC(PN)/69 dated 17th December, 1969	Ministry of Foreign Trade	Import applications for non-ferrous metals by actual users engaged in industries other than priority industries for April, 1969—March 1970.
200	No. 198-ITC (PN)/69, dated 18th December, 1969	Ministry of Foreign Trade & Supply	Import of tractors by agriculturists as gift.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियाँ प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल साइम्स, दिल्ली के नाम माँग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी।
माँग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुँच जाने चाहिए।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची (CONTENTS)

भाग I—खंड 1—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	पृष्ठ 31	भाग II—खंड 3—उप-खंड (2)—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं ..	पृष्ठ 429
भाग I—खंड 2—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	71	भाग II—खंड 4—रक्षा मन्त्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश ..	5
भाग I—खंड 3—रक्षा मन्त्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	—	भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ क्षेत्र-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अश्वीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं ..	63
भाग I—खंड 4—रक्षा मन्त्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं ..	51	भाग III—खंड 2—एकसूच कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसों ..	17
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम ..	—	भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	5
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों सम्बन्धी प्रवर समितियों की रिपोर्टें ..	—	भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विधिक अधिसूचनाएं जिनमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसों शामिल हैं ..	13
भाग II—खंड 3—उप-खंड (1)—(रक्षा मन्त्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) ..	215	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसों ..	11
PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court ..	31	प्रक संख्या 3— 10 जनवरी 1970 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी सम्बन्धी साप्ताहिक रिपोर्ट .. 20 दिसम्बर 1969 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बच्ची बीमारियों से हुई मृत्यु से सम्बन्धित आंकड़े ..	89 101
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court ..	71	PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	429
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence ..	—	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	5
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Officers issued by the Ministry of Defence ..	51	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	63
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations ..	—	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	17
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills ..	—	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	5
PART II—SECTION 3.—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	215	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies ..	13
		PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	11
		SUPPLEMENT No. —3 Weekly Epidemiological Reports for week-ending 10th January 1970 .. Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 20th December 1969 ..	89 101

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय की छाप) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 5 जनवरी 1970

सं० 1-प्रेड/70—राष्ट्रपति प्रादेशिक सेना के निम्नांकित आयुक्त अधिकारियों को सराहनीय सेवा के लिये "प्रादेशिक सेना अवलक्षण" प्रदान करते हैं :-

मेजर गोपालपिल्लाई माधवन नायर (टी ए-40175), आटिलरी

मेजर मोहिन्द्र सिंह (टी ए-40203), आटिलरी

मेजर इन्द्रजीत तनेजा (टी ए-40255), आटिलरी

मेजर गौतम देव (टी ए-40276), आटिलरी

मेजर तेज बहादुर सरदाना (टी ए-40323), आटिलरी

मेजर कुंवर सवाई सिंह शेखावत (टी ए-40384), आटिलरी

कप्तान बीरेन्द्र सेन कपूर (टी ए-40447), आटिलरी

कप्तान गोविन्दराजुलू रामानुजम (टी ए-40533), इन्फैंट्री

नागेन्द्र सिंह, राष्ट्रपति के सचिव

योजना आयोग

बेरोजगारी प्राक्कलन संबन्धी विशेषज्ञ समिति

नई दिल्ली, दिनांक 29 दिसम्बर 1969

संकल्प

सं० प्र० व रो० (रो०) 12-7/68—संकल्प संख्या प्र० व रो० (रो०) 12-7/68 दिनांक 23 जून, 1969 के सिलसिले में बेरोजगारी प्राक्कलन सम्बन्धी विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति की अवधि 31 मार्च, 1970 तक के लिए बढ़ाई जाती है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति भारत के राजपत्र में प्रकाशित की जाये और सभी सम्बन्धितों को भेजी जाए।

शैरब दत्त पाण्डे, सचिव

गृह मन्त्रालय

नई दिल्ली-1, दिनांक 27 दिसम्बर 1969

नियम

सं० 4/7/69-अ० भा० से० (4)—भारतीय बल सेवा में रिक्तियों को भरने के लिए, जुलाई/अगस्त, 1970 में संघ लोक-सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली प्रतियोगिता परीक्षा के नियम, आम जानकारी के लिए प्रकाशित किए जा रहे हैं—

2. इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या का उल्लेख आयोग द्वारा प्रकाशित नोटिस में किया जाएगा। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिए रिक्तियों का आरक्षण भारत सरकार द्वारा निर्धारित विधि से किया जाएगा।

अनुसूचित जातियों/आदिम जातियों से अभिप्राय निम्नांकित में उल्लिखित जातियों आदिम जातियों में से किसी एक से है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाति आदेश (संशोधन) अधिनियम, 1956 के साथ पठित अनुसूचित जाति/आदिम जाति सूचियां (आशोधन) आदेश, 1956, संविधान (जम्मू और काश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश, 1956, संविधान (अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1959, संविधान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1962, संविधान (दादरा और नागर हवेली) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1962, संविधान (पांडिचेरी) अनुसूचित जाति आदेश, 1964, संविधान (अनुसूचित आदिम जातियां) (उत्तर प्रदेश) आदेश, 1967, संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित जाति आदेश, 1968 तथा संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1968।

3. संघ लोक-सेवा आयोग यह परीक्षा इन नियमों के परिशिष्ट II में निर्धारित विधि से लेगा।

परीक्षा की तारीख और स्थान आयोग द्वारा निर्धारित किए जाएंगे।

4 उम्मीदवार को या तो—

(क) भारत का नागरिक होना चाहिए, या

(ख) सिक्किम की प्रजा, या

(ग) नेपाल की प्रजा या

(घ) भूटान की प्रजा, या

(ङ) ऐसा तिब्बती शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो, या

(च) मूल रूप से ऐसा भारतीय व्यक्ति हो, जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से पाकिस्तान, बर्मा, लंका और पूर्वी अफ्रीका के कीनिया, उगांडा तथा संयुक्त गणराज्य टेंजानिया (भूत-पूर्व टेंगानिका और जंजीबार) देशों से आया हो।

परन्तु ऊपर की (ग), (घ), (ङ) और (च) कोटियों के अन्तर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा दिया गया पात्रता (एलिजिबिलिटी) प्रमाण-पत्र होना चाहिए।

लेकिन नीचे लिखे उम्मीदवारों को पात्रता-प्रमाणपत्र लेना आवश्यक नहीं होगा :—

(i) जो व्यक्ति 19 जुलाई, 1948 से पहले, पाकिस्तान से भारत में आ गए हों और तब से आम तौर से भारत में ही रह रहे हों।

(ii) जो व्यक्ति 19 जुलाई, 1948 को या उसके बाद पाकिस्तान से भारत में आ गए हों और जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद 6 के अधीन स्वयं को भारत के नागरिक के रूप में पंजीयित करा लिया हो।

(iii) ऊपर की (च) कौटि के जो गैर-नागरिक, संविधान लागू होने की तारीख अर्थात् 26 जनवरी 1950 से पहले भारत सरकार की सेवा में आये और तब से लगातार नौकरी कर रहे हैं और बिना सेवा काल का क्रम नहीं टूटा हो। लेकिन यदि किसी व्यक्ति के सेवा काल का क्रम टूट गया हो और उसे 26 जनवरी, 1950 के बाद उक्त सेवा में दुबारा नियुक्त किया गया हो तो उसे भी औरों की तरह पात्रता-प्रमाण पत्र देना होगा।

परीक्षा में उस उम्मीदवार को भी बैठने दिया जा सकता है जिसके लिए पात्रता-प्रमाण पत्र आवश्यक हो और उसे सरकार द्वारा आवश्यक प्रमाण-पत्र दिये जाने की शर्त के साथ, अनन्तिम (प्रोविजनल) रूप से नियुक्त भी किया जा सकता है।

5. (क) उम्मीदवार के लिए यह आवश्यक है कि उसकी आयु 1 जुलाई, 1970 को 20 वर्ष की पूरी हो गई हो किन्तु 24 वर्ष की न हुई हो, उक्त उसका जन्म 2 जुलाई 1946 से पहले और 1 जुलाई, 1950 के बाद नहीं हुआ हो।

(ख) ऊपर निर्धारित ऊपरी आयु में निम्नलिखित स्थितियों में और छूट दी जा सकती है:—

(1) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक पांच वर्ष,

(2) यदि उम्मीदवार पूर्वी पाकिस्तान से 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद भारत में आया हुआ वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(3) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और वह 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद पूर्वी पाकिस्तान से आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(4) यदि उम्मीदवार संघ राज्य क्षेत्र पांडिचेरी का निवासी हो तथा उसने कभी फ्रेंच भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(5) यदि उम्मीदवार अक्टूबर, 1964 से भारत श्रीलंका करार के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद श्रीलंका से वास्तव में प्रत्यावर्तित हो कर भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(6) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही अक्टूबर, 1964 से भारत श्रीलंका करार के अधीन, 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद श्रीलंका से वास्तविक रूप से प्रत्यावर्तित भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति भी हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(7) यदि उम्मीदवार गोआ, दमन और दीव के संघ राज्य-क्षेत्र का निवासी हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(8) यदि उम्मीदवार कीनिया, उगांडा, तथा संयुक्त गणराज्य टंजानिया (भूतपूर्व टंगानिका तथा जंजीबार) से आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,

(9) यदि उम्मीदवार 1 जून, 1963 या उसके बाद, बर्मा से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष, और

(10) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही 1 जून, 1963 को या उसके बाद, बर्मा से प्रत्यावर्तित होकर भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

(11) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो किसी विदेशी शत्रु देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांतिग्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्रवाई के दौरान विक्लांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए, तथा

(12) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम आठ वर्ष तक जो किसी विदेशी शत्रु देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांतिग्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्रवाई के दौरान विक्लांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए और अनुसूचित जातियों या अनुसूचित आदिम जातियों के हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों को छोड़कर निर्धारित आयु-सीमा में किसी भी स्थिति में छूट नहीं दी जाएगी।

6. उम्मीदवार के पास कम से कम परिशिष्ट 1 में उल्लिखित विषयविद्यालयों में से किसी से प्राप्त वनस्पति विज्ञान, रसायन, भूविज्ञान, गणित, भौतिक और प्राणि-विज्ञान में से एक विषय के साथ स्नातक उपाधि अवश्य होनी चाहिए अथवा कृषि में स्नातक उपाधि अथवा इंजीनियरी की स्नातक उपाधि होनी चाहिए या परिशिष्ट i-क में उल्लिखित अर्हताओं में से कोई एक अर्हता होनी चाहिए।

नोट-i. यदि कोई उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा में बैठ चुका हो जिसे उत्तीर्ण कर लेने से वह इस परीक्षा में बैठ सकता है, पर अभी उसे परीक्षा के परिणाम की सूचना न मिली हो तो ऐसी स्थिति में वह इस परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन कर सकता है। जो उम्मीदवार इस प्रकार की अर्हता परीक्षा (क्वालीफाइंग एग्जामिनेशन) में बैठना चाहता हो, वह भी आवेदन कर सकता है बशर्ते कि वह अर्हता परीक्षा इस परीक्षा के आरंभ होने से पहले समाप्त हो जाए। ऐसे उम्मीदवार को, यदि वह अन्य शर्तें पूरी कर सकता हो, तो इस परीक्षा में बैठने दिया जाएगा। परन्तु परीक्षा में बैठने की ऐसी अनुमति अनन्तिम मानी जाएगी और वह अर्हता परीक्षा में उत्तीर्ण जल्दी से जल्दी और हर हालत में इस परीक्षा के प्रारंभ होने की तारीख से अधिक से अधिक दो महीने के भीतर प्रस्तुत नहीं करता, तो यह अनुमति रह की जा सकती है।

नोट-ii. विशेष परिस्थितियों में, संघ लोक सेवा आयोग ऐसे किसी उम्मीदवार को भी परीक्षा में प्रवेश का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई भी अर्हता न हो बशर्ते

कि उस उम्मीदवार ने अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित कोई ऐसी परीक्षाएं पास की हों जिनके स्तर को देखते हुए आयोग उसको परीक्षा में प्रवेश देना उचित समझे।

नोट III. यदि कोई उम्मीदवार अन्यथा परीक्षा में प्रवेश का पात्र हो किन्तु उसने ऐसे विदेशी विश्वविद्यालय से उपाधि ली हो जो परिशिष्ट I में सम्मिलित न हो तो वह भी आयोग को आवेदन कर सकता है और आयोग, यदि उचित समझे तो, उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है।

7. उम्मीदवारों को आयोग के नोटिस के परिशिष्ट I में निर्धारित फीस अवश्य देनी होगी।

8. जो उम्मीदवार स्थायी या अस्थायी रूप में पहले से ही सरकारी सेवा करता हो, उसे इस परीक्षा में बैठने से पहले अपने विभाग के अध्यक्ष की अनुमति लेनी होगी।

9. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अन्तिम होगा।

10. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जाएगा जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश-प्रमाण-पत्र (सर्टीफिकेट आफ एडमिशन) नहीं होगा।

11. यदि कोई उम्मीदवार किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए पैरवी करने की कोई कोशिश करेगा तो उसे परीक्षा में बैठने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा।

12. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग ने किसी दूसरे व्यक्ति से परीक्षा दिलवाने अथवा जाली या फेर-बदल किए हुए प्रमाण-पत्र पेश करने अथवा गलत या झूठा तथ्य प्रस्तुत करने अथवा किसी तथ्य को छिपाने या परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए कोई अन्य अनियमित या अनुचित उपाय अपनाने, परीक्षा भवन में कोई अनुचित उपाय अपनाने या अपनाने की चेष्टा करने अथवा परीक्षा भवन में किसी तरह का अनुचित आचरण करने के फलस्वरूप अपराधी घोषित किया है तो उसके विरुद्ध दण्डिक अभियोजन के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्रवाई की जा सकती है:—

(क) सदा के लिए अथवा किसी विशेष अवधि के लिए परीक्षा वारित किया जाना:

(i) आयोग द्वारा उम्मीदवारों के लिए आयोजित किसी परीक्षा में सम्मिलित होने अथवा किसी साक्षात्कार में उपस्थित होने से।

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकार के अस्तर्गत नौकरियों के लिए।

(ख) यदि वह पहले से ही सरकार की सेवा में हो तो उचित नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है।

13. जो उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उतने न्यूनतम अर्हता अंक प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे, तो उसे आयोग व्यक्तिस्व परीक्षा के इंटरव्यू के लिए बुलाएगा।

14. यदि कोई उम्मीदवार परीक्षा के लिखित भाग के परिणाम-स्वरूप व्यक्तिस्व जांच के लिए सफलता प्राप्त करता है तो उसको अलग से कहा जाएगा कि वह अपनी तरजीह का क्रम गृह मंत्रालय को सूचित करे जिसके अनुसार विभिन्न राज्य संवर्गों में आवंटन के लिए उसके नाम पर विचार किया जाए।

15. परीक्षा के बाद, आयोग उम्मीदवारों के द्वारा प्राप्त कुल अंक के आधार पर योग्यता क्रम से उनकी सूची बनायेगा और उसी क्रम से उन उम्मीदवारों में से जितने लोगों को आयोग के आधार पर योग्य समझेगा, उनकी इन रिक्तियों पर नियुक्ति करने के लिए सिफारिश की जायेगी। यह भर्ती आरक्षित रूप में न होकर इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर होगी।

लेकिन शर्त यह है कि आयोग अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के किसी ऐसे उम्मीदवार को जो किसी सेवा के लिए आयोग द्वारा निर्धारित स्तर के अनुसार योग्य सिद्ध न हो प्रशासन की कुशलता को ध्यान में रखते हुए उस सेवा पर नियुक्ति के लिए उपर्युक्त घोषित कर दे तो उसकी उस सेवा में यथास्थिति अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित रिक्तियों पर नियुक्ति के लिए आयोग सिफारिश करेगा।

16. प्रत्येक उम्मीदवार को परीक्षाफल की सूचना किस रूप में और किस प्रकार दी जाए, इसका निर्णय आयोग स्वयं करेगा। आयोग परीक्षाफल के बारे में पत्राचार नहीं करेगा।

17. परीक्षा में पास हो जाने से नियुक्ति का अधिकार तब तक नहीं मिलता, जब तक कि सरकार आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाए कि उम्मीदवार इसमें नियुक्ति के लिए हर प्रकार से योग्य है।

18. उम्मीदवार को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिए और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए जिससे वह संबंधित सेवा के अधिकारी के रूप में अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक न निभा सके। यदि सरकार या सक्षम प्राधिकारी द्वारा निर्धारित डाक्टरी परीक्षा के बीच किसी उम्मीदवार के बारे में यह ज्ञात हो कि वह इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जाएगी। आयोग द्वारा व्यक्तिस्व परीक्षा के लिए बुलाए गए उम्मीदवार की डाक्टरी परीक्षा करवाई जा सकती है। उम्मीदवार द्वारा स्वास्थ्य परीक्षा के लिए चिकित्सा बोर्ड को कोई शुल्क देय नहीं होगा।

नोट—बाद में निराश न होना पड़े इसलिए उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र भेजने से पहले सिविल सर्जन स्तर के सरकारी चिकित्सा अधिकारों से अपनी जांच करवा लें: नियुक्ति से पहले उम्मीदवारों को किस प्रकार की डाक्टरी जांच होगी और उसके लिए स्वास्थ्य का स्तर किस प्रकार का होना चाहिए, इसके व्यौरे इन नियमों के परिशिष्ट 4 में दिये गये हैं।

रक्षा सेवाओं के भूतपूर्व विक्लांग सैनिकों की सेवा (ओं) की आवश्यकताओं के अनुरूप डाक्टरी जांच के स्तर में छूट दी जाएगी।

19. (क) जिस पुरुष उम्मीदवार की एक से अधिक जीवित पत्नियां हों या जो एक पत्नी के जीवित रहने पर भी किसी ऐसी

स्थिति में विवाह कर ले कि वह विवाह उक्त पत्नी के जीवित रहने की अवधि में किए जाने के कारण अवैध (वायड) हो जाए तो उसे उन सेवाओं में नियुक्ति का जिनके लिए इस प्रतियोगिता परीक्षा के परिणाम के आधार पर, नियुक्तियां की जाती हैं, तब तक प्राप्त नहीं माना जाएगा जब तक कि भारत सरकार संतुष्ट न हो जाए कि ऐसा करने के विशेष कारण हैं और पुरुष उम्मीदवार को इस नियम से छूट न दी जाए।

(ख) जिस महिला का विवाह इस कारण अवैध (वायड) हो कि उक्त विवाह के समय उसके पति की जीवित पत्नी पहले से है या जिसने ऐसे व्यक्ति से विवाह किया हो जिसको उक्त विवाह के समय एक जीवित पति हो, वह उन सेवाओं में नियुक्ति की, जिनके लिए इस प्रतियोगिता परीक्षा के परिणाम के आधार पर नियुक्तियां की जाती हैं तब तक प्राप्त नहीं मानी जाएगी जब तक कि भारत सरकार संतुष्ट न हो जाए कि ऐसा करने के विशेष कारण हैं, और उस महिला उम्मीदवार को इस नियम से छूट न दे दी जाए।

20. भारत सरकार को इस बात की स्वतंत्रता होगी कि वह किसी ऐसी महिला उम्मीदवार को जो विवाहित है, भारतीय बन सेवा में नियुक्ति न करे अथवा नियुक्ति के बाद अगर वह विवाह कर ले तो उससे त्याग पत्र मांग ले, यदि ऐसा करना सेवा की कुशलता बनाए रखने की दृष्टि में आवश्यक हो।

21. उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि सेवा में भर्ती होने से पहले ही हिन्दी का कुछ ज्ञान होना उन विभागीय परीक्षाओं को पास करने की दृष्टि से लाभदायक होगा जो उम्मीदवारों को सेवा में भर्ती होने के बाद देनी पड़ती है।

22. इस परीक्षा के द्वारा जिस सेवा के लिए भर्ती की जा रही है उसका संक्षिप्त ब्यौरा परिशिष्ट III में दिया गया है।

एम० आर० भारद्वाज, अवर सचिव

परिशिष्ट I

भारत सरकार द्वारा अनुमोदित विश्वविद्यालयों की सूची
(नियम 6 के अनुसार)

भारतीय विश्वविद्यालय

कोई भी ऐसा विश्वविद्यालय जो भारत के केन्द्रीय या राज्य विधानमण्डल के अधिनियम से निर्गमित किया गया हो और अन्य शिक्षा संस्थान जो संसद् के अधिनियम से स्थापित किया गया हो अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मान लिए जाने की घोषणा हो चुकी है।

बर्मा के विश्वविद्यालय]

रंगून विश्वविद्यालय।

मांडले विश्वविद्यालय।

इंग्लैंड और वेल्स के विश्वविद्यालय

बर्मिंघम, ब्रिस्टल, कैम्ब्रिज, डर्हम, मीड्स, लिबरपूल, लंदन, मैनचेस्टर, आक्सफोर्ड, रीडिंग, शेफील्ड और वेल्स के विश्वविद्यालय।

स्काटलैंड के विश्वविद्यालय

एवरडीन, एडिनबरा, ग्लास्गो और सेंट एन्ड्रयूज विश्वविद्यालय।

आयरलैंड के विश्वविद्यालय

डबलिन विश्वविद्यालय (ट्रिनिटी कॉलेज)।

नेशनल यूनिवर्सिटी, डबलिन।

क्वीन्स यूनिवर्सिटी, बेलफास्ट।

पाकिस्तान के विश्वविद्यालय

पंजाब विश्वविद्यालय।

ढाका विश्वविद्यालय।

सिंध विश्वविद्यालय।

राजशाही विश्वविद्यालय।

नेपाल का विश्वविद्यालय

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमाण्डू।

परिशिष्ट I-क

परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए अनुमोदित योग्यताओं की सूची
(नियम 6 के अनुसार)

1. फ्रांसीसी परीक्षा, (Propedentque)
2. उच्च ग्राम शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् (नेशनल कौंसिल आफ ग्राम हायर एज्यूकेशन) से ग्राम सेवाओं में डिप्लोमा।
3. विश्वभारतीय विश्वविद्यालय का उच्च ग्राम सेवाओं में डिप्लोमा।
4. अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र पांडिचेरी का "उच्च पाठ्य-क्रम" यदि "पूर्णछात्र" (फुल स्टूडेंट) के रूप में वह पाठ्य-क्रम सफलतापूर्वक पूरा किया हो।
5. भारतीय वैज्ञानिक संस्थान, बंगलौर की सहवृत्ति या शिक्षा-वृत्ति।
6. वरिष्ठ सेवाओं और केन्द्रीय सरकार के अधीन पदों पर भर्ती के लिए सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (आल इंडिया कौंसिल फार टेक्निकल एज्यूकेशन) से इंजीनियरी या तकनीकी में राष्ट्रीय डिप्लोमा।
7. इंजीनियरों की संस्था (इंडिया) की सह-सदस्यता के क और ख भागों में यह व्यवस्था की गई है कि परीक्षा पूर्णरूप से पास की जा चुकी है (अर्थात् सभी प्रश्न-पत्रों में) और न कि कुछ परीक्षा से और कुछ छूट से।
8. लाबोरो कॉलेज, लेसेस्टर शायर का सिविल या यांत्रिक इंजीनियरी का आनर्स डिप्लोमा, बशर्ते कि उम्मीदवार ने प्राथमिक परीक्षा पास कर ली हो या उसे छूट दे दी गई हो।

नोट:—1 से 8 तक की योग्यता तथाएं तक स्वीकृत नहीं होंगी जब तक उम्मीदवार इन विषयों में से कम से कम किसी

एक में पास नहीं हो:- वनस्पति-विज्ञान, रसायन-भू-विज्ञान, गणित, भौतिकी तथा प्राणि-विज्ञान।

परिशिष्ट II

खण्ड I

लिखित परीक्षा की रूपरेखा—

भारतीय वन सेवा के लिए प्रतियोगिता परीक्षा के विषय:—

(क) लिखित परीक्षा—

(i) दो अनिवार्य विषय, अर्थात् सामान्य अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान। [नीचे खण्ड-II का उपखण्ड (अ) देखें] पूर्णांक : 300।

(ii) निम्नलिखित खण्ड-II के उपखण्ड (ख) के दिए गए ऐच्छिक विषयों में से चुने गए विषय। इस उपखण्ड की व्यवस्था के अधीन उम्मीदवार उनमें कोई दो विषय ले सकते हैं। पूर्णांक : 400।

(ख) ऐसे उम्मीदवार जो आयोग द्वारा व्यक्तित्व परीक्षा के साक्षात्कार के लिए [इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग (ख) के अनुसार] बुलाए जाएंगे। पूर्णांक : 200।

खण्ड II

परीक्षा के विषय

अनिवार्य विषय [ऊपर खंड-I के उपखण्ड (I) के अनुसार]

	पूर्णांक
(अ) (1) सामान्य अंग्रेजी	150
(2) सामान्य ज्ञान	150

(ब) ऐच्छिक विषय—[ऊपर खंड-I के उपखण्ड (II) के अनुसार]

(1) कृषि-विज्ञान	200
(2) वनस्पति-विज्ञान	200
(3) रसायन	200
(4) सिविल इंजीनियरी	200
(5) भू-विज्ञान	200
(6) कृषि-इंजीनियरी	200
(7) रसायन-इंजीनियरी	200
(8) गणित	200
(9) यांत्रिक इंजीनियरी	200
(10) भौतिकी	200
(11) प्राणि-विज्ञान	200

परन्तु उपर्युक्त विषयों पर निम्नलिखित पाबंदियां लागू होंगी—

- कोई भी उम्मीदवार उपर्युक्त विषयों (1) और (6) में से दोनों विषय नहीं ले सकता है।
- कोई भी उम्मीदवार उपर्युक्त विषयों (3) और (7) में से दोनों विषय नहीं ले सकता है।

नोट—ऊपर लिखे विषयों का स्तर और पाठ्य विवरण इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग क में दिया गया है।

खण्ड III

सामान्य

- सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में ही लिखने होंगे।
- उपर्युक्त खंड-II के उपखंड (क) और (ख) में उल्लिखित प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए 3 घंटे का समय दिया जाएगा।
- उम्मीदवारों को प्रश्न का उत्तर अपने हाथ से लिखना होगा। उन्हें किसी भी हालत में उनकी ओर से उत्तर लिखने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- आयोग अपने निर्णय से परीक्षा के किसी एक या सभी विषयों के अर्हक अंक (क्वालिफाइंग मार्क्स) निर्धारित कर सकता है।
- यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से पढ़ने लायक नहीं होगी तो उसे अन्यथा मिलने वाले कुल अंकों में से कुछ अंक काट लिए जाएंगे।
- अनावश्यक ज्ञान के लिए अंक नहीं दिए जाएंगे।
- परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा कि अभिव्यक्ति कम-से-कम शब्दों में क्रमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग और ठीक-ठीक की गई है।

8. उम्मीदवारों से तौल और माप की मीट्रिक प्रणाली की जानकारी की माशा की जाती है। प्रश्नों के उत्तर में जहां कहीं ऐसा आवश्यक हो तौल और माप की मीट्रिक प्रणाली का ही उपयोग किया जाए।

अनुसूची

भाग-क

सामान्य अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान के प्रश्न-पत्रों का स्तर ऐसा होगा जिसकी भारतीय विश्वविद्यालय के विज्ञान/इंजीनियरी ग्रेजुएट से आशा की जाती है।

अन्य विषयों में प्रश्न-पत्रों का स्तर लगभग भारतीय विश्व-विद्यालय की स्नातक उपाधि (पास) के समान होगा।

किसी भी विषय में व्यावहारिक परीक्षा नहीं ली जाएगी।

(1) सामान्य अंग्रेजी

उम्मीदवारों को एक विषय पर अंग्रेजी में निबंध लिखना होगा। अन्य प्रश्न इस प्रकार से पूछे जाएंगे जिनसे उसके अंग्रेजी भाषा के ज्ञान तथा शब्दों के सुन्दर प्रयोग की जांच हो सके। सामान्यतः संक्षेप-लेखन या सार-लेखन के लिए अवसर दिए जाएंगे।

(2) सामान्य ज्ञान

सामान्य ज्ञान जिसमें सामयिक घटनाओं का ज्ञान तथा प्रति-दिन के प्रेक्षण और अनुभव की ऐसी बातों का वैज्ञानिक दृष्टि से ज्ञान भी सम्मिलित है जिसकी शिक्षित व्यक्ति से आशा की जा सकती

है जिसने किसी वैज्ञानिक विषय का विशेष अध्ययन न किया हो। इस प्रश्न-पत्र में भारत के इतिहास और भूगोल के ऐसे प्रश्न भी होंगे जिनका उत्तर उम्मीदवारों को विशेष अध्ययन के बिना ही आना चाहिए।

(3) कृषि

उम्मीदवार प्रश्नों के उत्तर (क) और (ख) या (क) और (ग) देंगे।

(क) कृषि अर्थशास्त्र

कृषि अर्थशास्त्र का अर्थ तथा क्षेत्र, अध्ययन का तात्पर्य तथा अन्य विज्ञानों से संबंध, भारतीय आर्थिक स्थिति में कृषि का महत्व, राष्ट्रीय आय को उसकी देन, अन्य देशों से तुलना, भारतीय कृषि-उत्पादन, बिक्री, श्रम, उधार इत्यादि महत्वपूर्ण आर्थिक समस्याओं का अध्ययन।

फार्म प्रबन्ध के अध्ययन के तरीके, इसका अर्थ तथा क्षेत्र, अन्य भौतिक तथा सामाजिक विज्ञानों से सम्बद्ध धारणाएं तथा फार्म प्रबन्ध के मूल सिद्धांत। फार्म के निर्धारण के प्रकार और तरीके। पृथ्वी, जल, श्रम और साज-सज्जा, फार्म की दक्षता को मापने के तरीके, फार्म हिसाब-रखा के प्रकार और उद्देश्य, फार्म के अभिलेख तथा लेखा, आर्थिक लेखा।

(ख) शस्य विज्ञान

फसल उत्पादन—खरीफ की फसलों का विस्तृत अध्ययन, धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, मूंगफली, तिल, कपास, सनई, मूंग, उदई—उनके परिचय सहित बंटन, बपनीय खेत तैयार करना, अच्छे प्रकार के बीज बोना और बीजों की दर, मिलाकर बोना, फसल काटना और फसल की पैदवार की मात्रा।

रबी की महत्वपूर्ण फसलों का विस्तृत अध्ययन, गेहूं, जौ, चना, सरसों, ईंख, तम्बाकू, बेरसीम, उनके इतिहास, बंटन, भूमि तथा जलवायु की आवश्यकताएं, बीज की क्यारियों की तैयारी, उत्तम प्रकार की किस्में बोना और बीज की दर, निराई, गुड़ाई, कटाई, भंडार में रखना फसलों की भौतिक मात्रा।

घास-पात और घास-पात नियंत्रण—घास-पात का वर्गीकरण, आवास तथा भारत में आवश्यक घास-पात की किस्में। घास-पात द्वारा पहुंचाई जाने वाली हानियां। घास-पात के परिक्षेपण की एजेंसियां और घास-पास के सांस्कृतिक, जैविक, और रासायनिक नियंत्रण।

सिंचाई और जल-निकास के सिद्धांत—सिंचाई के जल की आवश्यकता और स्रोत, फसलों को जल की आवश्यकता की मात्रा, साधारण जल की लिपटें, जल मान, सिंचाई के जल को व्यर्थ जाने से रोकना, सिंचाई के तरीके और बंग और प्रत्येक बंग के लाभ और कमियां। सिंचाई के जल की माप, पृथ्वी की नमी और पृथ्वी की नमी के विभिन्न प्रकार और उनका महत्व। जल-निकास और इसकी आवश्यकता, जल की अधिकता के कारण क्षति पहुंचाना, जल निकाल के बंग।

(ग) मृदा-विज्ञान और मृदा-संरक्षण

मृदा की परिभाषा, इसके मुख्य अंग, भूमि के प्रोफाइल, भूमि के खनिज कोलाइड, धनायन विनिमय क्षमता, आधार संतुष्टि

प्रतिशत, आयन विनिमय, पौधे की बढ़ोत्तरी के लिए आवश्यक पोषक पदार्थ, भूमि में उनकी आकृति और पौधे को पोषक बनाने में उनका कार्य, जैव पदार्थ इसका गलना, और इसका भूमि के उपजाऊ होने पर प्रभाव, एसिड और क्षारीय मृदा, उनकी बनावट और भूमि-उद्धार। भूमि के तत्वों पर आर्गेनिक खादों, हरी खादों और उर्वरकों का प्रभाव। साधारण नाइट्रोजनी फास्फेटिक और पोटेशीय उर्वरकों के गुण।

यांत्रिक बनावट और भूमि की रचना, भूमि रंध्रकाश, भूमि-संरचना, भूमि-जल, भूमि-जल के प्रकार, इसकी रुकने की क्रिया, भूमि-जल का सुलभ होना तथा भूमि-जल का माप। भूमि का तापमान, भूमि-वायु तथा इसका महत्व। भूमि-संरचना, इसके प्रकार तथा भूमि के भौतिक रासायनिक गुणों पर उनका प्रभाव।

मृदा-आकारिकी और मृदा का सर्वेक्षण-भूमि का टूटना : मृदा बनाने वाली चट्टानों और खनिजों, मृदा के बनाने में उनका संगठन और महत्व। चट्टानों तथा खनिजों का अपक्षय, मृदाप बनने के कारण और रीतियां संसार के महान मृदा-समूह तथा उनका कृषि संबंधी महत्व। भारतीय मृदाओं का अध्ययन। मृदा का सर्वेक्षण तथा वर्गीकरण।

भूमि-संरक्षण के सिद्धांत-मृदा का अपरदन। अपरदन के कारण, भूमि संरक्षण, शस्य तथा इंजीनियरी के प्रचलित तरीकों से संबंधित मृदा के गुण, कृषि-भूमियों के लिए भूमि में जल निकास की आवश्यकताएं तथा प्रचलित तरीके, भूमि-प्रयोग का वर्गीकरण, भूमि-संरक्षण, योजना तथा कार्यक्रम।

(4) वनस्पति-विज्ञान

1. पादप जगत का सर्वेक्षण—पशुओं तथा पादप में अंतर—जीवित-प्राणियों के गुण : एक सैल तथा अधिक सैल वाले प्राणी : बाह्यरस : पादप जगत के विभाजन का आधार।

2. आकारिका—(i) एक सैल वाले पादप—सैल, इसकी बनावट तथा अंग : सैलों का विभाजन तथा गुण।

(ii) अधिक सैल वाले पादप—संवहनी और संवहनी-रहित पादपों के तनों में भिन्नता संवहनी पादपों की बाहरी तथा आंतरिक आकारिकी।

3. जीवन-इतिहास :—नीचे दिए गए पादपों में से कम से कम एक प्रकार के पादप का अध्ययन :—जीवाणु, साइऐनोफाइसी, क्लोरोफाइसी, शोडोफाइसी, फीकोमीसेल्स, एक्रोमीसाइटस, बेसी-डाइयोमीसाइटस, लिवरपोर्टस, कईयां, टेरीडोफाइट्स, जिम्नोस्पर्मज और एंजियोस्पर्मज।

4. वर्गीको—वर्गीकरण के सिद्धांत : एंजियोस्पर्मज के वर्गीकरण के प्रमुख ढंग : निम्न प्रजातियों को प्रत्यक्ष आकृतियां तथा आर्थिक महत्व :—ग्रेकीनिया, साइटेमिनाएं, पामएसीयाएं, लिक्लीएसाइसी, आरकीडेसाइसी, मोराइसी, लोरेथाइसी, मैग्नोलाइसी, लौराइसी, क्रूसीफाए, रोसाइसी, लेग्यूमाइनोसाई, सटाइसी, मेसियाइसी, यूफोरबाइसी, एनाकडायसी, मालवाइसी, एपोसीनाइसी, ऐसले-पियाडाइसी, डिप्ट्रोकापाइसी, माइरटाइसी, अम्बेलीफाई, लेनिया-टाई, सोलेनाइसी, रुबियासिआई, कुकुरबाइसेसयाई, वरबनाइसी और कम्पोजिटार्ई।

5. पादप-कामिकी—स्वपोषण, परपोषण, जल तथा पोषक पदार्थों को भीतर लेना, वाष्पोत्सर्जन, संश्लेषण, खनिज के पोषक पदार्थ, श्वसन, बढ़ना, जनन : पादप। पशु सम्बन्ध, सहजीवन, परजीवन, किण्वक, औक्सीमज, हार्मोन्ज, फोटो पैरियोडिज्म।

6. पादप रोग-विज्ञान—पादप-रोगों के कारण तथा उपचार। रोगी-अंग वाइरस, घटी से रोग, रोग से बचाव।

7. पादप परिस्थिति विज्ञान—परिस्थिति तथा पादप भूगोल से सम्बन्धित मूल तथ्य, विशेषतया भारतीय प्लोरा तथा भारतीय वनस्पति-विज्ञान क्षेत्रों से सम्बन्धित।

8. सामान्य वनस्पति-विज्ञान—साइटोलोजी, उत्पत्ति, पादप प्रजनन, छंटनी, मेन्डलवाट, संकर-ओज, उत्परिवर्तन, उत्पत्ति।

9. आर्थिक वनस्पति विज्ञान—पादपों के आर्थिक प्रयोग, विशेषकर पुष्प-पादप, मानव हित के सम्बन्ध में, विशेषकर ऐसे वनस्पति उत्पादन से सम्बन्धित जैसे अन्न, दालें, फल, चीनी और चावल, तिल, मसाले, पेय तंतु, लकड़ी, रबड़, दवाइयां तथा आवश्यक तेल।

10. वनस्पति-विज्ञान का इतिहास-वनस्पति—विज्ञान से सम्बन्धित ज्ञान के विकास की सामान्य जानकारी।

(5) रसायन

1. अकार्बनिक रसायन—बोहर का हाइड्रोजन परमाणु प्रति-रूप। इलैक्ट्रॉन, प्रोटोन तथा न्यूट्रॉन आवधिक नियम। अणु केंद्रिक, प्राकृतिक रेडियोरंग कृत्रिम समस्यानिक। रासायनिक बान्ध की प्रकृति का प्रारंभिक उपचार। संकर-लवण जड़ गैसों। अधिक सामान्य तथा उपयोगी तत्वों तथा उनके यौगिकों का रसायन। सामान्य आक्सीडाइजिंग तथा अपचायक। लोहा, ताम्र, अलमोनियम, सोना, चांदी, निकल, जिंक और सीसा के धातुपकर्म। शीशा, सिलिकेट, नाइट्रोजन निक्षारण। बनावटी खादें। लोह-व्यवसाय।

रासायनिक विश्लेषण के मूलभूत सिद्धांत।

2. कार्बनिक रसायन—नैट्रोमियम उत्पादन। संतृप्त और असंतृप्त हाइड्रोकार्बन, तीन कार्बन परमाणु के एलीफैटिक श्रृंखला यौगिक के सरल व्युत्पन्न का रसायन एल्कोहाल, एल्डिहाइड, कीटोन; अम्ल, हेलाइड, ईस्टर, ईथर, अम्ल एनाहाइड्राइड, क्लो-राइड, तथा एमाइड। मोनोबेसिक हाइड्रोक्सी, केटोनिक तथा एमोनो अम्ल।

कार्ब-धार्मिक यौगिक मैसोनिक तथा ऐसीटिक ईस्टर, टारटरिक, साइट्रिक, मैलीक और सुगंधित आम्ल। स्टोरियों और ज्योमेट्रिक आइसोमेनिज्म, कार्बोहाइड्रेट स्टार्च और सेलूलोज सहित।

कोलतार आसवन की उत्पाद, इसके सरल व्युत्पन्न का बेंजीन तथा रसायन : टोलीन, एक्सलीन, फूनपेलज, हेलाइड, नाइट्रो तथा भीनोए यौगिक बेनजोइक, सेल्युलसालिक सिनामिक मेंडिलिक तथा खस्येनिक अम्ल। ऐटोमेटिक, एलडीहाइड्स तथा कीटोन। डाइजो, अजो तथा हाइड्रेक्लो यौगिक। एरोमेटिक प्रतिस्थापन।

3. भौतिक रसायन—किनेटिक के गैसों के सिद्धांत, वान-डेर वाल का समीकरण, क्रांटिक अवस्था गैसों का द्रवण। द्रव्यों के कुछ

भौतिक गुण, धोलों के विषय में वान्ट हफ के सिद्धांत से संबंधित ओस्मोटिक दबाव तथा संबंधित गुण। द्रव्यमान अनुपाती अभिक्रिया का नियम। प्रतिक्रियाओं की दर और क्रम, ताप, प्रतिक्रियादरों का गुणांक। इलैक्ट्रोलिसिम, विद्युत अपघटनी चालकता और उसके प्रयोग। आयन संतुलन। आसबाइड का तनुता-नियम, जल का आयनन-स्थिरांक, जल-अपघटन, विलेयता-उत्पाद। अम्ल और आधार सम्बन्धी लुईस की धारणा। उभय-प्रतिरोधीविलयन।

सूचकों का पी०एच० मूल्य और सिद्धांत।

कोलाइड, लियोफोबिक और लियोफिलिक, उनके सामान्य गुण, अवशोषण। उत्प्रेरण।

विषमांगी साम्य, प्राक्स्था नियम और एक घटकीय तंत्र पर उसका प्रयोग।

क्वांटम परिकल्पना, फोटो-रसायन के नियम।

(6) सिविल इंजीनियरिंग

(1) भवन निर्माण कार्य सामग्री तथा उस सामग्री के गुण :

भवन निर्माण की सामग्री—इमारती लकड़ी, ईंट, चूना, टाईल, सेंड सुर्खी, मोटार तथा कंक्रीट, धातु तथा कांच—इंजीनियरिंग में प्रयुक्त होने वाली धातु और एलाइल के गुण।

स्ट्रैंग तथा स्ट्रैन—सिद्धांत—बेंडिंग। डारमन डाइरेक्ट स्ट्रैंग, शहतीरों के मुड़ने का इलास्टिक सिद्धांत; केन्द्रीय रूप बोझा पड़ने के कारण अधिकतम और न्यूनतम दबाव। बेंडिंग मूमेंट और शियर फोर्स के डायग्राम तथा स्थिर और चलायमान दबाव के अधीन शहतीरों का विश्लेषण।

(2) भवन निर्माण, जल प्रदाय और सफाई से सम्बन्धित इंजीनियरिंग—

निर्माण—ईंट तथा पत्थर की चिनाई-रीवारों, फर्श तथा छत, जीने, लकड़ी के फर्श, छतें, दरवाजे, खिड़कियां तैयार करना और प्लास्टर कोने ठीक करना, पेंट तथा वार्निश आदि सम्बन्धित अंतिम कार्य।

स्वायल (भू-पञ्चधी) मिकेनिक्स—भूमि से सम्बन्धित खोज, भार वहन और भवनों की नीवों से सम्बन्धित ज्ञान—डिजाइन बनाने के सिद्धांत।

भवन निर्माण सम्बन्धी अनुमान तैयार करना—सिद्धांत, नाप की इकाइयां, भवनों के लिए उनकी मात्रा निर्धारित करना तथा होने वाले व्यय तथा महत्वपूर्ण मर्दों के विवरण तैयार करना।

जल प्रदाय—पानी के स्रोत, विगुड़ता की मात्रा, शुद्ध करने के ढंग, जल प्रदाय के ढंग, पम्प तथा बस्टर आदि की रूपरेखा तैयार करना।

सफाई—गंदी नालियों, तूफान से बड़े हुए पानी के लिए और मकानों के लिए अपेक्षित नालियों की आवश्यकताएं जांचना, सेप्टिक टैंक, इनहाउस टैंक, सीवेज बनाने तथा कचरे को निपटाने के लिए खाइयां तैयार करना एकटीवेटड स्लग पद्धति।

(3) सड़क तथा पुलों का सर्वेक्षण तथा एकरेखन (अलाइन-मेन्ट)—राजपथ के लिए अपेक्षित सामग्री तथा उनके उपयोग—

डिजाइन के सिद्धांत—नींव तथा पटरियों के केम्बर, ग्रिडिंग, मोड़ और सुपर एलिवेशन—रिटेंनिंग वाल्स।

निर्माण—कच्ची सड़कों, स्थिर तथा पानी से बने हुए मैकेडन सड़कें, बिटुमिनस तलवाली तथा कंक्रीट की सड़कें, सड़कों पर नालियां, पुल—उनके प्रकार, मिकेनिकल स्पेन, आई०आर०सी० लोडिंग, छोटे पुलों के ऊपरी ढांचों के डिजाइन बनाने, पुलों तथा पायर और कुएं बनाने, पायर तथा अध्याधार की नींव के डिजाइन तैयार करने के सिद्धांत।

प्राक्कलन तैयार करना :—

सड़कों और नहरों के लिए खुदाई का काम।

(4) समरचना इंजीनियरिंग—इस्पात के ढांचे, अनुमत ढांचे, गहनीरों, साधारण तथा तैयार किये गये लट्ठे और साधारण छत के टूस और गडरों के डिजाइन तैयार करना, स्तंभों के आधार तथा चारों ओर से ब ब बीच से दबाव पड़ने वाले स्तंभों के लिए ढांचे बनाना—चटकनी लगे, रिपट लगे हुए और वेल्ड किए हुए जोड़।

आर०सी०सी० स्ट्रक्चर (ढांचे)—प्रयुक्त सामन का विवरण—अपेक्षित मजबूती और उसके हिमाब से उनके प्रयोग आबंटन करना, डिजाइन लोड्स के लिए भारतीय मानक संस्थान के मानक, आर०सी०सी० के पदार्थों में अनुमत स्ट्रेस—जोड़ सीधे और वेडिंग स्ट्रेस के अनुसार हों। साधारण रूप से सहारे के साथ लटकते हुए केन्टी लीवर लट्ठ, चौकोर तथा टी की शकल के लट्ठे जो फर्शों, छतों और लिटल में प्रयुक्त होते हों—चारों ओर से दबाव सहारने वाले स्तंभ तथा उनके आधार।

(7) भू-विज्ञान

(1) सामान्य भू-विज्ञान—

भूमि की उत्पत्ति, आयु तथा इसका भीतरी भाग, विभिन्न भू-विज्ञान संबंधी तत्व तथा स्थलाकृति विज्ञान पर उनके प्रभाव। ऋतुएं तथा भू-रक्षण, उनका वर्गीकरण तथा भारत में मिट्टी की श्रणियां, भारत के भू-विज्ञान के आधार पर उप-खंड। पैवावार तथा स्थलाकृति विज्ञान, ज्वालामुखी पहाड़ तथा भूकम्प, तथा पहाड़ों का तल-विरूपण।

(2) संरचना भू-विज्ञान—आग्नेय सामान्य संरचनाएं, नमन, नतिलंबी तथा छलान, बलना और असमताएं तथा दृश्यांश पर उसके प्रभाव। भू-विज्ञान सम्बन्धी सर्वेक्षण और मानचित्र बनाने के ढंगों का प्रारंभिक ज्ञान, क्रिस्टल विज्ञान, खनिज विज्ञान—क्रिस्टल साम्य, क्रिस्टल विज्ञान के नियम तथा क्रिस्टलों की विशेषताएं तथा यमल सम्बन्धी प्रारंभिक ज्ञान। महत्वपूर्ण शैल निर्माण का अध्ययन, जिसमें मृदा के खनिज तत्वों के रासायनिक गुण, उसके भौतिकी गुण, प्रकाशीय गुण, उसमें परिवर्तन तथा उसके वाणिज्यिक उपयोग।

(4) आर्थिक भू-विज्ञान—

भारत के महत्वपूर्ण आर्थिक खनिजों तथा उनके निक्षेपों, कच्ची धातुओं के उद्गम तथा उनके वर्गीकरण से सम्बन्धित अध्ययन।

(5) पेट्रोलोजी—

आग्नेय, दानेदार और परतदार शैलों का उनके उद्गम और वर्गीकरण सम्बन्धी प्रारंभिक ज्ञान, सामान्य शैल श्रणियों का ज्ञान।

(6) स्तरित शैल विज्ञान—स्तरित शैल विज्ञान के सिद्धांत, भू-विज्ञान सम्बन्धी रिकार्ड का, अल्प विज्ञान सम्बन्धी तथा काल सम्बन्धी उप-खंड। भारतीय स्तरित शैल विज्ञान की मुख्य-मुख्य बातें।

(7) जीवाश्म विज्ञान—

विकास के सम्बन्ध में जीवाश्म विज्ञान सम्बन्धी तत्वों का प्रभाव, जीवाश्म (फॉसिल), उनके प्रकार तथा संरक्षण के ढंग। आकृति विज्ञान तथा पशु और पौधे जीवाश्म के प्रधान रूपों में उसके वितरण का प्रारंभिक विज्ञान।

(8) कृषि इंजीनियरिंग

(1) भू तथा जल संरक्षण—

भू-संरक्षण की व्याख्या तथा उसका क्षेत्र। भू-संरक्षण के प्रकार तथा मिकेनिज्म (बल विज्ञान) उनके कारण, जल विज्ञान सम्बन्धी चक्र, वर्षा तथा जलवाह, उन पर प्रभाव डालने वाले तत्व तथा उनके आकार, स्ट्रीम गीजिंग, वर्षा से जलवाह का मूल्यांकन, भू-रक्षण पर नियंत्रण के उपाय, जैविक तथा इंजीनियरिंग।

भूल भूत खुले हुए जलमार्गों का बनाना। भू-संरक्षण सम्बन्धी ढांचों, टेरेस, बांध, नालियां तथा बास उगाते हुए पानी के निकास के मार्गों के डिजाइन बनाना, बाढ़ नियंत्रण के सिद्धांत। बाढ़ के पानी के निकास के लिए मार्ग बनाना, फार्म के लिए तालाब तथा मिट्टी के बांध तैयार करना, वदी के किनारों पर भू-संरक्षण तथा उसका नियंत्रण, वायुजनिक भू-संरक्षण तथा उस पर नियंत्रण। जल संभर की देखभाल के सिद्धांत।

नदी बाटी प्रायोजनाओं से सम्बन्धित जांच तथा योजनायें तैयार करना।

(2) सिंचाई तथा ड्रेनेज—भूमि—जल—पौधों के पारस्परिक संबंध। सिंचाई के स्रोत तथा प्रकार। लघु सिंचाई प्रायोजनाओं की योजना तथा डिजाइन तैयार करने—जल के उपयोग तथा जलमान। फसलों के लिए जल सम्बन्धी आवश्यकताओं, सिंचाई के लिए जल की आवश्यकताओं का परिमाण तथा उसका व्यय। ओरि-फिसिस, नालों तथा नालियों में जल प्रवाह मापने के ढंग, सिंचाई के ढंगों की रूपरेखाएं बनाना। नहरों, खेतों की नालियों, पाइप-साइनों, हेड गेट, डाइवर्सन बाक्स, स्ट्रक्चर तथा रोड क्रॉसिंग के डिजाइन बनाना तथा उनके निर्माण करना। भू-जल प्रापित। कुओं की द्रव्य इंजीनियरिंग। कुओं के प्रकार, उनके निर्माण तथा उनकी खुदाई के ढंग, कुओं का विकास। कुओं के टेस्ट करना।

ड्रेनेज—परिभाषा, जलस्रावित के कारण। ड्रेनेज के ढंग। सिंचाई की जाने वाली भूमि में नालियां बनाना। तल तथा भूमि से नीचे नालियां बनाने के डिजाइन, नालियां तैयार करना।

(3) निर्माण सामग्री—निर्माण सामग्री के प्रकार—उमके गुण। टाइमर, ब्रिक्कर्स तथा आर० सी० कंस्ट्रक्शन, शहतीरों, छतों के जोड़ तथा स्तंभों के डिजाइन तैयार करना। फार्म स्टेज की योजना बनाना। फार्म हाउस, मवेशी खाने तथा भंडार के लिए ढाँचों का डिजाइन बनाना। ग्रामीण जल प्रदाय तथा सफाई।

(4) फार्म बिजुत तथा मशीनरी

भिन्न-भिन्न प्रकार के आंतरिक कंबेशन इंजिन लगाना, आंतरिक कंबेशन इंजिनों के वातानुकूलन तथा नियंत्रण तथा उनमें तेल डालना और उनके लिए जलने की सामग्री उपलब्ध करना। ट्रक्टरों, बेसी, ट्रांसमिशन और स्टेयरिंग के भिन्न भिन्न प्रकार। प्राथमिक तथा माध्यमिक जुताई के लिए कृषि की मशीनरी, बीजने की मशीनरी, गुड़ाई के औजार आदि। पौधों के संरक्षण का सामान। फसलों की कटाई, अनाज गहाने के औजार। भूमि के विकास के लिए मशीनरी, पम्प और पंपिंग मशीनरी।

(5) बिजली तथा ग्रामों में बिजली उपलब्ध करना—

बिजली तैयार करना तथा उसका वितरण। ग्रामों में बिजली लगाने के लिए बिजली का वितरण। ए०सी० तथा बी०सी० सर्किट।

ग्रामों में बिजली के उपयोग। कृषि में प्रयोग होने वाले बिजली के मोटर, उनके प्रकार सम्बन्धी ध्यान, उन्हें लगाना तथा उनकी देखरेख।

9. रसायन इंजीनियरिंग

1. परिवहन की घटनाएं (स्थिर स्थिति के आधीन)।

(क) मोमेंटम ट्रांसफर :

- (i) फूलों के विभिन्न ढंग तथा उनके मापदण्ड
- (ii) बैल्लोसिटी प्रोफाइली।
- (iii) फिल्डेशन, सेडीमेन्टेशन, सेंट्रीफ्यूज
- (iv) तरल पदार्थों में ठोस पदार्थों का बहाव।

(ख) उष्म स्थानान्तरण, उष्म स्थानान्तरण के विभिन्न ढंग। चपटे, बेलनाकार, वर्गाकार, एकमात्र तथा मिश्रित, शीशों की तहों के लिए गति मापना।

कन्वेक्शन—फेस्ट और फ्री कन्वेक्शन में प्रयुक्त विभिन्न डाइमेंशनरहित ग्रुप। अलग अलग तथा पूर्ण रूप से स्थानान्तरण का रूप निर्धारित करना। वाष्पीकरण—विकीरण—स्टेफन बोल्ट्स का नियम—एमिसिविटी तथा एब्जोर्विटी। ज्योमेट्रिकल शोप फक्टर, मट्रियों में उष्मा के दबाव का हिसाब लगाना।

(ग) सहित स्थानान्तरण, गैसों तथा तरल पदार्थों का विसरण। एब्जोर्प्शन, डिजोर्प्शन, ह्यूमिलिफिकेशन डी ह्यूमिलिफिकेशन, ड्राइंग तथा डैम्पलेशन। मोमेंटम हीट तथा मास और ट्रांसफर के भेद—

2. थर्मोडायनेमिक्स

(क) थर्मोडायनेमिक्स के प्रथम, द्वितीय और तृतीय नियम।

(ख) इंटरनल एनर्जी, एंटेपी, एंथाइपी और फ्री एनर्जी का निर्धारण। सजातीय तथा विजातीय सिद्धांतों के लिए केमिकल

इक्विलिब्रियम कांस्टेंट निर्धारित करना। कंबेशन, डिस्टिलेशन तथा उष्मा स्थानान्तरण में थर्मोडायनेमिक्स का उपयोग। तरल पदार्थों, ठोस और तरल पदार्थों तथा ठोस पदार्थों के मिश्रण के सिद्धांत तथा मेकेनिज्म।

3. प्रतिक्रिया इंजीनियरिंग

(i) केनेटिक्स, सजातीय और विजातीय प्रतिक्रियाएं प्रथम और द्वितीय प्रकार की प्रतिक्रियाएं। वच तथा फ्लोरिएक्टर तथा उनके डिजाइन।

(ii) केटेलेसिस—केटेलेसिस का चुनाव,

तयारी

मकेनिज्म पर आधारित केटेलेसिस की मिनेटिक्स (सम-रचना)।

4. ट्रांसपोर्टेशन—सामग्री, विशेषतः पाउडरों, रोजन, उड़ जाने वाले तथा न उड़ने वाले तरल पदार्थों, एमल्शन और डिस-पर्शन, पम्पों, क्रॉसरों तथा ब्लोवर एकत्रित करना तथा उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना। मिक्सर—तरल-तरल, ठोस-तरल, ठोस-ठोस के लिए विभिन्न मिक्सर मिलाने का सिद्धांत तथा प्रक्रिया।

5. सामग्री—वे मामले जिनसे रसायनिक उद्योग में निर्माण की सामग्री का चुनाव किया जाता है। धातु, एलाय सेरेमिक प्लास्टिक तथा खर। इमारती लकड़ी तथा उससे बनी चीजें, प्लाईवुड, लेमिनेट। वाट और वेरलों के निर्माण के लिए उपस्कर तैयार करना।

6. इंस्ट्रुमेन्टेशन तथा प्रक्रिया नियंत्रण—हाइड्रोलिक, प्यूमेटिक थर्मल, ऑप्टिकल मैग्नेटिक, इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक औजार। नियंत्रण तथा नियंत्रण के ढंग। आटोमेशन।

10. गणित—

(1) बीजगणित, त्रिकोणमिति, तथा निर्धारक सहित समीकरण का सिद्धांत, विशुद्ध, प्लेन ज्यामिति तथा दो आयामों की विश्लेषणात्मक ज्यामिति। डिफ्रेंशियल तथा इंटीग्रल कैलकुलस तथा डिफ्रेंशिया समीकरण।

(4) स्टैटिक्स/डायोमिक्स और हाइड्रोस्टैटिक्स

अथवा

सांख्यिकी

11. मिनेनिकल इंजीनियरिंग

(1) पदार्थों की शक्ति।

स्ट्रैस तथा स्ट्रैन—हुक का नियम।

1. पदार्थों की मजबूती—

स्ट्रैसेज तथा स्ट्रैस—हुक का नियम तथा इलास्टिक कांस्टेन्स के बीच के सम्बन्ध—टेंशन व कंप्रेशन में कम्पाउन्ड बात तथा ताप-मान में परिवर्तन के कारण हुए स्ट्रैसेज।

साधारण लदान के लिए मामूली सहारे के साथ लटके हुए और कैटिलीवर बीम्स में बैडिंग मूमेन्ट, शीयर फोर्स तथा डिफ्लेक्शन।

राउन्ड बार्स में टॉर्शन—ग्रीफ्ट्स द्वारा बिजली का ट्रांसमिशन—मिग्रेशन।

कम्बाइंड बैडिंग और डायरेक्ट स्ट्रेस तथा कम्बाइंड बैडिंग व टॉर्शन के सामान्य मामले।

फेल्योर की इलास्टिक थ्योरी—स्ट्रेस कंसंट्रेशन तथा फेटींग।

2. मशीनों और मशीन डिजाइन का सिद्धांत।

मशीनों के पुर्जों की सापेक्ष वेलोसिटी ग्राफ तथा हिसाब लगाकर बिखाना।

इंजनों के क्रक ऐफर्ट डायग्राम—क्लाई-व्हील्स की गति के अन्तर। गवर्नर्स / बैल्ट-ड्राइव द्वारा ट्रांसमिट की गई बिजली। जर्नेल्स तथा थ्रस्ट बीयरिंग, बाल तथा रोलर बीयरिंग का फ्रिक्शन तथा ल्यूब्रीकेशन। फासनिंग और लोकिंग डिवाइस के डिजाइन बनाना। रिबेट लगाए हुए, पेश के साथ अथवा बेल्ट करके कसे हुए जोड़ों और फासनिंग के लिए मात्ताएं।

3. प्रयुक्त थर्मोडायनेमिक्स—

फ्यूएल-कंसंश्रण (दहन) एयर सप्लाय—फ्यूएल तथा एक्जोस्ट गैसों का विश्लेषण।

बोइलर्स, सुपरहीटर्स तथा इकोनोमाइजर्स—बोइलर माउंटिंग्स तथा एक्सेसरीज—बोइलर ट्रायल।

वाष्प के भौतिक तत्व—वाष्प सम्बन्धी सारणियां तथा उनके उपयोग।

थर्मोडायनेमिक्स के नियम—गैस सम्बन्धी नियम—गैसों का विस्तार तथा संपीडन—एयर कम्प्रेसर्स।

आदर्श तथा वास्तविक इंजन क्रम—तापमान का उपयोग—एट्रोफी तथा प्रेसर-बोल्यूम के चार्ट तथा डायग्राम।

साधारण पाण्य इंजन तथा आंतरिक दहन वाले इंजन।

इंडीकेटर तथा इंडीकेटरों के आबाग्राम—मिकेनिकल। थर्मल, एयर स्टैंडर्ड और वास्तविक दक्षताएं—सामान्य निर्माण—इंजन की ट्रायल तथा हीट बैलेंस।

4. प्रोडक्शन इंजीनियरिंग

आम मशीन टूल्स—लेथो, शेयर, प्लेनर, ड्रिलिंग मशीनों के सिद्धांत तथा डिजाइन फीचर—मिलिंग मशीनें—ग्राइंडिंग मशीनें—जिग तथा फिकस्चर। धातुओं को काटने के औजार—टूल मैटीरियल टूल ज्यामिति।

कटिंग फोर्स—ऐन्नासिब व्हील्स।

वेल्टिंग—वैल्वेबिलिटी तथा विभिन्न बैल्विंग प्रक्रियाएं—बैल्वों को टेस्ट करना।

फोर्मिंग प्रोसेस—धातुओं का सोल्डिंग, कास्टिंग, फोर्जिंग, रोलिंग तथा ड्राइंग।

मेट्रोलोजी—लाइनियर तथा एंगुलर परिमाण—सर्फेस फिनिश—ऑप्टिकल इंस्ट्रूमेंट्स।

उद्योग इंजीनियरिंग—मैथड स्टडी एण्ड वर्क मैनेजमेंट—मोशन—टाइम सम्बन्धी विवरण—वर्क सेगमेंटिंग—आव का मूल्यांकन—वेतन तथा प्रोत्साहन—आयोजन नियंत्रण तथा प्लांट की रखरखाव तैयार करना।

5. फ्लूइड मिकेनिक्स (तरल यांत्रिक) तथा जल शक्ति।

बर्मुली का समीकरण—मूविंग प्लेट तथा बेन—पर्यप तथा टर-बाइन। डिजाइन ऐप्लीकेशन्स और विशिष्ट बर्फ, सामान्यता के सिद्धांत, गवर्निंग—हाइड्रोलिक एकुमुलेटर तथा इंटेंसिब फायर—फ्रेन तथा लिफ्ट—सर्च टैंक तथा स्टोरेज रिजर्वायर।

12. भौतिकी

पदार्थ और यांत्रिकी के सामान्य गुण—

एक तथा आयाम, स्केलर एण्ड वेक्टर क्वांटिटीज, जड़त्व की गति, कार्य, ऊर्जा, संवेग। यांत्रिकी के आधारभूत नियम, परिभ्रूण गति, गुरुत्वाकर्षण, साधारण हार्मोनिक गति, सरल तथा मिश्रित सोलक, केटर्स सोलक, प्रत्यास्थता, तल-तनाव, तरल पदार्थों की विस्कोसिटी, मेकनोडायनामिक्स।

2. ध्वनि

अवर्धित, प्रणोदित तथा मुक्त कंपन, तरंग गति, डोप्लर प्रभाव, ध्वनि तरंगों का वेग, गैस में ध्वनि के वेग पर दबाव, तापमान तथा आर्द्रता का प्रभाव, डोरियों, बार, प्लेटों तथा गैस स्तंभ का कंपन, विस्फोट, स्थिर तरंगों का वांगारता—मापन, ध्वनि का वेग तथा उसकी तीव्रता, म्बर-ग्राम, वास्तविकता में ध्वनिकी, अल्ट्रा-सोनिक्स के तत्व। ग्राफोफोन, टाकीज तथा लाउडस्पीकरों के सिद्धांत।

3. ऊष्मा तथा ऊष्मा-प्रवेगिकी—

तापमान तथा उसका परिमाण, ऊष्मा विस्तार, गैसों में संतापी तथा एडियबैटिक परिवर्तन, विशिष्ट ऊष्मा तथा ऊष्मा-वाहकता, किनेटिक के पदार्थ संबंधी सिद्धांत के तत्व, बोल्ट्समैन के वितरण-नियम के बारे में भौतिक विचार, वान-डर-वाल्स कास्टेड्स समीकरण, जूल-थॉम्पसन का प्रभाव। गैसों को तरल रूप देना, ऊष्मा-इंजन, कार्नोट का प्रमेय, ऊष्मा-प्रवेगिकी के सिद्धांत तथा उनका सरल प्रयोग, ब्लैक बॉडी रेडिएशन।

4. प्रकाश

रेखिकीय काशिकी। प्रकाश का वेग। सन्न तथा गोलीय पृष्ठ पर प्रकाश का परावर्तन तथा अपवर्तन, आक्षुब्ध प्रतिबिम्ब में दोष तथा उनका सुधार, नेत्र तथा अन्य आक्षुब्ध साधन, प्रकाश का तरंग सिद्धांत, व्यक्तिकरण, सरल व्यक्तिकरण मापी, विवर्तन, विवर्तन-प्रिंटिंग, प्रकाश का ध्रुवण, स्पेक्ट्रम विज्ञान के तत्व।

5. विद्युत् तथा चुम्बकत्व

साधारण मामलों में क्षेत्र तथा शक्ति की गणना। गैस का प्रमेय तथा उसके सरल प्रयोग, इलेक्ट्रोमीटर। किसी क्षेत्र के लिये अपेक्षित ऊर्जा, पदार्थ के विद्युत् तथा चुम्बकत्व संबंधी गुण, शैबिलेम्, चुम्बकशीलता तथा धारता। विद्युत् द्वारा के कारण जनित चुम्बकत्व, गतिमान चुम्बक तथा काइल गैल्वेनोमीटर, धारा तथा संघर्षण

का परिमाण, प्रतिक्रियात्मक सक्रिय तत्वों के गुण तथा उनका निर्धारण, ऊष्मा-विद्युत प्रभाव, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक इंडक्शन, ए०सी० करंट, ट्रांसफार्मर और मोटरों का उत्पादन, इलेक्ट्रॉनिक वास्तव तथा उनके साधारण प्रयोग।

बोहर के ऐटम सिद्धांत के तत्व, इलेक्ट्रॉन, कैंथेड किरणें तथा एक्सरेज। इलेक्ट्रॉनिक चार्ज तथा मास का परिमाण।

13. प्राणी-विज्ञान

पशु जगत का मुख्य-मुख्य दलों में वर्गीकरण, विभिन्न श्रेणियों के विशिष्ट लक्षण।

निम्नलिखित नान-काइट के ढाँचे, आदतें तथा जीवन विवरण :-

बमोएना, मलेरियल-परजीवी, स्पंज, हाइड्रा, लिवरफ्यूक, टेपवार्म, राउंडवार्म, अर्थवार्म, लीच, काकरो, घर में मक्खी-मच्छर, बिच्छू, फेशवाटर मसल, पौड स्नेल तथा स्टाफिश (केवल बाहरी विशिष्टताएं)।

कीटों का आर्थिक महत्व, निम्नलिखित कीटों का जीवन-विवरण तथा बायोनोमिक्स : टर्माइट, टिड्डी, शहद की मक्खी तथा रेशम के कीड़े।

चोरहेटा का वर्गीकरण।

निम्नलिखित चोरहेटा श्रेणियों का ढाँचा तथा उनकी तुलनात्मक शरीर रचना :

ब्रांक्योस्टोमा, स्कोलीडोन, मेंढक, यूरोमेस्टिक्स या अन्य कोई छिपकली (बेरानस का पंजर), कबूतर (पक्षियों का पंजर), तथा खरगोश, चूहा, गिलहरी। मेंढक और खरगोश के संदर्भ में पशुशरीर के विभिन्न भागों की हिस्टोलोजी तथा फिज्योलोजी, ऐंडोरीन ग्लैंड तथा उनके कार्य का प्रारंभिक ज्ञान।

मेंढक तथा कुक्कुट के शारीरिक ढाँचे के विकास तथा मम्मेलियन प्लेसेंटा के कार्य संबंधी ज्ञान।

विकास, नसलों के भेद, सम्मिलन, रीकेपीचुलेशन के सामान्य सिद्धांत मेंडेलियन।

विकास और नसलों की भिन्नता के सामान्य सिद्धांत, अनुकूलन, प्रत्यास्मरण-परिकल्पना, मेंडेल की वंशानुगति, पुनर-जनन के योन-भिन्न तथा योन प्रकार, अनिवेक जनन, कायान्तरण।

भारतीय पशुजगत के विशिष्ट संदर्भ में, पशुओं का कबक विज्ञान और भू-विज्ञान संबंधी वर्गीकरण।

भारत के वन्य प्राणी, जिसमें जहरीले और बिना जहर वाले और ओविट पक्षी शामिल हैं।

भाग छ

व्यक्तित्व परीक्षा—एक बोर्ड उम्मीदवार का इंटरव्यू लेगा। इस बोर्ड के सामने उम्मीदवार के कैरियर का वृत्त होगा। उससे सामान्य रुचि की बातों पर प्रश्न पूछे जाएंगे। यह इंटरव्यू इस उद्देश्य से होगा कि सक्षम और निष्पक्ष प्रेक्षकों का बोर्ड यह जान सके कि जिस सेवा या सेवाओं के लिये उम्मीदवार ने आवेदन-पत्र दिया है,

उसके/उनके लिये वह व्यक्तित्व की दृष्टि से उपयुक्त है या नहीं। यह परीक्षा उम्मीदवार की मानसिक क्षमता को जांचने के अभिप्राय से की जाती है। मोटे तौर पर इस परीक्षा का प्रयोजन वास्तव में न केवल उसके बौद्धिक गुणों का, अपितु उसके सामाजिक लक्षणों और सामाजिक घटनाओं में उसकी रुचि का भी मूल्यांकन करना है। इसमें उम्मीदवार की मानसिक संतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण-शक्ति, स्पष्ट और तर्कसंगत प्रतिपादन करने की शक्ति, सन्तुलित निर्णय की शक्ति, रुचि की विविधता और गहराई, नेतृत्व और सामाजिक संगठन की योग्यता, बौद्धिक और नैतिक ईमानदारी आदि की भी जांच की जाती है।

2. इंटरव्यू में पूरी तरह से प्रति परीक्षा (cross examination) की प्रणाली नहीं अपनाई जाती। उसमें स्वाभाविक वार्तालाप के माध्यम से उम्मीदवार के मानसिक गुणों का उद्घाटन करने का प्रयत्न किया जाता है, परन्तु यह वार्तालाप एक विशेष दिशा में और एक विशेष प्रयोजन से किया जाता है।

3. व्यक्तित्व परीक्षा उम्मीदवारों के विशेष या सामान्य ज्ञान की जांच करने के प्रयोजन से नहीं की जाती, क्योंकि इसकी जांच तो लिखित प्रश्न-पत्रों में पहले ही हो जाती है। उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि वे केवल अपने विद्याध्ययन के विशेष विषयों में ही समझ-बूझ के साथ रुचि न लें, परन्तु वे उन घटनाओं में भी, जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घट रही हैं, तथा आधुनिक विचारधाराओं में और उन कई खोजों में भी रुचि लें जो एक सुशिक्षित युवक में जिज्ञासा उत्पन्न करती है।

परिशिष्ट III

(नियम 22 के अनुसार)

भारतीय वन सेवा संबंधी संक्षिप्त व्यौरा (नियम 22 के अनुसार) —

(क) नियुक्तियां परख पर की जाएंगी जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे बढ़ाया भी जा सकेगा। सफल उम्मीदवारों को परख की अवधि में, भारत सरकार के निर्णय के अनुसार निश्चित स्थान पर और निश्चित रीति से कार्य करना होगा और निश्चित परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्य-कुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा-मुक्त कर सकती है।

(ग) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो, तो सरकार उसे या तो सेवामुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) यदि सरकार ने सेवा में नियुक्ति करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी हो तो वह अधिकारी, ऊपर खण्ड

(ख) और (ग) के अन्तर्गत, सरकार की किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(ङ) भारतीय वन सेवा के अधिकारी से, केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अन्तर्गत, भारत में या विदेश में किसी भी स्थान पर सेवाएं ली जा सकती हैं।

(च) वेतनमान :—

जूनियर वेतनमान—र० 400-400-450-30-60-35-670-द० र०-35-950।

सीनियर वेतनमान—र० 700 (छठे वर्ष या उससे पहले) - 40-1100-50/2-1250।

वनपाल—र० 1300-60-1600-100-1800।

मुख्य वनपाल—र० 2000-125-2250।

वन-महानिरीक्षक—र० 3000-00 (नियत)।

महंगाई भत्ता—समय-समय पर जारी किये गए आदेशों के अनुसार मिलेगा। परखाद्यीन अधिकारियों की सेवा जूनियर समय में प्रारम्भ होगी और उन्हें परख पर बिताई गई अवधि को सम्यमान में वेतन-वृद्धि छुट्टी या पेंशन के लिये गिनने की अनुमति होगी।

(छ) भविष्य निधि—भारतीय वन सेवा के अधिकारी, अखिल भारतीय सेवा (भविष्य निधि) नियमावली, 1955 से शासित होते हैं।

(ज) छुट्टी—भारतीय वन सेवा के अधिकारी अखिल भारतीय सेवा (छुट्टी) नियमावली, 1955 से शासित होते हैं।

(झ) डाक्टरी परिचर्या—भारतीय वन सेवा के अधिकारियों को अखिल भारतीय सेवा (डाक्टरी परिचर्या) नियमावली, 1954 के अन्तर्गत अनुमत्य डाक्टरी परिचर्या की सुविधाएं पाने का हक है।

(ञ) सेवा निवृत्ति लाभ—प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नियुक्त किये गए भारतीय वन सेवा के अधिकारी, अखिल भारतीय सेवा (मृत्यु व सेवा निवृत्ति लाभ) नियमावली, 1958 द्वारा शासित होते हैं।

परिशिष्ट IV

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा के बारे में विनियम

(नियम 18 के अनुसार)

(ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिये प्रकाशित किये जाते हैं ताकि वे यह अनुमान लगा सकें कि वे अभीष्ट शारीरिक स्तर के हैं या नहीं। ये विनियम स्वास्थ्य-परीक्षकों (Medical Examiners) के लिये भी सामान्य निर्देश हैं तथा जो उम्मीदवार इन विनियमों में निर्धारित न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरी नहीं करता उसे स्वास्थ्य-परीक्षक स्वस्थ घोषित नहीं कर सकते। किन्तु किसी उम्मीदवार को इन विनियमों में निर्धारित आवश्यकताओं के अनुसार स्वस्थ न मानते हुए भी स्वास्थ्य-परीक्षा बोर्ड को इस बात की अनुमति होगी कि वह, लिखित रूप से स्पष्ट कारण देते हुए, भारत सरकार से यह सिफारिश कर सके कि उक्त उम्मीदवार की सरकारी सेवा में लिया जा सकता है और इससे सरकार को कोई हानि नहीं होगी।

2. किन्तु यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिये कि भारत सरकार को स्वास्थ्य-परीक्षा बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करके उसे स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार होगा।

1. नियुक्ति के योग्य ठहराए जाने के लिये यह जरूरी है कि उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हो और उम्मीदवार में कोई ऐसा शारीरिक दोष न हो जिससे नियुक्ति के बाद दक्षतापूर्वक काम करने में बाधा पड़ने की संभावना हो।

2. चलने की जांच—उम्मीदवारों को 4 घंटे में पूर्ण होने वाली 25 किलोमीटर चलने की जांच में सफलता प्राप्त करनी होगी। वन-महानिरीक्षक, भारत सरकार द्वारा यह जांच करने की व्यवस्था इस प्रकार से की जाएगी कि वह स्वास्थ्य-परीक्षा बोर्ड की बैठकों के साथ-साथ ही हो।

3. (क) भारतीय (एंग्लो-इंडियन समेत) जाति के उम्मीदवारों की आयु, कद और छाती के घेर के परस्पर संबंध के बारे में मेडिकल बोर्ड के ऊपर ही यह बात छोड़ दी गई है कि वह उम्मीदवारों की परीक्षा में मार्ग-दर्शन के रूप में जो भी परस्पर संबंध के आंकड़े सबसे अधिक उपयुक्त समझे, व्यवहार में लाए। यदि वजन, कद और छाती के घेर में विचलना हो तो जांच के लिये उम्मीदवार को अस्पताल में रखना चाहिये और छाती का एक्स-रे लेना चाहिये। ऐसा करने के बाद ही बोर्ड उम्मीदवार को योग्य अथवा अयोग्य करेगा।

(ख) कद और छाती के घेर का कम-से-कम मान नीचे दिया जाता है जिस पर पूरा न उतरने पर उम्मीदवार को मंजूर नहीं किया जा सकता।

कद	छाती का घेर (पूरा फला कर)	फैलाव
सें० मी०	सें० मी०	सें० मी०
163	84	5 (पुरुषों के लिये)
150	79	5 (महिलाओं के लिये)

गोरखा, गढ़वाली, असमिया, नागालैंड की आदिम जातियों आदि के उम्मीदवारों के लिये, जिनका औसत कद विशेष रूप से कम होता है, कम से कम निर्धारित कद में छूट दी जाती है।

4. उम्मीदवार का कद निम्नलिखित विधि में नापा जाएगा :—

वह अपने जूते उतार देगा और उसे माप-बंद (स्टैंडर्ड) से इस प्रकार सटा कर खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव आपस में जुड़े रहें और उसका वजन, सिवाय एड़ियों के पांवों की उंगलियों या किसी और हिस्से पर न पड़े। वह बिना अकड़ें सीधा खड़ा होगा और उसकी एड़ियां, पिछलियां, नितंब और कंधे माप-बंद के साथ लगे होंगे। उसकी ठोड़ी नीची रखी जाएगी ताकि सिर का स्तर (बटैक्स आफ दि हैड लेवल) हारिजेंटल बार (आड़ी छड़) के नीचे आ जाए। कद सेंटीमीटरों और आधे सेंटीमीटरों में नापा जाएगा।

5. उम्मीदवार की छाती नापने का तरीका इस प्रकार है :

उसे इस भांति सीधा खड़ा किया जाएगा कि उसके [पांव जुड़े हों और उसकी भुजाएं सिर से ऊपर उठी हों। फीते को छाती के गिर्व इस तरह से लगाया जाएगा कि पीछे की ओर इसका ऊपरी किनारा असफलक (सोल्डर ब्लेड) के निम्न कोणों (इन्फीरियर-एंगल्स) से लगा रहे और यह फीते को छाती के गिर्व ले जाने पर उसी आड़े समतल (हारिज़टल प्लेन) में रहे। फिर भुजाओं को नीचे किया जाएगा और उन्हें शरीर के साथ सटका रहने दिया जाएगा किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि कंधे ऊपर या पीछे की ओर न किये जाएं जिससे कि फीता न हिले। अब उम्मीदवार को कई बार गहरा सांस लेने के लिये कहा जाएगा और छाती का अधिक से अधिक फैलाव गौर से नोट किया जाएगा और कम से कम और अधिक से अधिक फैलाव सेंटीमीटरों में रिकार्ड किया जाएगा, 84-89, 86-93.5 आदि। नाप को रिकार्ड करते समय आधे सेंटीमीटर से कम के भिन्न फ्रैक्शन को नोट नहीं करना चाहिये।

6. उम्मीदवार का वजन भी लिया जाएगा और उसका वजन किलोग्रामों में रिकार्ड किया जाएगा, आधे किलोग्राम से कम के फ्रैक्शन को नोट नहीं करना चाहिये।

7. उम्मीदवार की नज़र की जांच निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जाएगी। प्रत्येक जांच का परिणाम रिकार्ड किया जाएगा :

(i) सामान्य (जनरल)—किसी रोग या विलक्षणता (एब्नॉर्मैलिटी) का पता लगाने के लिये उम्मीदवार की आंखों की सामान्य परीक्षा की जाएगी। यदि उम्मीदवार को ऐसा भेंगापन या आंखों, पलकों अथवा साथ लगी संरचनाओं (कॉन्जुगस स्ट्रक्चर्स) का विकास होगा जिसे भविष्य में किसी भी समय सेवा के लिये उसके अयोग्य होने की सम्भावना हो तो उम्मीदवार को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

(ii) दृष्टि की पकड़ (विजुअल एक्विटी)—दृष्टि की तीव्रता का निर्धारण करने के लिये दो जांचें की जाएंगी, एक दूर की नज़र के लिये और दूसरी नज़दीक की नज़र के लिये। प्रत्येक आंख की असग से परीक्षा की जाएगी।

चश्मे के बिना नज़र (नेकेड आई विज़न) की कोई न्यूनतम सीमा (मिनिमम लिमिट) नहीं होगी, किन्तु प्रत्येक केस में मेडिकल बोर्ड या अन्य मेडिकल प्राधिकारी द्वारा इसे रिकार्ड किया जाएगा, क्योंकि इससे आंख की हालत के बारे में मूल सूचना (बेसिक इन्फार्मेशन) मिला जाएगी।

चश्मे के साथ और चश्मे के बिना दूर और नज़दीक की नज़र का मानक निम्नलिखित होगा :

दूर की नज़र		नज़दीक की नज़र	
अच्छी आंख	खराब आंख	अच्छी आंख	खराब आंख
(ठीक की हुई नज़र)		(ठीक की हुई नज़र)	
6/6	6/12		
या		ज० I	जे० II
6/9	6/9		

नोट :—

(1) फंडस परीक्षा—जब कभी सम्भव होगी मेडिकल बोर्ड की इच्छा पर फंडस परीक्षा की जाएगी और परिणाम रिकार्ड किये जाएंगे।

(2) कलर विज़न—(i) रंगों के संबंध में नज़र की जांच जरूरी है।

(ii) नीचे दी गई तालिका के अनुसार, रंग का प्रत्यक्ष ज्ञान उच्चतर (हायर), और निम्नतर (लोअर) ग्रेडों में होना चाहिये जो लैटन के द्वारक (एपचर) के आकार पर निर्भर हों।

ग्रेड	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान का उच्चतर ग्रेड	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान का निम्नतर ग्रेड
1. लैम्प और उम्मीदवार के बीच की दूरी।	4.9 मीटर	4.9 मीटर
2. द्वारक (एपचर) का आकार।	1.3 मि० मीटर	1.3 मि० मीटर
3. दिखाने का समय	5 सेकंड	5 सेकंड

(iii) लाल संकेत, हरे संकेत और सफेद रंग को आसानी से और हिचकिचाहट के बिना पहचान लेना संतोषजनक कलर विज़न है। इश्वारा की प्लेटों के इस्तेमाल को जिन्हें एड्रिज ग्रीन की लैटन जैसी उपयुक्त लैटन और अच्छे रोशनी में दिखाया जाता है, कलर विज़न की जांच करने के लिये बिल्कुल विश्वासनीय समझा जाएगा। वैसे तो दोनों जांचों में से किसी भी एक जांच को साधारणतया पर्याप्त समझा जा सकता है। लेकिन सड़क, रेल और हवाई यातायात से संबंधित सेवाओं के लिये लैटन से जांच करना लाजमी है। शक वाले मामलों में जब उम्मीदवार को किसी एक जांच करने पर अयोग्य पाया जाए तो दोनों ही तरीकों से जांच करनी चाहिये।

(3) दृष्टि क्षेत्र (फील्ड आफ विज़न)—सभी सेवाओं के लिये सम्मुखन विधि (कन्फ्रंटेशन मेथड) द्वारा पुष्टि क्षेत्र की जांच की जाएगी। जब ऐसी जांच का नतीजा असंतोषजनक या संदिग्ध हो तब दृष्टि क्षेत्र को परिमापी (पैरीमीटर) पर निर्धारित किया जाना चाहिये।

(4) रतोंधी (नाइट ब्लाइन्डनेस)—केवल विशेष मामलों को छोड़ कर रतोंधी की जांच नेमी रूप से जरूरी नहीं है, रतोंधी या अंधेरे में दिखाई न देने की जांच करने के लिये कोई नियत स्टैंडर्ड टेस्ट नहीं है। मेडिकल बोर्ड को ही ऐसे काम चलाऊ टेस्ट कर लेने चाहिए जैसे रोशनी कम करके या उम्मीदवार को अंधेरे कमरे में ले जाकर 20 से 30 मिनट के बाद उससे विविध चीजों की पहचान करवा कर दृष्टि की पकड़ रिकार्ड करना। उम्मीदवारों के अपने कथनों पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिये किन्तु उन पर उचित विचार किया जाना चाहिये।

(5) दृष्टि की पकड़ से भिन्न आंख की अवस्थाएं (आक्यूलर कंडीशन्स)—

(क) आंख की उस बीमारी को या बड़ती हुई बतन लुटि (प्रोग्रेसिव रिफ्रेक्टिव एरर) को, जिसके परिणामस्वरूप दृष्टि की पकड़ के कम होने की सम्भावना हो, अयोग्यता का कारण समझना चाहिये।

(ख) रोहे (ट्रेकोमा)—यदि रोहे जटिल न हों तो वे आमतौर से अयोग्यता का कारण नहीं होंगे।

(ग) भेंगापन (स्विक्ट)—द्विनेत्री (बाइनाकुलर) दृष्टि का होना लाजिमी है। नियत स्टैंडर्ड की दृष्टि की पकड़ होने पर भी भेंगापन को अयोग्यता का कारण समझना चाहिये।

(घ) एक आंख वाले व्यक्ति—नियुक्ति के लिये एक आंख वाले व्यक्तियों की सिफारिश नहीं की जाती।

8. रक्त-दाब (ब्लड प्रेशर)—

ब्लड प्रेशर के संबंध में बोर्ड अपने निर्णय से काम लेगा। नार्मल उच्चतम सिस्टोलिक प्रेशर के आकलन की काम चलाऊ विधि नीचे दी जाती है।

(i) 15 से 25 वर्ष के व्यक्तियों में औसत ब्लड प्रेशर लगभग 100+आयु होता है।

(ii) 25 वर्ष से ऊपर की आयु वाले व्यक्तियों में ब्लड प्रेशर के आकलन का सामान्य नियम यह है कि 110 में आधी आयु जोड़ दी जाए। यह तरीका बिलकुल संतोषजनक दिखाई पड़ता है।

ध्यान दीजिए—सामान्य नियम के रूप में 140 से ऊपर के सिस्टोलिक प्रेशर को और 90 से ऊपर के डास्टोलिक प्रेशर को संदिग्ध मान लेना चाहिए, और उम्मीदवार को योग्य या अयोग्य ठहराने के संबंध में अपनी अंतिम राय देने से पहले बोर्ड को चाहिए कि उम्मीदवार को अस्पताल में रखे। अस्पताल में रखने की रिपोर्ट से यह पता लगना चाहिए कि घबराहट (एक्साइटमेंट) आदि के कारण ब्लड प्रेशर थोड़े समय रहने वाला है या इसका कारण कोई कायिक (आर्गेनिक बीमारी) है। (ऐसे सभी केसों में हृदय की एक्स-रे और विद्युत हृल्लेखी (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफिक) परीक्षाएं और रक्त यूरिया निकास (ल्यूरेंस) की जांच भी नेमी रूप से की जानी चाहिए। फिर भी उम्मीदवार के योग्य होने या न होने के बारे में अंतिम फैसला केवल मेडिकल बोर्ड ही करेगा।

ब्लड प्रेशर (रक्त-दाब) लेने का तरीका—

नियमत: पारेवाले दाबमापी (मर्करी मेनोमीटर) किस्म का आला (इंस्ट्रूमेंट) इस्तेमाल करना चाहिए। किसी किस्म के व्यायाम या घबराहट के बाद पन्द्रह मिनट तक रक्त दाब नहीं लेना चाहिए। रोगी बैठा या लेटा हो बशर्ते कि वह और विशेषकर उसकी भुजा शिथिल और आराम से हो। कुछ-कुछ हारिजंटल स्थिति में रोगी के पाखंड पर भुजा को आराम से सहारा दिया जाता है। भुजा पर से कंधे तक कपड़े उतार देने चाहिए। कफ में से पूरी तरह हवा निकालकर बीच की रखड़ को भुजा के अन्दर की ओर रख कर और इसके निचले किनारे को कोहनी के मोड़ से एक या दो इंच ऊपर करके खगाना चाहिए। इसके बाद कपड़े की पट्टी को फैलाकर समान रूप

से लपेटना चाहिए ताकि हवा भरने पर कोई हिस्सा फूल कर बाहर को न निकले।

कोहनी के मोड़ पर प्रगंड धमनी (ब्रैकिअल आर्टरी) को दबावबा कर ढूँढा जाता है और तब इसके ऊपर बीचों-बीच स्टेस्कोप को हल्के से लगाया जाता है जो कफ के साथ न लगे। कफ में लगभग 200 हवा भरी जाती है और इसके बाद इसमें से धीरे-धीरे हवा निकाली जाती है। हल्की क्रमिक ध्वनियां सुनाई पड़ने पर जिस स्तर पर पारे का कालम टिका होता है वह सिस्टोलिक प्रेशर दर्शाता है। जब और हवा निकाली जाएगी तो ध्वनियां तेज सुनाई पड़ेंगी। जिस स्तर पर ये साफ और अच्छी सुनाई पड़ने वाली ध्वनियां हल्की दबी हुई-सी सुप्त प्राप्य हो जाएं, वह डायस्टोलिक प्रेशर है। ब्लड-प्रेशर काफी थोड़ी अवधि में ही ले लेना चाहिए क्योंकि कपल के लम्बे समय का दबाव रोगी के लिए क्षोभकार होता है और इससे रीडिंग गलत हो जाती है। यदि दोबारा पड़ताल करनी जरूरी हो तो कफ में से पूरी हवा निकाल कर कुछ मिनट के बाद ही ऐसा किया जाए। (कभी-कभी कफ में से हवा निकालने पर एक निश्चित स्तर पर ध्वनियां सुनाई पड़ती हैं, दाब गिरने पर वे गायब हो जाती हैं और निम्नतर स्तर पर पुनः प्रकट हो जाती हैं। इस "साइलेंट गैप" से रीडिंग में गलती हो सकती है।)

9. परीक्षक की उपस्थिति में किए गए मूत्र की परीक्षा की जानी चाहिए और परिणाम रिकार्ड किया जाना चाहिए। जब मेडिकल बोर्ड को किसी उम्मीदवार के मूत्र में रासायनिक जांच द्वारा शक्कर का पता चले तो बोर्ड इसके दूसरे सभी पहलुओं की परीक्षा करेगा और मधुमेह (डायबीटीज) के शोतक चिन्हों और लक्षणों को भी विशेष रूप से नोट करेगा। यदि बोर्ड उम्मीदवार को ग्लूकोज मेह (ग्लाइकोसूरिया) के सिवाय, अपेक्षित मेडिकल फिटनेस के स्टैंडर्ड के अनुरूप पाए तो वह उम्मीदवार को इस शर्त के साथ फिट घोषित कर सकता है कि ग्लूकोज मेह अमधुमेही (नान डायबेटिक) हो और बोर्ड केस को मेडिसिन के किसी ऐसे निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास भेजेगा जिसके पास अस्पताल और प्रयोगशाला की सुविधाएं हों। मेडिकल विशेषज्ञ स्टैंडर्ड ब्लड शुगर टालरेंस टेस्ट समेत जो भी क्लिनिकल या लेबोरेटरी परीक्षाएं जरूरी समझेगा, करेगा और अपनी रिपोर्ट मेडिकल बोर्ड को भेज देगा जिस पर मेडिकल बोर्ड की "फिट" या "अनफिट" की अंतिम राय आधारित होगी। दूसरे अवसर पर उम्मीदवार के लिए बोर्ड के सामने स्वयं उपस्थित होना जरूरी नहीं होगा। औषधि के प्रभाव को समाप्त करने के लिए यह जरूरी हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिन तक अस्पताल में पूरी देख-रेख में रखा जाए।

10. यदि जांच के परिणामस्वरूप कोई औरत उम्मीदवार 12 हफ्ते या उससे अधिक समय की गर्भवती पायी जाती है तो उसको अस्थायी रूप से तब तक अस्वस्थ घोषित किया जाना चाहिए जबतक कि उसका प्रसूति न हो जाय। किसी रजिस्टर्ड चिकित्सक की से आरोग्य का स्वस्थता-प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने पर, प्रसूति की तारीख के 6 हफ्ते बाद आरोग्य प्रमाण-पत्र के लिए, उसकी फिर से स्वास्थ्य-परीक्षा की जानी चाहिए।

11. निम्नलिखित अतिरिक्त बातों का प्रेक्षण करना चाहिए—

(क) उम्मीदवार को दोनों कानों से अच्छा सुनाई पड़ता है या नहीं और कान की बीमारी का कोई चिह्न है

या नहीं। यदि कोई कान को खराबी हो तो इसकी परीक्षा कान-विशेषज्ञ द्वारा की जानी चाहिए। यदि सुनने की खराबी का इलाज शल्य-क्रिया (आपरेशन) या हिरिंगर एड के इस्तेमाल से हो सके तो उम्मीदवार को इस आधार पर अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता बशर्ते कि कान की बिमारी बढ़ने वाली न हो।

- (ख) उम्मीदवार बोलने में हकलाता / हकलाती नहीं हो।
- (ग) उसके दांत अच्छी हालत में हैं या नहीं, और अच्छी तरह चबाने के लिए जरूरी होने पर नकली दांत लगे हैं या नहीं। (अच्छी तरह भरे हुए दांतों को ठीक समझा जाएगा)।
- (घ) उसकी छाती की बनावट अच्छी है या नहीं और छाती काफी फैलती है या नहीं तथा उसका दिल या फेफड़े ठीक हैं या नहीं।
- (ङ) उसे पेट की कोई बीमारी है या नहीं।
- (च) उसे रफ़्चर (हनिया या फटन) है या नहीं।
- (छ) उसे हाइड्रोसील, बड़ी हुई बेरिकोसील, बेरिकोज शिरा (वैन) या बवासीर है या नहीं?
- (ज) उसके अंगों, हाथों और पैरों की बनावट और विकास अच्छा है या नहीं और उसकी संघियां भली भांती स्वतंत्र रूप से हिलती हैं या नहीं।
- (झ) उसे कोई चिरस्थायी त्वचा की बिमारी है या नहीं।
- (ञ) कोई जन्मजात कुरचना या दोष है या नहीं।
- (ट) उसमें किसी उग्र या जीर्ण बीमारी के निशान हैं या नहीं जिनसे कमजोर गठन का पता लगे।
- (ठ) कारगर टीके के निशान हैं या नहीं।
- (ड) उसे कोई संचारी (कम्यूनिकेबल) रोग है या नहीं।

1.2. दिल और फेफड़ों की किसी ऐसी विलक्षणता का पता लगाने के लिए जो साधारण शारीरिक परीक्षा से ज्ञात न हो, सभी मामलों में नेमी रूप से छाती की ऐक्स-रे परीक्षा की जानी चाहिए।

जब कोई दोष मिले तो उसे प्रमाण-पत्र में अवश्य ही नोट किया जाए। मेडिकल परीक्षक को अपनी राय लिख देनी चाहिए की उम्मीदवार से अपक्षित दक्षतापूर्ण ड्यूटी में इससे बाधा पड़ने की संभावना है या नहीं।

नोट :—उम्मीदवारों को चेतावनी दी जाती है कि उपर्युक्त सेवाओं के लिए उनकी योग्यता का निर्धारण करने के लिए नियुक्त स्पेशल या स्टैंडिंग मेडिकल बोर्ड के खिलाफ उन्हें अपील करने का कोई हक नहीं है। किन्तु यदि सरकार को प्रथम बोर्ड की जांच में निर्णय की गलती की संभावना के संबंध में, प्रस्तुत किए गए प्रमाण के बारे में तसल्ली हो जाए तो सरकार दूसरे बोर्ड के सामने अपील की इजाजत दे सकती है। ऐसा प्रमाण उम्मीदवार को प्रथम मेडिकल बोर्ड के निर्णय भेजने की तारीख के एक महीने के अंदर पेश करना चाहिए वरना दूसरे मेडिकल बोर्ड के सामने अपील करने की प्रार्थना पर विचार नहीं किया जाएगा।

यदि प्रथम बोर्ड के निर्णय की गलती की संभावना के बारे में प्रमाण के रूप में उम्मीदवार मेडिकल प्रमाण-पत्र पेश करे तो इस प्रमाण-पत्र पर उस हालत में विचार नहीं किया जाएगा जब कि इस में संबंधित मेडिकल प्रेक्টিशनर का इस आशय का नोट नहीं होगा कि यह प्रमाण-पत्र इस तथ्य के पूर्ण ज्ञान के बाद ही दिया गया है कि उम्मीदवार पहले से ही सेवाओं के लिए मेडिकल बोर्ड द्वारा अयोग्य घोषित करके अस्वीकृत किया जा चुका हो।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

मेडिकल परीक्षक के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित सूचना दी जाती है :—

1. शारीरिक योग्यता (फिटनेस) के लिए अपनाए जाने वाले स्टैंडर्ड में संबंधित उम्मीदवार की आयु और सेवा-काल (यदि हो) के लिए उचित गुंजाइश रखनी चाहिए।

किसी ऐसे व्यक्ति को पब्लिक सर्विस में भर्ती के लिए योग्य नहीं समझा जाएगा जिसके बारे में यथास्थिति सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी (अपाइंटिंग अथॉरिटी) को, यह तसल्ली नहीं होगी कि उसे ऐसी कोई बीमारी या शारीरिक दुर्बलता (बाडिली इनफर्मिटी) नहीं है जिससे वह उस सेवा के लिए अयोग्य हो या उसके अयोग्य होने की संभावना हो।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि योग्यता का प्रश्न भविष्य से भी उतना ही संबद्ध है जितना वर्तमान से है और मेडिकल परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य निरंतर कारगर सेवा प्राप्त करना और स्थाई नियुक्ति के उम्मीदवारों के मामले में अकाल मृत्यु होने पर समय-पूर्व पेंशन या अदायगियों को रोकना है। साथ ही यह भी नोट किया जाए कि यहां प्रश्न केवल निरंतर कारगर सेवा की संभावना का है और उम्मीदवार को अस्वीकृत करने की सलाह उस हालत में नहीं दी जानी चाहिए जबकि उसमें कोई ऐसा दोष हो जो केवल बहुत कम स्थितियों में निरंतर कारगर सेवा में बाधक पाया गया हो।

महिला उम्मीदवार की परीक्षा के लिए किसी लेडी डाक्टर को मेडिकल बोर्ड के सदस्य के रूप में सहयोजित किया जाएगा।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट को गोपनीय रखा जाएगा।

ऐसे मामलों में जब कि कोई उम्मीदवार सरकारी सेवा में नियुक्ति के लिए अयोग्य करार दिया जाता है तो मोटे तौर पर उसके अस्वीकार किए जाने के आधार उम्मीदवार को बताए जा सकते हैं किन्तु मेडिकल बोर्ड ने जो खराबी बताई हो उनका विस्तृत व्यौरा नहीं दिया जा सकता।

ऐसे मामलों में जहां मेडिकल बोर्ड का यह विचार हो कि सरकारी सेवा के लिए उम्मीदवार को अयोग्य बनाने वाली छोटी-मोटी खराबी चिकित्सा (औषध या शल्य) द्वारा दूर हो सकती है वहां मेडिकल बोर्ड द्वारा इस आशय का कथन रिकार्ड किया जाना चाहिए। नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा इस बारे में उम्मीदवार को बोर्ड की राय सूचित किए जाने में कोई आपत्ति नहीं है और जब वह खराबी दूर हो जाए तो एक दूसरे मेडिकल बोर्ड के सामने उस व्यक्ति को उपस्थित होने के लिए कहने में संबंधित प्राधिकारी स्वतंत्र है।

यदि कोई उम्मीदवार अस्थायी तौर से अयोग्य करार दिया जाए तो दुबारा परीक्षा की अवधि साधारणतया कम से कम छः महीने से कम नहीं होनी चाहिए। निश्चित अवधि के बाध जब दुबारा परीक्षा हो तो ऐसे उम्मीदवारों को और आगे की अवधि के लिए अस्थायी तौर पर अयोग्य घोषित न कर नियुक्ति के लिए उनकी योग्यता के संबंध में अथवा वे इस नियुक्ति के लिए अयोग्य है ऐसा निर्णय अंतिम रूप से दिया जाना चाहिए।]

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा :—

अपनी मेडिकल परीक्षा से पूर्व उम्मीदवार को निम्नलिखित अपेक्षित स्टेटमेंट देना चाहिए और उसके साथ लगी हुई घोषणा (डिक्लेरेशन) पर हस्ताक्षर करने चाहिए। नीचे दिए गए नोट में उल्लिखित चेतावनी की ओर उम्मीदवार को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

1. अपना पूरा नाम लिखें—
(साफ अक्षरों में)

2. अपनी आयु और जन्म स्थान बताएं—

2(क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमी, नागालैंड आदिम जाति आदि में से किसी जाति से संबंधित हैं, जिसका औसत कद दूसरों से कम होता है? “हां” या “नहीं” में उत्तर दीजिए, और यदि उत्तर “हां” में है तो उस जाति का नाम बताइए।

3(क) क्या आपको कभी चेचक, रुक-रुक कर होने वाला या कोई दूसरा बुखार, ग्रंथियां (ग्लैंड्स) का बढ़ना या इनमें पीप पड़ना, थूक में खून आना, दमा, दिल की बिमारी, फेफड़े की बिमारी, मूर्छा के दौर, रूमेटिज्म, एंजिसाइटिस हुआ है?

अथवा

(ख) दूसरी कोई ऐसी बिमारी या बुर्बटना, जिसके कारण घैया पर लेटे रहना पड़ा हो और जिसका मेडिकल या सर्जिकल इलाज किया गया हो, हुई है?

4. आपको चेचक आदि का अंतिम टीका कब लगा था?

5. क्या आपको अधिक काम या किसी दूसरे कारण से किसी किस्म की अधीरता (नर्वसनेस) हुई है?

6. अपने परिवार के संबंध में निम्नलिखित ब्यौरा दें।

यदि पिता जीवित हो तो उसकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	यदि पिता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय पिता की आयु और मृत्यु का कारण	आपके कितने भाई जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपके कितने भाइयों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण
(1)	(2)	(3)	(4)
यदि माता जीवित हो तो उसकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	यदि माता की मृत्यु हो चुकी हो तो मृत्यु के समय उसकी आयु और मृत्यु का कारण	आपकी कितनी बहनें जीवित हैं, उनकी आयु और स्वास्थ्य की अवस्था	आपकी कितनी बहनों की मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु के समय उनकी आयु और मृत्यु का कारण

7. क्या इसके पहले किसी मेडिकल बोर्ड ने आपकी परीक्षा की है? —

8. यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर “हां” हो तो बताइए किस सेवा/सेवाओं के लिए आपकी परीक्षा की गई थी? —

9. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था? —

10. कब और कहाँ मेडिकल बोर्ड हुआ? —

11. मेडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम यदि आपको बताया गया हो अथवा आपको मालूम हो। —

मैं घोषित करता हूँ कि जहाँ तक मेरा विश्वास है, ऊपर दिए गए सभी जवाब सही और ठीक हैं।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर—

मेरे सामने हस्ताक्षर किए।

बोर्ड के चेयरमैन के हस्ताक्षर—

नोट—उपर्युक्त कथन की यथार्थता के लिए उम्मीदवार जिम्मेदार होगा। जान-बूझ कर किसी सूचना को छुपाने से वह नियुक्ति खो बैठने की जोखिम लेगा और यदि वह नियुक्त हो भी जाए तो वार्धक्य निवृत्ति भत्ता (सुपरएनुएशन अलाउंस) या उपदान (पेंशुटी) के सभी दावों से हाथ धो बैठेगा।

(ख) — की शारीरिक परीक्षा की मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट।

1. सामान्य विकास : अच्छा — बीच का —
कम — घोषण : पतला — औसत —
मोटा — कद (जूते उतार कर) —
— वजन — अत्युत्तम वजन —
— कब था ? —
वजन में कोई हाल ही में हुआ परिवर्तन —
तापमान —
छाती का घेर —

(1) पूरा सांस खींचने पर —

(2) पूरा सांस निकालने पर —

2. रवचा — कोई जाहिरी 'बीमारी' —

3. नेत्र —

(1) कोई बीमारी —

(2) रतौंधी —

(3) कण्ठ विज्ञान का दोष —

(4) दृष्टि क्षेत्र (फील्ड ऑफ विजन) —

(5) दृष्टि की पकड़ (विजुअल एक्सिटी) —

दृष्टि की पकड़	चश्मे के बिना	चश्मे से	चश्मे की पावर गोल सिलि० अक्ष
(1)	(2)	(3)	(4)
दूर की नजर	दा० ने० बा० ने०		
पास की नजर	दा० ने० बा० ने०		
हाइपरमेट्रोपिया (व्यक्त)	दा० ने० बा० ने०		

4. कान : निरीक्षण— सुनना :
दायाँ कान— बायाँ कान—

5. प्रथिया— थाइराइड—

6. दाँतों की हालत—

7. श्वसन तंत्र (रेस्पिरैटरी सिस्टम) क्या शारीरिक परीक्षा करने पर साँस के अंगों में किसी विलक्षणता का पता लगा है ? यदि पता लगा है तो विलक्षणता का पूरा ब्यौरा दें ?

8. परिसंचरण तंत्र (सर्कुलैटरी सिस्टम)

(क) हृदय : कोई आंगिक क्षति (आर्गेनिक लीजन)?—

गति (रेट) :

बड़े होने पर :

25. बार कुदाए जाने के बाद—

कुदाए जाने के 2 मिनट बाद—

(ख) ब्लड प्रेशर— सिस्टोलिक—
डायस्टोलिक—

9. उदर (पेट) : पैर— दाव वेदना
(टेंडरनेस) हार्निया—

(क) दबा कर मालूम पड़ना, जिगर— तिल्ली—
गुर्वे— द्यूमर—

(ख) बवासीर के मस्से— फिस्चुला—

10. तांत्रिक तंत्र (नर्वस सिस्टम) तंत्र का या मानसिक
अशक्तता का संकेत—

11. चाल तंत्र (लोकोमोटर सिस्टम)
कोई विलक्षणता—

12. जनन-मूल तंत्र (जेनिटोयूरिनरी सिस्टम) हाइड्रोसील,
वेरिकोसील आदि का कोई संकेत ।

मूत्र परीक्षा—

- (क) कैसा दिखाई पड़ता है ।
- (ख) स्पेसिफिक ग्रेविटी (अपेक्षित गुरुत्व) ।
- (ग) एल्ब्युमेन
- (ख) शक्कर
- (ङ) कास्ट
- (च) केशिकाएं (सेल्स)

13. छाती की एक्स-रे परीक्षा की रिपोर्ट

14. क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई ऐसी बात है जिससे वह भारतीय वन सेवा की इयूटी को दक्षतापूर्वक निभाने के लिए अयोग्य हो सकता है ?

15. क्या वह भारतीय वन सेवा में दक्षतापूर्वक और निरंतर इयूटी निभाने के लिए सभी तरह से योग्य पाया गया है ?

नोट :—बोर्ड को अपना जांच-परिणाम निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग में रिकार्ड करना चाहिए ।

(i) योग्य (फिट)

(ii) अयोग्य (अनफिट), जिसका कारण—

(iii) अस्थायी रूप से अयोग्य, जिसका कारण—
अध्यक्ष (चेयरमैन)—

स्थान— सदस्य—

तारीख— सदस्य—

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मन्त्रालय
(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 3 दिसम्बर 1969

संकल्प

सं० 20-1/69-एल० बी०-III—इस मन्त्रालय के संकल्प सं० 20-20/69-एल० बी०-III दिनांक 29 अक्तूबर, 1969 के द्वारा केन्द्रीय गोसम्बर्धन परिषद् को पहली दिसम्बर, 1969 से विघटित करने के परिणामस्वरूप, भारत सरकार एतद्वारा संकल्प के पैरा 2(ख) में उल्लिखित परिषद् की समस्त सम्पत्ति का हस्तान्तरण करती है और प्रशासन निवेशक, विस्तार निदेशालय, कृषि विभाग को, जैसा भी वह ठीक समझे, उनके निपटान की व्यवस्था करने के लिये नामोदिष्ट भी करती है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति समस्त राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्रों और भारत सरकार के मन्त्रालयों के विभागों, योजना आयोग, मन्त्रिमण्डल सचिवालय, प्रधान मन्त्री सचिवालय, लोकसभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय और

प्रशासन निदेशक, विस्तार निदेशालय, कृषि विभाग को भेजी जाती है।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्वसाधारण की जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

बी० पी० गुलाटी, उप सचिव

संकल्प

नई दिल्ली-1, दिनांक 1 जनवरी 1970

सं० 3-5/69-वन विकास—भारत सरकार के तत्कालीन कृषि मन्त्रालय के संकल्प सं० 6-20/49-एफ० दिनांक 19 जून, 1950 की अभिवृद्धि में, जिसे समय समय पर संशोधित किया जाता रहा है, भारत सरकार ने यह निर्णय किया है कि (i) हरियाणा राज्य के वनों के सम्बन्धित मन्त्री, और (ii) चण्डीगढ़ प्रशासन के मुख्यायुक्त भी तदाधीन गठित केन्द्रीय वन मण्डल के सदस्य होंगे।

2. आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति समस्त सम्बन्धितों को भेजी जाए।

3. यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्वसाधारण की जानकारी के लिए संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

दिनांक 2 जनवरी 1970

सं० 3-5/69-वन विकास—भारत सरकार के खाद्य, कृषि सामुदायिक विकास और सहकारिता मन्त्रालय (कृषि विभाग) के संकल्प सं० 3-4/66-वन विकास, दिनांक 5 जुलाई, 1966 का आंशिक आशोधन करते हुए, भारत सरकार ने निर्णय किया है कि उपरोक्त के अन्तर्गत पुनर्गठित, केन्द्रीय वन मंडल की स्थायी समिति के सम्बन्ध में वर्तमान प्रविष्टि "(i) उत्तरी क्षेत्र" को निम्न द्वारा प्रतिस्थापित किया जाये:-

(1) उत्तरी क्षेत्र: जम्मू और काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान (दिल्ली और चण्डीगढ़ को भी स्थायी समिति की बैठकों से पूर्व की बैठकों के लिये इसी क्षेत्र में सम्मिलित किया जायेगा)।

2. आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति समस्त सम्बन्धितों को भेजी जाए।

3. यह भी आदेश दिया जाता है कि सर्व साधारण की जानकारी के लिये संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

मदन लाल विधानी, उप सचिव

संचार (कम्युनिकेशन) विभाग

नियम

नई दिल्ली, दिनांक 25 अक्टूबर 1969

निम्नांकित पदों की रिक्त जगहों पर नियुक्ति के लिये संघ-लोक-सेवा-आयोग अप्रैल, 1970 से एक प्रतिযোগिता परीक्षा लेगी जिसके लिये संबंधित मंत्रालयों/विभागों की सहमति से जिन

नियमों का निर्धारण किया गया है वे सामान्य सूचना के लिये नीचे दिये जा रहे हैं :

- (1) इंजीनियर (श्रेणी-1) बेतार (वायरलेस) आयोजना और समन्वय स्कंध (कोऑर्डिनेशन विंग) मानीटरी संगठन, संचार विभाग।
- (2) सहायक इंजीनियर (श्रेणी-2), विदेश संचार सेवा, संचार विभाग।
- (3) तकनीकी सहायक (श्रेणी-2—अराजपत्रित), विदेश संचार सेवा, संचार विभाग।
- (4) सहायक स्टेशन इंजीनियर (श्रेणी-1) आकाशवाणी (आल इण्डिया रेडियो), सूचना और प्रसारण मंत्रालय।
- (5) तकनीकी अधिकारी (श्रेणी-1)—नागर विमानन (एवियेशन) विभाग, पर्यटन तथा नागर विमानन मंत्रालय।
- (6) संचार अधिकारी (श्रेणी-1)—नागर विमानन विभाग, पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय।

2. परीक्षा के फलस्वरूप जितनी खाली जगहों पर नियुक्ति की जानी है उनकी संख्या आयोग द्वारा भेजे गये नोटिस में सूचित की जायेगी। सरकार द्वारा जितनी जगहें निर्धारित कर दी जायेंगी उतनी जगहें अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के उम्मीदवारों के लिये आरक्षित रखी जायेंगी।

अनुसूचित जाति/जनजाति के उन जातियों/जनजातियों का तात्पर्य है जिनका उल्लेख अनुसूचित जाति/जनजाति सूची (आशोधन) (माडिफिकेशन) आदेश 1956 में तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आदेश (संशोधन) (एमेंडमेंट) अधिनियम, 1956 में, संविधान (जम्मू और काश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश 1956 में, संविधान (अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह) अनुसूचित जनजाति आदेश 1962 में, संविधान (दादरा और नगर हवेली) अनुसूचित जाति आदेश 1962 में, संविधान (पाण्डिचेरी) अनुसूचित जाति आदेश, 1964 में, संविधान अनुसूचित जनजाति (उत्तर प्रदेश) आदेश 1967 में, संविधान (गोवा, दमन और दीव (ड्यू) अनुसूचित जाति आदेश 1968 में तथा संविधान (गोवा, दमन, दीव (ड्यू) अनुसूचित जनजाति आदेश 1968 में है।

3. इस परीक्षा का संचालन संघ-लोक-सेवा-आयोग द्वारा उस रीति के अनुसार किया जायेगा जिसका निर्धारण इन नियमों के परिशिष्ट-1 में किया गया है।

जिन तारीखों की और जिन स्थानों पर यह परीक्षा की जायेगी उनका निर्धारण आयोग करेगा।

4. यह आवश्यक है कि उम्मीदवार या तो :

- (क) भारत का नागरिक हो अथवा
- (ख) सिक्किम की प्रजा हो अथवा
- (ग) नेपाल की प्रजा हो अथवा
- (घ) भूटान की प्रजा हो अथवा

(च) ऐसा तिब्बती शरणार्थी हो जो 1 जनवरी, 1962 के पहले ही भारत में स्थायी रूप से बसने की इच्छा से आया हो, अथवा

(छ) भारतीय मूल का ऐसा व्यक्ति हो जो पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, पूर्वी अफ्रीका के कीनिया, यूगांडा या तांजानिया के संयुक्त गणराज्य (जिसे पहले टैन्ज़ानिका और जंजीबार कहा जाता था) से भारत में स्थायी रूप से बसने की इच्छा से प्रवासी (माइग्रेट) के रूप में आया हो।

शर्त यह है कि ऊपर की (ग) (घ) (च) और (छ) कोटि के उम्मीदवार ऐसे हों कि उनके पक्ष में भारत सरकार ने पात्रता (एलिजिबिलिटी) का प्रमाण पत्र जारी कर दिया हो।

लेकिन ऐसे उम्मीदवारों के लिये जो निम्नांकित कोटियों में आते हैं इस पात्रता के प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं होगी :

- (1) ऐसे व्यक्ति जो 1948 की उन्नीसवीं जुलाई से पहले ही पाकिस्तान से भारत को प्रवासी के रूप में आ गये थे और तभी से सामान्य रूप से भारत में निवास कर रहे हैं।
- (2) ऐसे व्यक्ति जो 1948 की उन्नीसवीं जुलाई को अथवा इसके बाद कभी भी पाकिस्तान से भारत को प्रवासी के रूप में आये थे और जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद 6 के अन्तर्गत अपना पंजीकरण भारत के नागरिक के रूप में करा लिया है।
- (3) (छ) कोटि के ऐसे व्यक्ति जो नागरिक तो नहीं हैं लेकिन जो संविधान लागू होने के दिन अर्थात् 26 जनवरी 1950 के पहले से ही भारत सरकार की सेवा में प्रविष्ट हो चुके हैं और जो तभी से बिना किसी सेवा विच्छेद के लगातार नौकरी में रहे आये हैं। ऐसा कोई व्यक्ति जो 26 जनवरी 1950 के बाद सेवा विच्छेद के उपरान्त या तो नौकरी में पुनः प्रविष्ट हुआ है अथवा जो पुनः प्रविष्ट हो सकता है उसके लिये पात्रता का प्रमाण पत्र सामान्य तौर पर आवश्यक रहेगा।

जिस उम्मीदवार के लिये पात्रता का प्रमाणपत्र आवश्यक है उसे परीक्षा में बैठने दिया जा सकता है और साथ ही साथ अस्थायी रूप से नियुक्त भी किया जा सकता है बशर्ते कि सरकार द्वारा उसे आवश्यक प्रमाण पत्र दिया जाये।

5. (क) इस परीक्षा के उम्मीदवार की उम्र अगस्त 1970 को 20 वर्ष से अधिक लेकिन 25 वर्ष से कम होनी चाहिये, दूसरे शब्दों में उसका जन्म 2 अगस्त 1945 से न तो पहले हुआ होना चाहिये और न 1 अगस्त 1950 के बाद।

(ख) निम्नांकित कोटि के सरकारी कर्मचारियों के लिये ऊपर निर्धारित उम्र की ऊपरी सीमा में पांच साल तक की छूट दी जा सकेगी शर्त यह है कि वे अपने विभागों की खाली जगहों के लिये ही आवेदन कर रहे हों :

- (1) ऐसे कर्मचारी जो विभाग विशेष के स्थायी पदों पर मूल रूप से नियुक्त हैं। यह रियायत परीक्षा काल में

उन व्यक्तियों को नहीं मिल सकेगी जो किसी स्थायी पद पर परीक्षा पर नियुक्त किये गये होंगे।

- (2) ऐसे उम्मीदवार जिन्होंने विभाग विशेष में या तो कम से कम तीन वर्ष की लगातार सेवा कर ली है अथवा जो 1 अगस्त 1970 को अथवा उसके पहले ही तीन वर्ष की लगातार सेवा पूरी कर लेवेंगे।

(ख) शर्त यह है कि किसी भी उम्मीदवार को ऊपरलिखित ऊपरी आयु सीमा की रियायत के अधीन परीक्षा में तीन बार से अधिक प्रतियोगिता नहीं करने दी जावेगी।

(ग) ऊपर निर्धारित ऊपरी उम्र सीमा में निम्नांकित रियायतें और भी दी जा सकेंगी :

- (1) अधिक-से-अधिक पांच वर्ष तक की रियायत उन उम्मीदवारों के लिये जो अनुसूचित जातियों अथवा अनुसूचित जनजातियों के सदस्य हों।
- (2) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत उन उम्मीदवारों के लिये जो वास्तविक रूप से पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित हो कर आये हैं और जो पहली जनवरी 1964 को अथवा उसके बाद भारत में प्रवासी की हैसियत में आये हैं ;
- (3) अधिक-से-अधिक आठ वर्ष तक की रियायत उन उम्मीदवारों के लिये जो न केवल किसी अनुसूचित जाति अथवा किसी अनुसूचित जनजाति के सदस्य हैं वरन जो वास्तविक रूप से पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित होकर आये हैं और जो पहली जनवरी 1964 को अथवा उसके बाद भारत में प्रवासी की हैसियत में आये हैं ;
- (4) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत उन उम्मीदवारों के लिये जो पाण्डिचेरी के संघ-शासित क्षेत्र के निवासी हैं और जिन्होंने किसी भी अवस्था (स्टेज) पर फ्रेंच भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की है ;
- (5) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत भारतीय मूल के उन उम्मीदवारों के लिये जिन्हें वास्तविक रूप से श्रीलंका से भारत देश को वापस भेजा गया है (रिपेट्रियेटेड) और जो अक्टूबर 1964 के भारत-श्रीलंका करार के अधीन पहली नवम्बर 1964 को अथवा इसके बाद भारत में प्रवासी के रूप में आये हैं (माइग्रेटेड);
- (6) अधिक-से-अधिक आठ वर्ष तक की रियायत भारतीय मूल के उन उम्मीदवारों के लिये जो न केवल किसी अनुसूचित जाति अथवा किसी अनुसूचित जनजाति के सदस्य हैं वरन जिन्हें वास्तविक रूप में श्रीलंका से भारत देश को वापस भेजा गया है और जो अक्टूबर 1964 के भारत-श्रीलंका करार के अधीन पहली नवम्बर 1964 को अथवा इसके बाद भारत में प्रवासी के रूप में आये हैं ;

- (7) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत उन उम्मीदवारों के लिये जो भारतीय मूल के हैं और जो कीनिया, यूगाण्डा या तान्जानिया के संयुक्त गणराज्य (जिसे पहले टेम्बोनिका और जन्जीबार कहा जाता था) से भारत प्रवासी के रूप में आये हैं ;
- (8) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत भारतीय मूल के उन उम्मीदवारों के लिये जो वास्तविक रूप में बर्मा से भारत को वापस भेजे गये हैं और जो पहली जून 1963 को या उसके बाद भारत में प्रवासी के रूप में आये हैं ।
- (9) अधिक-से-अधिक आठ वर्ष तक की रियायत भारतीय मूल के उन उम्मीदवारों के लिये जो न केवल किसी अनुसूचित जाति अथवा किसी अनुसूचित जनजाति के सदस्य हैं वरन जो वास्तविक रूप से बर्मा से भारत को वापस भेजे गये हैं और जो पहली जून 1963 को या उसके बाद भारत में प्रवासी के रूप में आये हैं ;
- (10) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत रक्षा सेवा कार्मिकों में से उन उम्मीदवारों के लिये जो किसी विदेशी शक्ति से युद्ध सम्बन्धी अथवा अशांत क्षेत्रों के आपरेशनों के दौरान नियोग्य (डिस्पेजिबल) हो गये हैं और फलस्वरूप जिन्हें सेवामुक्त कर दिया गया है । लेकिन यह रियायत उन उम्मीदवारों को नहीं मिल सकेगी जो पहले ही पांच परीक्षाओं में बैठ चुके हैं ;
- (11) अधिक-से-अधिक आठ वर्ष तक की रियायत रक्षा सेवा कार्मिकों में से उन उम्मीदवारों के लिये जो न केवल किसी विदेशी शक्ति से युद्ध संबंधी अथवा अशांत क्षेत्रों के आपरेशनों के दौरान नियोग्य हो गये हैं और फलस्वरूप जिन्हें सेवामुक्त कर दिया गया है वरन जो किसी अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति के सदस्य हैं । लेकिन यह रियायत उन उम्मीदवारों को नहीं मिल सकेगी जो पहले ही दस परीक्षाओं में बैठ चुके हैं ; और
- (12) अधिक-से-अधिक तीन वर्ष तक की रियायत उन उम्मीदवारों के लिये जो गोवा, दमन, दीव (डियू) के संघ शासित क्षेत्रों के निवासी हों ।

विशेष ध्यान (1) इस नियम के संदर्भ में यदि किसी उम्मीदवार ने किसी एक या अधिक पदों के लिये प्रतियोगिता की है तो सामान्यतया यही मानकर चला जायेगा कि उसने उस परीक्षा के अन्तर्गत आनेवाले सभी पदों के लिये एक बार प्रयास किया है ।

यदि एक उम्मीदवार किसी एक या अधिक विषयों के प्रश्न-पत्रों में भी बैठ जाता है तो यही मान कर चला जायेगा कि उसने परीक्षा में प्रयास कर लिया है ।

विशेष ध्यान (2) यदि कोई उम्मीदवार उम्मीदवारों की ऊपर लिखित (ख) रियायत के अन्तर्गत परीक्षा में बैठने दिया गया है तो उसकी उम्मीदवारी तब रद्द कर दी जा सकती है जब परीक्षा के लिये आवेदन दे देने के बाद लेकिन परीक्षा में बैठने के पहले या बाद वह या तो उस

नौकरी से इस्तीफा दे देता है या विभाग द्वारा ही उसकी नौकरी समाप्त कर दी जाती है (टर्मिनेटेड) । लेकिन परीक्षा के लिये आवेदन करने के बाद यदि उस नौकरी या पद से उसकी छंटनी (रिट्रेजमेंट) कर दी जाती है तो भी उसकी पात्रता में कोई अन्तर नहीं आयेगा ।

यदि परीक्षा के लिये विभाग को आवेदन पत्र दे देने के बाद उम्मीदवार का स्थानान्तरण किसी अन्य विभाग/कार्यालय को कर दिया जाता है तो भी उम्मीदवार की रियायत के अन्तर्गत उस पद के लिये प्रतियोगिता करने की उसकी पात्रता में कोई अन्तर नहीं आता है जिसके लिये वह स्थानान्तरण के पहले पात्र था परन्तु शर्त यह है कि मूल (पेरेंट) विभाग द्वारा उसका आवेदन अप्रेषित कर दिया गया हो ।

ऊपर वर्णित परिस्थितियों के अलावा निर्धारित उम्र की सीमा में किसी भी हालत में छूट नहीं दी जा सकेगी ।

6. उम्मीदवार के लिये यह आवश्यक है कि उसने

(क) भारत के केन्द्रीय अथवा राज्य विधान मण्डलों के अधिनियम के अनुसार निगमित (इन्कारपोरेटेड) विश्वविद्यालय की अथवा संसद के अधिनियम के अनुसार स्थापित किसी अन्य शिक्षा संस्था की, अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत जिन संस्थाओं को विश्वविद्यालयों के समकक्ष घोषित किया गया है उनकी इंजीनियरी डिग्री प्राप्त की होनी चाहिये, अथवा

(ख) “वि इंस्टिट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इण्डिया)” की सह-सदस्यता (एसोसियेटेड मेम्बरशिप) की परीक्षा के अनुभाग क और ख (सेक्शन ए० और बी०) को पूर्णरूप से (अर्थात् सभी प्रश्न-पत्रों में) पास कर लिया हो । यदि उसे इस परीक्षा के कुछ अंश या अंशों से छूट दी गई है और उसने कुछ अंशों ही में परीक्षा दी है तो काम नहीं चलेगा ; अथवा

(ग) ऐसे विदेशी विश्वविद्यालयों/कालेजों/संस्थाओं की इंजीनियरी डिग्री/डिप्लोमा ऐसी परिस्थितियों में प्राप्त की हो जिनके लिये सरकार ने समय-समय पर मान्यता प्रदान की है ; अथवा

(घ) “वि इंस्टिट्यूशन ऑफ टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियर्स (इण्डिया)” की स्नातक (ग्रेजुएट) सदस्यता (मेम्बरशिप) परीक्षा पूर्ण रूप से (अर्थात् सभी प्रश्न-पत्रों में) पास कर ली हो । यदि उसे इस परीक्षा के कुछ अंश या अंशों से छूट दी गई है और उसने कुछ अंशों ही में परीक्षा दी है तो काम नहीं चलेगा ; अथवा

(च) बेतार संचार (वायरलेस कम्युनिकेशन) इलेक्ट्रानिकी, रेडियो भौतिकी (फिजिक्स) या रेडियो इंजीनियरी के विशेष विषय सहित एम० एस०-सी० या उसके समकक्ष डिग्री प्राप्त की है ; अथवा

(छ) “वि इंस्टिट्यूशन ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एण्ड रेडियो इंजीनियर्स लंडन” की नवम्बर 1959 के बाद की ग्रेजुएट मेम्बरशिप परीक्षा पास की है ।

दि इंस्टिट्यूशन ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एण्ड रेडियो इंजीनियर्स, लंदन की उन प्रेजुएंट मेंबरशिप परीक्षाओं को जो नवम्बर 1959 के पहले दी गई हैं तभी मान्यता दी जा सकेगी जब वे निम्नांकित शर्तें पूरी करती हों :

(1) यदि उम्मीदवार ने नवम्बर 1959 के पहले की परीक्षा पास की है तो यह आवश्यक है कि वह निम्नांकित अतिरिक्त विषयों की परीक्षा में भी बैठे और उनमें सफलता प्राप्त की हो।

(क) (1959 के बाद की योजना के अनुभाग क(ए०) में निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार) विद्युत इंजीनियरी के सिद्धांत और अनुप्रयोग (एप्लिकेशन);

(ख) (1959 के बाद की योजना के अनुभाग ख (बी०) में निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार) गणित-2;

(2) ऊपर की शर्त (1) पूरी कर ली गई है इसके प्रमाण स्वरूप संबंधित उम्मीदवार को दि इंस्टिट्यूशन ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एण्ड रेडियो इंजीनियर्स, लंदन से प्राप्त प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा।

नोट 1 : अपवाद स्वरूप आयोग ऐसे उम्मीदवारों को भी शैक्षणिक दृष्टि से योग्य मान सकता है जिनके पास इस नियम में निर्धारित कोई योग्यताएं तो नहीं हैं लेकिन जिन्होंने अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित ऐसी परीक्षाएं पास की हैं जिनका स्तर आयोग की राय में ऐसा है कि परीक्षा में दाखिला देना उचित सिद्ध होता है।

नोट 2 : यदि एक उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा में बैठ चुका है जिसमें पास हो जाने पर वह इस परीक्षा में बैठने का हकदार हो जाता है तो वह परीक्षा में दाखिले के लिये आवेदन कर सकता है भले ही ऐसी परीक्षा के परिणाम की सूचना उसे अभी न मिली हो। एक ऐसा उम्मीदवार जो ऐसी अर्हक (क्वालीफाइंग) परीक्षा में बैठना चाहता है वह भी आवेदन कर सकता है परन्तु शर्त यह है कि अर्हक परीक्षा इस प्रतियोगिता परीक्षा के शुरू होने से पहले ही समाप्त हो जाने वाली हो। ऐसे उम्मीदवारों को परीक्षा में तो बैठने दिया जायेगा परन्तु शर्त यह है कि वे अन्यथा इसके पास हों परन्तु ऐसी अभिस्वीकृति अंतःकालीन (प्राचीन) ही मानी जायेगी और यदि वे जल्दी-से-जल्दी इस बात के प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाते हैं कि उन्होंने अर्हक परीक्षा पास कर ली है तो इस अभिस्वीकृति को रद्द कर दिया जा सकता है। हर हालत में उन्हें अर्हक परीक्षा पास करने के प्रमाण इस परीक्षा के शुरू होने के दो महीने के भीतर भेज देना पड़ेगा।

नोट 3 : यदि किसी उम्मीदवार के पास किसी विदेशी विश्व-विद्यालय की ऐसी डिग्री है जिसे सरकार से मान्यता प्राप्त नहीं है लेकिन यह उम्मीदवार यदि अन्यथा योग्य है तो वह भी आयोग को आवेदन कर सकता है और उसे भी आयोग के निर्णय के अनुसार परीक्षा बैठने दिया जा सकता है।

7. उम्मीदवार को आयोग के नोटिस के अनुबंध 1 में निर्धारित फीस अवश्य ही देनी चाहिये।

8. यदि कोई उम्मीदवार किसी तरह की स्थायी अथवा अस्थायी सरकारी नौकरी पर काम कर रहा है तो यह आवश्यक है कि परीक्षा में बैठने के पहले ही वह इस बारे में विभाग के अध्यक्ष की अनुमति प्राप्त कर ले।

9. परीक्षा में प्रवेश पाने के लिये उम्मीदवार पात्र है या नहीं इसके संबंध में आयोग का निर्णय अंतिम रहेगा।

10. यदि किसी उम्मीदवार के पास आयोग द्वारा जारी किया गया प्रवेश प्रमाण-पत्र (सर्टीफिकेट ऑफ एडमिशन) नहीं होगा तो उसे परीक्षा में नहीं बैठने दिया जायेगा।

11. ऐसे उम्मीदवार जो किसी अन्य उपाय द्वारा अपनी उम्मीदवारी के पक्ष में समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करते हैं परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किए जा सकते हैं।

12. ऐसे उम्मीदवार जिन्हें आयोग ने या तो अभी या पहले कभी परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए प्रतिरूपण (इम्पसानेशन) का अथवा गढ़े हुए (फेब्रिकेटेड) दस्तावेज पेश करने का अथवा ऐसे दस्तावेज पेश करने का जिन्हें छेड़ा गया हो (टेम्पर्ड) अथवा ऐसे बयान देने का जो या तो (इन्करेक्ट) गलत हैं अथवा मिथ्या (फाल्स) हैं अथवा महत्वपूर्ण सूचना न बतलाने का (सप्रेमिशिंग) अथवा अन्य किसी तरह की अनियमितताएं (इरेग्युलैरिटी) करने का अथवा अनुचित (इम्प्रोपर) उपाय अपनाने का या तो दोषी पाया जाता है अथवा दोषी घोषित किया जाता है अथवा परीक्षा भवन में अनुचित तरीके अपनाने का अथवा अनुचित तरीके को अपनाने की कोशिश करने का अथवा परीक्षा भवन में कदाचार (मिसबिहेवियर) करने का दोषी पाया जाता है तो उस पर वाण्डिक अभियोजन (क्रिमिनल प्रोसीक्यूशन) की कार्यवाही तो की ही जा सकती है साथ ही—

(क) उसे स्थायी रूप से अथवा विनिश्चित (स्पेमिक) समय के लिये विवर्जित (डिबांड) किया जा सकता है।

(1) आयोग द्वारा आयोजित किसी भी परीक्षा में प्रवेश पाने से अथवा उम्मीदवारों के चुनाव के लिये आयोग द्वारा आयोजित किसी भी इंटरव्यू से—इस विवर्जन की कार्यवाही आयोग द्वारा की जायेगी; और

(2) केन्द्रीय सरकार द्वारा उनके अधीन नौकरियों के संबंध में विवर्जन किया जा सकता है।

(ख) यदि वह वर्तमान में किसी सरकारी नौकरी पर है तो उस पर उपयुक्त नियमों के अनुसार अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

13. ऐसे उम्मीदवारों को जिन्हें लिखित परीक्षा में आयोग द्वारा निर्धारित न्यूनतम अर्हक (क्वालीफाइंग) अंक मिलते हैं, आयोग के निर्णय पर निर्भर रहते हुए उस इंटरव्यू के लिये बुलाया जा सकता है जिसमें व्यक्तित्व परीक्षण किया जाना है।

14. परीक्षा के बाद आयोग उम्मीदवारों के नामों को उन्हें अंतिम रूप से मिले कुल अंकों के आधार पर एक गुणानुक्रम (आर्डर ऑफ मेरिट) में व्यवस्थित करेगा। आयोग इसी क्रम में उतने उम्मीदवारों की नियुक्ति की सिफारिश करेगा जितने परीक्षा के परिणाम-

स्वरूप योग्य पाये जाते हैं। इस तरह सिफारिश किये गये उम्मीदवारों की संख्या अधिक-से-अधिक उतनी ही रहेगी जितने अनारक्षित (अनरिजर्व्ड) पदों पर नियुक्ति इस परीक्षा के परिणाम पर करने का निर्णय है। परन्तु शर्त यह है कि किसी भी ऐसे उम्मीदवार को जो अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजातियों का सदस्य है और जिसमें इतनी योग्यता तो नहीं पाई गई है जितनी आयोग ने उस पद के लिये मानक के रूप में निर्धारित कर रखी है, तो भी प्रशासन में दक्षता की समुचित आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये आयोग जिसे नियुक्ति के लिये उपयुक्त घोषित कर देता है, उस की सिफारिश उन पदों पर नियुक्ति के लिये की जायेगी जो अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के सदस्यों के लिये क्रमशः आरक्षित रखी गई है।

15. आयोग अपने निर्णय (डिस्क्रिशन) के अनुसार यह निश्चित करेगा कि प्रत्येक उम्मीदवार को किस तरह और किस रूप में परीक्षा का परिणाम सूचित किया जाये। आयोग उम्मीदवारों के साथ इस विषय पर पत्र-व्यवहार नहीं करेगा।

16. उम्मीदवार ने आवेदन के समय विभिन्न पदों के लिये जो वरीयता (प्रिफरेंस) जाहिर की थी इस परीक्षा के परिणाम पर नियुक्ति करते समय उस पर समुचित विचार किया जायेगा।

17. परीक्षा में पांस हो जाने से ही किसी को नियुक्ति का अधिकार प्राप्त नहीं हो जाता। ऐसी सभी पृष्ठताछ के बाद जिसे आवश्यक समझा जायेगा शासन यह निश्चय करेगा कि उम्मीदवार हर दृष्टि से जनसेवा के लिये उपयुक्त है अथवा नहीं।

18. उम्मीदवार को शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिये और उसमें ऐसे कोई शारीरिक दोष नहीं होना चाहिये जिनके इस सेवा के एक अधिकारी के कर्तव्य पालन में बाधक बनने की आशंका हो। परिस्थितियों के अनुसार शासन अथवा नियुक्ति प्राधिकारी (एम्पाईटिंग अथॉरिटी) द्वारा निर्धारित शारीरिक परीक्षा के पर्याप्त यदि यह पाया जाता है कि किसी उम्मीदवार का स्वास्थ्य निर्धारित स्तर का नहीं है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जायेगी। ऐसे सभी उम्मीदवारों का जिन्हें व्यक्तिगत परीक्षण के लिये योग्य घोषित किया जाता है उसी स्थान पर शारीरिक परीक्षण भी किया जायेगा यहाँ उन्हें इंटरव्यू के लिये बुलाया जाता है। बड़ या तो इंटर्व्यू के तुरंत पहले किया जायेगा अथवा तुरंत बाद। उम्मीदवारों को स्वास्थ्य परीक्षक मंडल (मेडिकल बोर्ड) को फीस के रूप में 16.00 रुपये देना पड़ेगा। उम्मीदवार की शारीरिक परीक्षा की गई है इस तथ्य का न तो यह मतलब होगा और न यह विवक्षा (इम्प्लिकेशन) ही होगी कि उसकी नियुक्ति पर विचार किया ही जायेगा।

निराशा से बचने के लिये उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश पाने के लिये आवेदन करने के पहले ही स्वतः अपनी शारीरिक परीक्षा ऐसे सरकारी चिकित्सा अधिकारी (मेडिकल आफिसर) से करा लें जिसका स्तर सिविल सर्जन के बराबर का हो राजपत्रित पदों पर नियुक्ति के पहले उम्मीदवारों की जिस तरह की स्वास्थ्य परीक्षा की जायेगी और उनसे जिस तरह के स्वास्थ्य के स्तर की अपेक्षा की जाती है इस का विवरण परिशिष्ट 2 में दिया गया है। रक्षा सेवा के ऐसे भूतपूर्व (एक्स) कार्मिकों (पर्सनल) के

स्वास्थ्य के स्तर में जो विकलांग हो चुके हैं (डिम्पबिल्ड), पदों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए रियायतें दी जायेंगी।

19. (क) ऐसा कोई भी पुरुष उम्मीदवार जिसकी एक से अधिक जीवित पत्नी है या जिसने पहली पत्नी के जीवित रहते हुए फिर से ऐसी शादी की है जो पहली पत्नी के जीवनकाल में होने के कारण प्रभावहीन (वायड) रहती है, ऐसे किसी पद पर जो इस परीक्षा के परिणामस्वरूप भरे जाना है, तब तक नियुक्त नहीं किया जायेगा जब तक कि शासन संतुष्ट नहीं हो जाता है कि ऐसा करने के लिये विशेष कारण थे और तदनुसार ऐसे पुरुष उम्मीदवार को जब तक इस नियम के बंधन से मुक्त नहीं कर दिया जाता है।

(ख) इस प्रतियोगिता परीक्षा के परिणाम पर जिन पदों पर नियुक्ति की जानी है उन पर किसी ऐसी महिला उम्मीदवार की नियुक्ति तब तक नहीं की जायेगी जिसकी शादी इसलिये प्रभावहीन है कि या तो उसके पति की पहली पत्नी उससे शादी के समय जीवित थी अथवा उसने ऐसे व्यक्ति से शादी की है जिसकी शादी के समय एक और पत्नी जीवित थी जब तक कि भारत सरकार संतुष्ट नहीं हो जाती कि ऐसा करने के लिये विशेष कारण थे और तदनुसार ऐसी महिला उम्मीदवार को जब तक इस नियम के बंधन से मुक्त नहीं कर दिया जाता है।

20. जिन पदों के लिये इस परीक्षा द्वारा भर्ती कां जा रही है उनका थोड़े में ब्यौरा परिशिष्ट 3 में दिया जा रहा है।

सुजान सिंह प्रभू, अवर सचिव

परिशिष्ट 1

1. परीक्षा का संचालन निम्नांकित योजना के अनुसार किया जावेगा :

खण्ड 1 : नीचे दर्शाये अनुसार अनिवार्य और वैकल्पिक प्रश्न-पत्र। इन प्रश्नों के लिये निर्धारित स्तर और पाठ्य विवरण इस परिशिष्ट की अनुसूची में दिया गया है।

खण्ड 2 : जिन उम्मीदवारों को आयोग द्वारा बुलाया जाता है। उनका व्यक्तिगत परीक्षण भी किया जावेगा जिसमें अधिकतम अंक 200 रहेंगे (रूपया नीचे पैरा 6 देखिये)।

2. लिखित परीक्षा के लिये नीचे लिखे विषय होंगे :

विषय	अवधि	अधिकतम अंक
(1)	(2)	(3)
घण्टे		
क. अनिवार्य		
(1) अंग्रेजी निबंध	1½	50
(2) सामान्य अंग्रेजी	1½	50
(3) सामान्य ज्ञान और सामयिक मामले (करेंट अफेयर्स)	1½	50
(4) विज्ञान का इतिहास	1½	50
(5) रेडियो भौतिकी (फिजिक्स)	3	100

(1)	(2)	(3)
(6) इलेक्ट्रानिक अवयव और पदार्थ	3	100
(7) व्यावहारिक (एप्लाइड) इलेक्ट्रानिक परिपथ	3	100
(8) विद्युत और यांत्रिक इंजीनियरी	3	100
	(विद्युत इंजीनियरी के लिये 60 अंक और यांत्रिक इंजीनियरी के लिये 40 अंक)	
ख : बैंकलिपिक : नीचे दिये विषयों में से कोई दो		
(1) ध्वानिकी के सिद्धांत	3	100
(2) संचारण (ट्रांसमिशन) लाइनें और जाल	3	100
(3) एण्टेना और तरंग (वेव) संचरण (प्रापेगेशन)	3	100
(4) गणित	3	100
(5) रडार और सूक्ष्म (माइक्रो) तरंग इंजीनियरी जिसमें यानसंचालन (नेवीगेशन) के रेडियो सहायक यंत्र (सेइस) भी सम्मिलित रहेंगे	3	100
(6) प्रसारण (ब्राडकास्टिंग) और टेली-विजन यंत्र	3	100

3—सभी प्रश्नपत्रों के उत्तर अंग्रेजी में ही लिखे जाने चाहिये।

4—उम्मीदवारों को उत्तर अपने हाथ से ही लिखना पड़ेगा। किसी भी हालत में उन्हें उत्तर लिखने के लिये अन्य व्यक्ति (स्काइब) की मदद लेने की अनुमति नहीं दी जावेगी।

5—यह आयोग के निर्णय (डिस्क्रीशन) पर निर्भर रहेगा कि परीक्षा के किसी अथवा सभी विषयों के लिये अर्हक (क्वालीफाइंग) अंक निर्धारित करे या नहीं।

6—व्यक्तित्व (परसनालिटी) परीक्षण के समय उम्मीदवार की नेतृत्व (लीडरशिप) क्षमता, पहल (इनीशियेटिव) क्षमता और जिज्ञासा, टैक और अन्य सामाजिक गुण, मानसिक और शारीरिक फुर्ती, व्यवहार कुशलता (प्रेक्टिकल एप्लिकेशन) और चारित्रिक सत्यनिष्ठा (इन्टीग्रिटी) का मूल्यांकन करते समय विशेष ध्यान दिया जायेगा।

7—केवल सतही ज्ञान के लिये अंक नहीं दिये जायेंगे।

8—लिखित विषयों के अधिकतम अंकों के 5 प्रतिशत तक अस्पष्ट लिखावट के लिये काटे जा सकते हैं।

9—इस परीक्षा के सभी विषयों में क्रमबद्ध, यथातथ्य (एक्जैक्ट) प्रभावशील (इफेक्टिव) और कम से कम शब्दों में भावों की सफल अभिव्यक्ति के लिये श्रेय दिया जायेगा।

परिशिष्ट 1 की अनुसूची

स्तर और पाठ्य विवरण

अंग्रेजी निबन्ध, सामान्य अंग्रेजी, सामान्य ज्ञान और सामयिक मामले तथा विज्ञान के इतिहास के प्रश्नपत्रों का स्तर ऐसा रहेगा जैसा इंजीनियरी/विज्ञान के स्नातकों से अपेक्षित रहता है। किसी भी विषय में प्रयोगात्मक परीक्षा नहीं ली जावेगी।

रेडियो भौतिकी, इलेक्ट्रानिक अवयव और पदार्थ, व्यावहारिक इलेक्ट्रानिक परिपथ तथा विद्युत और यांत्रिक इंजीनियरी के प्रश्नपत्र भारतीय विश्वविद्यालयों की इंजीनियरी डिग्री के स्तर के रहेंगे। ऐसे प्रश्न पूछे जायेंगे जिससे पता चल सके कि उम्मीदवार ने प्रत्येक विषय की आधारभूत बातों को भली भांति समझ लिया है या नहीं।

बैंकलिपिक प्रश्नपत्रों का स्तर इस तरह का रखा जावेगा कि उनको हल करने के लिये उसी तरह के विशद ज्ञान की जरूरत रहेगी जैसी इंजीनियरी समस्याओं के हल के लिये आवश्यक रहती है।

(1) अंग्रेजी निबन्ध—दिये गये अनेक विषयों में से एक पर निबन्ध अंग्रेजी में लिखा जायेगा।

(2) सामान्य अंग्रेजी—उम्मीदवारों की समझने की और सशक्त अंग्रेजी लिख सकने की क्षमता को परखने के लिये प्रश्न पूछे जायेंगे। सारांश (समरी) और प्रेसी बनाने के लिये उद्धरण (पैसेजेज) सामान्यतः दिये जायेंगे।

(3) सामान्य ज्ञान और सामयिक मामले—इस पत्र में ऐसे प्रश्न भी रखे जायेंगे जो सामयिक घटनाओं और दैनिक जीवन के अवलोकन और अनुभव संबंधी ज्ञान की परख करेंगे। इस प्रश्नपत्र में भारतवर्ष के इतिहास और भूगोल पर भी प्रश्न सम्मिलित किये जायेंगे।

(4) विज्ञान का इतिहास—विज्ञान के उद्भव और विकास का इतिहास। महान वैज्ञानिक और विज्ञान के क्षेत्र में उनकी देन।

(5) रेडियो भौतिकी—चुम्बकीय परिपथ। विद्युत : मात्रक, डाइइलेक्ट्रिक पदार्थ, चार्ज, प्रत्यावर्ती (आलटरनेटिंग) और दिष्ट (डायरेक्ट) धारा, ऐसे परिपथ जिनमें प्रतिरोधक, प्रेरकत्व और संधारित्र रहते हैं, अनुनाद (रेझोनेन्स), वरणक्षमता (सिलेक्टिविटी) पर क्यू का प्रभाव, धारा, बोल्टता और शक्ति संबंध, समस्वरित और असमस्वरित ऐम्पलीफायर, दोलित (आमिलेटर), आवृत्ति स्थायित्व, आवृत्ति गुणक (मल्टीप्लायर) और हार्मोनिक जनित, माड्युलक (माड्युलेटर)।

अभिग्रहण (रिसेप्शन) के सिद्धांत : डायरनिटी अभिग्रहण, सुपरहेटेरोडाइन अभिग्रहित (रिसेवर)।

रेडियो टेलीग्राफ, रेडियो टेलीफोन, संचार और प्रसारण तंत्र, तरंग दैर्ध्य और शक्ति पर विचार, सिग्नल-शोर अनुपात संबंधी अपेक्षाएं, तरंग संचरण और प्रेषण (ट्रांसमिशन) के सिद्धांत, एरियल प्रदायक (फीडर) और सुमेलन (मैचिंग) युक्तियां।

आयाम माड्युलन, आवृत्ति माड्युलन और फेज माड्युलन के सिद्धान्त, और संचार तंत्रों में उनके उपयोग।

भाषण और श्रवण उच्चारण (आर्टिकुलेशन) ध्वानिकी के मूलभूत सिद्धान्त ।

(6) इलेक्ट्रानिक अवयव (कॉपोनेंट) और पदार्थ—प्रतिरोधक, संधारित्र, प्रेरक और ट्रांसफार्मर—उनकी विशेषताएं (केरेक्टरिस्टिक्स), कार्यकलाप और अनुप्रयोग (एप्लिकेशन) ।

इलेक्ट्रानिक द्यूब जिनमें विशेष काम में आनेवाली द्यूबें भी सम्मिलित की जावेंगी—उनके कार्यकलाप और प्ररूपी (टिपिकल) अनुप्रयोग ।

अर्धचालक (सेमीकंडक्टर) युक्तियां, दिष्टकारी (रेक्टिफायर) और ट्रांजिस्टरों के सिद्धान्त, प्रकाश संवेदी (फोटो-सेन्सिटिव) युक्तियां ।

वायु विद्युत (पाइजो इलेक्ट्रिक) पदार्थ ।

विद्युतरोधी पदार्थ और तार, प्रिण्टेड परिपथ ।

चुंबकीय पदार्थ, स्थायी चुंबक, नर्म चुंबकीय पदार्थ/रिले ।

(7) व्यावहारिक (एप्लाइड) इलेक्ट्रानिक परिपथ—निम्नलिखित परिपथों में निहित सिद्धान्त निर्वात द्यूब एम्प्लीफायर, विभिन्न अनुप्रयोगों के लिये प्ररूपी परिपथ, पुनःप्रदाय (फीडबैक), विस्तृत—बैंड एम्प्लीफायर डी०सी० एम्प्लीफायर, ट्रांजिस्टर एम्प्लीफायर, प्ररूपी (टिपिकल) परिपथ, तापमान स्थायित्व के लिये डिजाइन ।

निम्न और उच्च आवृत्ति दोलित, परंपरागत (कन्वेन्शनल) परिपथ रिलेक्सेशन दोलित, आवृत्ति गुणक और विभाजक (डिवाइडर्स), आवृत्ति स्थायीकरण, स्पंद (पल्स) और प्रसर्प (स्वीप) परिपथ, गणक (काउंटिंग) परिपथ ।

माडुलक और विमाडुलक (डिटेक्टर्स), आयाम, आवृत्ति और फेज माडुलन के लिये प्ररूपी परिपथ ।

इलेक्ट्रानिक उपकरणों के शक्ति प्रदाय तंत्र—दिष्टकारी, फिल्टर, वोल्टता नियमित शक्ति प्रदाय (सप्लाइज) प्रेरणिक (इंडक्शन) नापन (हीटिंग) वेल्डन और विद्युत मोटरों की चालनियंत्रण के औद्योगिक इलेक्ट्रानिक परिपथ ।

टेलीवीजन अभिग्राहित्रों में प्रयुक्त प्ररूपी परिपथ ।

(8) विद्युत और यांत्रिक इंजीनियरी

(क) विद्युत इंजीनियरी—डी० सी० मोटर और जनित्र (जनरेटर)—उनके अभिलक्षणिक और सामान्य लक्षण, मोटर प्रवर्तक (स्टार्टर) ।
प्राथमिक और द्वितीय सेल ।

ए० सी० परिपथ, शक्ति गुणांक, ट्रांसफार्मर, आल्टर्नेटर तुल्य-काली (मिन्कोनस) और प्रेरण (इंडक्शन) मोटर, प्रवर्तक (स्टार्टिंग) युक्तियां । दिष्टकारी और धूर्णी परिवर्तित (रोटरी कन्वर्टर्स) ।

विद्युत मापयंत्र (इन्स्ट्रूमेंट) और मापन—डी० सी० और ए० सी० परिपथों में वोल्टता, धारा और शक्ति मापन, विभिन्न प्रकार के मापयंत्र और उनकी विशेषताएं । प्ररूपी (टिपिकल) ब्रिज ।

(ख) यांत्रिक (मेकेनिकल) इंजीनियरी—पदार्थ के गणधर्म और सामर्थ्य, तनाव (टेंशन) संपीडन (कम्प्रेशन) और अपरूपण (शियर) में प्रतिबल (स्ट्रेस) और

विकृति (स्ट्रेन), हुक का नियम, प्रत्यास्थता के स्थिरांक (इलैस्टिक कान्स्टेंट) धरनों बीम के बंकन (बेंडिंग) आधुर्ण (मोमेंट) और अपरूपण बल ।

और्तिक (इंर्नल) दहन (कम्बर्बन) इंजन—प्रमुख घटक एकक और कार्य करने के सिद्धान्त ।

सरल मशीनी औजार (मशीन टूल्स) और उनके उपयोग ।

शक्ति संचारण—बेल्ट और गियर चालन (डाइव), सीधा (डायरेक्ट) युग्मन (कप्लिंग), शर्षण के नियम, स्नेहक (लुब्रिकेंट) और स्नेह तंत्र फेरस और नान-फेरस पदार्थ—उनके गुण ।

(9) ध्वानिकी के सिद्धान्त

ध्वनि : तरंग समीकरण, कंपमान (वायब्रेटिंग) तंत्र, ध्वनि संचारण, विद्युत-यांत्रिक-ध्वानिक परिपथ और फिल्टर ।

कक्ष ध्वानिकी, ध्वनि अवशोषण और रोधन (इंसुलेशन) अनुरणन, प्रसारण स्टूडियो की डिजाइन ।

ट्रांसड्यूसर : माइक्रोफोन, लाउडस्पीकर, डिजाइन अभिलक्षणिक, मापन और अंशांकन (कैलिब्रेशन) ।

शोर नियंत्रण, ध्वनि रोधन, मापन ।

श्रवण और भाषण, मनो (सायको)—ध्वानिक मानदंड, श्रव्यता मापी द्वारा मापन । उच्च तद्रूपता (फिडेलिटी) तंत्र । डिस्क, चुंबकीय और फिल्म अभिलेखन और प्रतिश्रवण तंत्र (प्लेबैक सिस्टम) ।

(10) संचारण (ट्रांसमिशन) लाइन का जाल (नेटवर्क)

दो टर्मिनल जाल और एल और सी से बने परिपथ । ट्रांसफार्मर के तुल्य जाल की प्रतिबाधा (इम्पीडेंस) । दो टर्मिनल जालों का विश्लेषण और संश्लेषण ।

चार टर्मिनल जाल, रैखिक (लीनियर) पैरामीटर—प्रतिबिंब (इमेज) और इटरेटिव पैरामीटर, टर्मिनेशन, हानि गुणांक—निवेशन (इन्सर्शन) हानि टैन्डम संबंध, परावर्तन और अन्योन्य (इन्टरऐशन) हानियां । टी और एच किस्म के क्षीणन (एनुऐशन) पैड और सैतव (ब्रिज) टी जाल । स्थिर (कांस्टेंट) प्रतिरोध पुनरावृत्ति (रिकरेंस) जाल—समकारी (इक्विलाइजर) ।

तरंग फिल्टर, पारक (पास) और क्षीणन बैंडों के लिये प्रतिबन्ध (कंडीशनस), प्रतिबिम्ब (इमेज) पैरामीटर पर आधारित फिल्टर डिजाइन के सिद्धान्त । एक समान के और एम व्युत्पन्न फिल्टर खण्ड (सेक्शन) । निम्न पारक (लोपास), उच्च पारक (हाइपास) और बैंड पारक फिल्टर (3, 4, 5 और 6 अवयव (एलोमेंट) वाले । मिश्र (काम्पोजिट) और पूरक (काम्प्लीमेंटरी) फिल्टर । फिल्टरों का समानांतरन (पेरिलेजिंग) क्षय (डिसिपेशन) और टर्मिनेशन का प्रभाव । आवृत्ति और प्रतिबाधा प्रसामान्यीकरण (नार्मलाइजेशन) । निम्न पारक से उच्च पारक और बैंड फिल्टर को डिजाइनों में रूपांतरण (ट्रांसफार्मेशन) । विद्युत तरंग फिल्टर डिजाइन के प्रारंभिक सिद्धान्त ।

निम्न आवृत्ति की संचारण लाइन, अभिलक्षणिक (केरेक्टरिस्टिक्स), टेलीग्राफ और टेलीफोन कार्य (वर्किंग) में विकृति (डिस्टॉर्शन)—लोडिंग ।

उच्च आवृत्ति संचारण लाइन, अभिलक्षणिक—खुले तार और संकेन्द्रो (कान्सेट्रिक) प्रदायक (फीडर), प्रतिबाधा अवयव के रूप में संचारण लाइन अनुनादो (रेजोनेन्ट) लाइनें—एच एफ लाइनों का सुमेलन (मैचिंग)।

(11) ऐन्टेना और तरंग संचरण

विद्युत-चुम्बकीय समीकरण, विद्युत चुम्बकीय तरंगों का विकिरण (रेडियेशन), क्षेत्र तीव्रता (इन्टेन्सिटी)।

विकिरण (रेडियेशन) आकृति (पेटर्न), दिशात्मक तंत्र (सिस्टम), ऐन्टेनाओं की लम्बि (गेज), लम्बी, मध्यम, लघु तरंग और अति उच्च आवृत्ति के दिशात्मक ऐन्टेनाओं की व्यावहारिक डिजाइन। अभिग्राही ऐन्टेना तंत्र। दिशा निर्धारक के ऐन्टेना।

रेडियो आवृत्ति संचारण लाइनें, युग्मक (कप्लिंग) जाल, संचारण लाइनों का सुमेलन, प्रदायक लाइनों और स्वचन तंत्रों के व्यावहारिक डिजाइन।

संचरण—भूमिमागी, क्षेप मंडलीय (ट्रोपोस्फेरिक) और आयनमण्डलीय (आयनास्फेरिक), वायु वैद्युत क्षेप (एटमास्फेरिक) और शोर।

क्षेत्र तीव्रता (स्ट्रेंथ) संबंधी मापन।

(12) गणित

मूल (फंडामेंटल) धारणाएं

फंक्शन-औसत दरें-सीमाएं।

मूल संक्रियाएं (आपरेशन)

अवकलज (डेरिवेटिव्ज)-अवकल (डिफरेंशियल), उच्चतर अवकलज। उच्चिष्ठ (मैक्सिमा) और निम्नष्ठ (मिनिमा)-समाकल (इंटीग्रल)-निश्चित (डिफिनिट) समाकल, आगे की संक्रियाएं।

समाकलन तकनीक-द्वि (डबल) समाकल, अनन्त (इंफिनिट) श्रेणी (सीरीज)।

परिभाषाएं—गुणोत्तर (ज्यामेट्रीक) श्रेणी, अभिसारी (कानवर्जेंट) और अपसारी (डायवर्जेंट) श्रेणी-व्यापक (जेनरल) प्रमेय (थ्योरम)—तुलना-परीक्षण-काची का समाकल परीक्षण काची का रेडियो परीक्षण-एकांतर (आल्टर्नेटिंग) श्रेणी-निरपेक्ष अभिसरण (कानवर्जेंट) घात (पावर) श्रेणी-घात श्रेणियों संबंधी प्रमेय-फंक्शन की श्रेणियां और एक समान अभिसरण-श्रेणियों का समाकलन (इंटीग्रेशन) और अवकलन (डिफरेंशियेशन)-टेलर की श्रेणियां टेलर की श्रेणियों का प्रतीकात्मक रूप-घात श्रेणियों द्वारा समाकलों का मूल्यांकन-मेकलारिन की श्रेणियों से व्युत्पन्न सन्निकट सूत्र (फारमूला) फंक्शनों के परिकलन (काम्प्यूटेशन) के लिए श्रेणियों का उपयोग-अनिर्णीय (इंडिटरमिनेट) रूप लेने वाले फंक्शनों का मूल्यांकन।

संमिश्र (काम्प्लेक्स) संख्याएं

परिचय-संमिश्र संख्याएं-संमिश्र संख्याओं को बदलने के नियम-ग्राफी (ग्राफिक) निरूपण और त्रिकोणमितीय (ट्रिगना-

मेट्रिक) रूप (फार्म) घात और मूल (रूट्स) एक्सोपोनेंटी और त्रिकोणमितीय फंक्शन-अतिपरवलयिक (हायपरबोलिक) फंक्शन—लागेरिथ्मीय फंक्शन-प्रतिलोभ (इन्वर्स) अतिपरवलयिक और त्रिकोणमितीय फंक्शन।

आवर्ती (पीरियाडिक) घटनाओं (फिनामिना) का गणितीय निरूपण फूरिये श्रेणी और फूरिये समाकल

परिचय-सरल आवर्त (हार्मोनिक) कंपन (वायब्रेशन)-अधिक जटिल आवर्ती घटनाओं का निरूपण, फूरिये श्रेणी-फंक्शनों के फूरिये प्रसार के उदाहरण-फूरिये श्रेणी के अभिसरण के बारे में कुछ बातें-प्रभावी मान और गुणनफल का औसत-मांडुलित कंपन और विस्पंद (बीट)-आवर्ती वक्रों का तरंगों के रूप में संचरण-फूरिये समाकल।

एकघाती (लोनियर) बीजगणितीय समीकरण-डिटर्मिनेंट और मैट्रिक्स

सरल डिटर्मिनेंट-मूल परिभाषाएं-लाप्लास प्रसार-डिटर्मिनेंट के मूल गुणधर्म-संख्यात्मक डिटर्मिनेंट का मूल्यांकन-मैट्रिक्स की परिभाषा-विशेष मैट्रिक्स-मैट्रिक्सों की समानता। जोड़ और घटाना-मैट्रिक्सों का गुणनफल-मैट्रिक्सों का विभाजन।

पक्षांतरित (ट्रांसपोज्ड) और व्युत्क्रमित (रेसीप्रोकैटेड) गुणनफल का उत्क्रमण (इन्वर्स) नियम उत्क्रम मैट्रिक्स-विकर्ण (डायगोनल) और तत्समकारी (युनिट) मैट्रिक्सों के गुणधर्म-मैट्रिक्सों का उप-मैट्रिक्सों में विभाजन-विशेष प्रकार के मैट्रिक्स-एन एकघाती समीकरणों का एन अज्ञातों (अननोन) में हल।

अक्षर (कॉस्ट) गुणकों (कोएफिसियेंटों) वाले एकघाती अवकल (डिफरेंशियल) समीकरण

समानित (रिड्यूस्ड) समीकरण, पूरक फंक्शन-संकारक (आपरेटर) के गुणधर्म-अनिर्णीत (अनडिटर्मिन्ड) गुणकों की विधि-सरल सिम्पल सीधा (डायरेक्ट) लाप्लास-अक्षर गुणकों वाले एकघाती अवकल समीकरणों को हल करने की संक्रियात्मक (आपरेशनल) या रूपांतरण (ट्रांसफार्म) विधि-रूपांतरों (ट्रांसफार्मों) का सीधा परिकलन काम्प्यूटेशन अक्षर गुणकों वाले एकघाती अवकल समीकरणों का निकाय (सिस्टम)।

अवकल समीकरणों के हल में उपयोगी लाप्लास रूपांतर

अंकन पद्धति (नोटेशन)-मूल प्रमेय।

रेखिक (लोनियर) रिडित (लैम्ड) विद्युत परिवर्तों के दोलन

विद्युत परिपथ सिद्धान्त-ऊर्जा आधारित विचार-सामान्य माला-बद्ध परिपथ का विश्लेषण-संचारित का चार्ज और विसर्जन डिस्चार्ज-परिमित (फाइनाइट) विभव (पोटेंशियल) स्पंद का प्रभाव-सामान्य जाल का विश्लेषण-स्थिर अवस्था के हल-प्रत्यावर्ती (आल्टरनेटिंग) धारा की स्थिर अवस्था के चारटमिनल वाले जाल-चारटमिनल जाल के रूप में संचारण लाइन।

आंशिक अवकलन

आंशिक अवकलन (डेरिवेटिव)-टेलर प्रसार का प्रतीकात्मक रूप-संयुक्त फलनों (फंक्शनों) का अवकलन-चरों (वेरिएबिलों) के परिवर्तन-प्रथम अवकल (डिफरेंशियल)-अस्पष्ट (इंक्लिसिट) फंक्शनों का अवकलन-उच्चिष्ठ (मेक्सिमा) और निम्नष्ठ (मिनिमा)-

निश्चित (डेफिनिट) समाकल का अवकल-समाकल चिन्ह के अन्तर्गत हमकलन-कुछ निश्चित समाकलों का मूल्यांकन-विचरण (वेरिफेशन) कलन (केलकुलस) के मूल तत्व- विचरण कलन के प्रधान (फंडा-मेंटल) सूत्रों का सारांश-हेमिल्टन का सिद्धांत-लागरांजी समीकरण गौण (एक्सेसरी) अवस्था (कंडीशन) वाले विचरण के प्रश्न-समपरिमाणी (आइसोपेरिमेट्रिक) समस्याएं।

सविश (वेक्टर) विश्लेषण

सदिश की धारणा-सदिशों को जोड़ना और घटाना-सदिश और अविश (स्केलर) का गुणा-दो सदिशों का गुणनफल-दो सदिशों का सदिश गुणनफल-बहुल (मल्टीपल) गुणनफल-समय की दृष्टि से (विथ रिस्पेक्ट आफ टाइम) सदिश का अवकलन-प्रवणता (ग्रेडिएंट)-ड्राइवर्जेंस और गाउस का प्रमेय सदिश क्षेत्र का कर्ल और स्टोक का प्रमेय-संकारक का उत्तरोत्तर अनुप्रयोग-लंबकोणीय (आर्थोगोनल) वक्ररेखी निदेशांक-हाइड्रोडाइनेमिक्स में अनुप्रयोग ठोस पदार्थों में उष्मा प्रवाह के समीकरण-गुरुत्वीय विभग-मैक्सवेल के समीकरण तरंग समीकरण-स्वाचिक प्रभाव या विसरण। समीकरण-टेन्सर (गुणात्मक परिचय) निदेशांक रूपांतरण। अदिश, प्रतिचर (कन्ट्रिवेरिएन्ट) सदिश, सहपरिवर्त (कोवेरिएन्ट) सदिश-जोड़। टेन्सरों का गुणनफल और संकुचन (कानट्रैक्शन)-सादिश जोड़। टेन्सरों का गुणनफल और संकुचन सहचारित (असोसियेटेड) टेन्सर निश्चर (इन्वेरिएन्ट) का अवकलन-टेन्सरों का अवकलन-क्रिस्टोफेल के प्रतीक-उच्चतर कोटि के टेन्सरों के नैज (इन्ट्रिन्जिक) और सहपरिवर्त अवकलज (डेरिवेटिव्स)-कण की गतिकी (डाइनेमिक्स) में टेन्सर विश्लेषण का अनुप्रयोग।

सम्मिश्र चर (वेरिएबल) के सिद्धान्त के मूलतत्व

सम्मिश्र चर के सामान्य कार्य—अवकलज और काची और रोमान का अवकल समीकरण—सम्मिश्र फंक्शनों के रेखा समाकल-काची का समाकल प्रमेय-काची का समाकल सूत्र-टेलर की श्रेणियां लारेंट की श्रेणियां। अवशेष (रेसिड्यूज)—काची का अवशेष प्रमेय। विश्लेषी फंक्शन के विचित्र (सिंगुलर) बिन्दु-अनन्त के बिन्दु—प्रवशेषों का मूल्यांकन—लियोविल का प्रमेय—निश्चित समाकलों का मूल्यांकन—जोर्डन का लाम्मा—बहुल युक्त समाकल (वैल्यूज फंक्शन)।

संक्रियात्मक (आपरेशनल) और रूपात्मक विधियां

फूरिये-मेनिन का प्रमेय—मूल नियम—सरल (डायरेक्ट) रूपांतरों का परिकलन—अष्टक रूपांतरों का परिकलन—परिवर्तित समाकल, आवेगी (इम्पल्सिव) फंक्शन। आंशिक अवकल समीकरणों के हल के लिये संक्रियात्मक कैलकुलस का अनुप्रयोग—समाकलों का मूल्यांकन, एक घाती समाकल समीकरणों के हल के लिये लाप्लास रूपांतरों का अनुप्रयोग—चर गुणकों वाले सामान्य अवकल समीकरणों का हल, लाप्लास रूपांतरों की मदद से फूरिये श्रेणी का संकलन (समेशन)।

13. राडार और सूक्ष्म तरंग इंजीनियरी जिसमें यानसंचालन (नेवीगेशन) में उपयोगी रेडियो सहायक यंत्र (ऐड्स) सम्मिलित हैं

मिद्धांत, विभेदन (रिजोल्यूशन), यथार्थता और परास (कवरेज), राडार की परास (रेंज) के समीकरण, राडार के लिये उपयुक्त आवृत्तियां और विभिन्न प्रकार के राडार उपस्कर।

स्पर्द (पल्स) परिपथ और जाल, स्टूब और गेटिंग परिपथ—प्रिजेंटेशन और संबंधित सर्किटरी के विविध प्रकार। माड्युलक और उनके सिद्धांत।

रडार अभिग्राही परिपथ।

विभिन्न प्रकार के राडार ऐंटेना और प्रदाय (फीड) तंत्र। परावर्तक और उनकी डिजाईन। सूक्ष्म तरंग प्लम्बिंग, तरंग पथ निर्धारित्र (वेवगाइड)। संचारण के तरीके (मोड), प्रतिबाधा सुमेसन, चोक मंघियां, दिशा युग्मक, टी आर युक्तियां। वी० एच० एफ० ट्रायोड दोलित, क्लाइस्ट्रान, मेग्नेट्रान, प्रगाभी तरंग ट्यूब, दक्षता आरेख, वायुवाहित (एअर बर्न) और भूमि आधारित (ग्राउंड बेस्ड) राडार तंत्रों के सिद्धांत और अभिनक्षणिक दिशा निर्धारण (डायरेक्शन फाइंडिंग) के सिद्धांत।

यान संचालन तंत्रों जैसे लोरेन, डेक्का, डापलर के सिद्धांत।

इलेक्ट्रानिक तुंगतामापी (आल्टीमीटर) के सिद्धान्त।

(14) प्रसारण और टेलिविजन प्रणालियां (सिस्टम)

लंबी, मध्यम और लघु तरंगों तथा वी० एच० एफ० पर प्रसारण परास (कवरेज), क्षेत्र तीव्रता, शोर और विघ्न, भूमि मार्गी, तरंग द्वारा संचरण, आकाश मार्गी तरंग द्वारा संचरण, फीडिंग की घटनाएं।

“स्टूडियो और सभा भवन, शोर के स्तर, अनुरणन (रिवरबेरेशन) ध्वनि स्तर और ध्वनि के वितरण, संवातन (वेंटीलेशन) और प्रदीप्ति (इल्युमिनेशन) के दृष्टि से डिजाईन।”

स्टूडियो और नियंत्रण कक्ष उपस्कर, माइक्रोफोन—उत्पादन (आउटपुट) प्रतिबाधा, ध्वनि स्तर, विशात्मकता, शोर और तद्रूपता की दृष्टि से डिजाईन पर विचार। माइक्रोफोन का चयन। माइक्रोफोन से प्रेषित (ट्रांसमिटर) तक की ध्वनिक कड़ी (लिंक)—विशेष लक्षण और डिजाईन पर विचार। अभिलेखन (रिकार्डिंग) और प्रतिश्रवण (प्लेबैक)।

प्रसारण प्रेषित्र, प्रसारण की आवश्यकताएँ, पाड्युलक, एम्प्लीफायर और शक्ति प्रदाय एकक।

सुपरहेटेरोडाइन, अभिग्रहण परिपथों की डिजाईन। प्रसारण अभिग्राहकों (रिसीवरों) में ट्रांजिस्टर।

प्रसारण में आवृत्ति मांडुलन।

कैमरों, प्रेषित्रों और अभिग्राहकों के टेलीविजन परिपथ, पिक्चर के मानक, प्ररूपी (टिपिकल) प्रेषित्र और अभिग्राहित प्रकाश और स्टूडियो संबंधी उपस्कर।

परिशिष्ट II

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा के संबंध में विनियम (रेगुलेशन)

[ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिये इसलिये प्रकाशित किये जा रहे हैं जिससे वह यह निश्चित कर सकें कि आपेक्षिक शारीरिक स्तर तक आने की उनकी क्या संभावना है। इन विनियमों का दूसरा ध्येय स्वास्थ्य परीक्षकों का मार्ग प्रदर्शन करना भी है जिससे ऐसे उम्मीदवारों को जो विनियमों में निर्धारित न्यूनतम स्तर तक नहीं आ पा रहे होते हैं, स्वास्थ्य परीक्षकों द्वारा भी स्वास्थ्य की दृष्टि

से योग्य घोषित न कर दिया जाये। जब वे इस राय के हों कि उम्मीदवार इन विनियमों द्वारा निर्धारित स्तर का न होने पर भी सरकार की सेवा बिना किसी अयोग्यता के कर सकेगा तब स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड को यह अनुमति रहेगी कि वे लिखित रूप से कारण बतलाते हुए भारत सरकार से सिफारिश करें कि उस उम्मीदवार को सरकारी नौकरी में ले लिया जाये।

2. लेकिन इस बात को स्पष्ट रूप से समझ लिया जाना चाहिये कि इस विषय के सम्पूर्ण अधिकार भारत सरकार ने अपने हाथों ही में रखे हैं कि स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार कर लेने के बाद उम्मीदवार को स्वीकृत किया जावे अथवा अस्वीकृत।]

1. किसी भी उम्मीदवार को स्वास्थ्य की दृष्टि से योग्य घोषित किये जाने के लिये यह आवश्यक है कि उम्मीदवार शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष न हो जो उस पद के कर्तव्य भार को कुशलता के साथ वहन करने में बाधक हो।

2. (क) भारतीय प्रजाति (रेम) के उम्मीदवारों के लिये (जिनमें आंग्ल-भारतीय भी सम्मिलित हैं) उम्र, ऊंचाई और छाती के घेरे में जो परस्पर संबंध रहना चाहिये उसके लिये कौन से अंक मार्ग दर्शक माने जाने के लिये सबसे अधिक उपयुक्त है उनके चुनाव में स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड पूर्ण रूप से स्वतंत्र है। यदि उम्मीदवार को ऊंचाई, वजन और छाती के घेरे में अच्छा अनुपात न हो तो उसे अस्पताल में खोज के लिये भरती कर देना चाहिये तथा उम्मीदवार को योग्य अथवा अयोग्य घोषित करने के पहले बोर्ड को छाती का एक्स-रे फोटो लेना चाहिये।

(ख) तो भी, कुछ नौकरियों के लिये ऊंचाई और छाती के घेरे के ऐसे न्यूनतम मान जिनके बिना उम्मीदवार को लिया ही नहीं जा सकता है नीचे दिये जा रहे हैं:—

ऊंचाई छाती का घेरा प्रसार
(पूरी तरह
फैलाने पर)

विदेश संचार सेवा की 152 सें० मी० 84 सें० मी० 5 सें० मी०
इंजीनियरी ब्रांच के (पुरुषों के लिये)
श्रेणी I और श्रेणी 150 सें० मी० 79 सें० मी० 5 सें० मी०
II के पदों के लिये (महिलाओं के लिये)

गोरखा, गढ़वाली, असमिया, नागालैण्ड के आदिवासियों आदि प्रजाति के उम्मीदवारों के लिये उपरोक्त निर्धारित न्यूनतम ऊंचाई में और भी छूट की जा सकती है क्योंकि इनकी औसत ऊंचाई स्पष्ट रूप से कम रहती है।

3. उम्मीदवारों की ऊंचाई नीचे लिये तरीके से नापी जाएगी:—

वह अपने जूते उतार कर ऊंचाई नापने वाले स्टैण्डर्ड के सामने इस तरह खड़ा हो जाएगा कि उसके पैर मिले हुए हों और उसका वजन एड़ियों पर हो, वजन पैर की उंगलियों अथवा पंजे के अन्य दूसरी तरफ नहीं होना चाहिये। वह सीधे खड़ा होवेगा लेकिन शरीर को कड़ा (रिजिड) करने की जरूरत नहीं है, उसकी एड़ियां, पिंडलियों, नितंब और कंधे स्टैण्डर्ड को छूते रहना चाहिये। वह ठुड्डी को इस

तरह दबावेगा जिसमें सिर के सबसे ऊपरी भाग का स्तर स्टैण्डर्ड की आड़ी छड़ के बराबर आ जाये। तब उसकी ऊंचाई सेंटीमीटरों में पढ़ली जावेगी। यह ऊंचाई सेंटीमीटर और आधे सेंटीमीटर में दर्शाई जायेगी।

4. उम्मीदवार की छाती नीचे लिखे अनुसार नापी जायेगी:—

उसे सीधे इस तरह खड़े होना पड़ेगा जिससे पैर मिले हुए रहे, उसे अपनी भुजाएं सिर के ऊपर उठानी पड़ेंगी। फीते को छाती के चारों ओर इस तरह रखा जावेगा जिसमें कि उसका ऊपरी किनारा कंधे के फलक (ब्लेड) के निचले कोनों को छूता हुआ एक क्षैतिज (हॉरिजान्टल) समतल (प्लेन) में रहे। तब भुजाओं को नीचे कर दिया जावेगा जिससे वे बाजू में ढीली झूलती रहे। यहां यह सावधानी रखनी पड़ती है कि कंधे न तो ऊपर होने पावे और न पीछे जिससे फीता अपनी जगह से हटने न पावे तब उम्मीदवार को गहरी सांस लेने के लिये कहा जावेगा और जब छाती अधिकतम फूलती है तब उसका नाप सावधानी से लिख लिया जावेगा। तब छाती का न्यूनतम और अधिकतम घेरा सेंटीमीटरों में लिखा जावेगा 84-89, 86-93.5 आदि। नापों को लिखते समय आधे सेंटीमीटर से कम हिस्से को नोट नहीं किया जावेगा।

5. उम्मीदवार का वजन भी लिया जावेगा और उसका वजन किलोग्रामों में नोट कर लिया जावेगा, आधे किलोग्राम से कम हिस्से को नोट नहीं किया जावेगा।

6. (क) उम्मीदवार की नजर भी नीचे लिखे नियमों के अनुसार जांची जावेगी। प्रत्येक जांच के नतीजे को रिकार्ड किया जावेगा।

(ख) बिना चश्मे के आंख की न्यूनतम दृष्टि (विजन) की कोई सीमा निर्धारित नहीं की गई है तो भी प्रत्येक उम्मीदवार की बिना चश्मे की दृष्टि का रिकार्ड स्वास्थ्य परीक्षक बोर्ड अथवा अन्य विद्वान्ता प्राधिकारी द्वारा रखा जावेगा। इससे उम्मीदवार की आंखों की हालत के बारे में आधार भूत सूचना मिलती है।

(ग) चश्मे के साथ अथवा बिना चश्मे के, विभिन्न प्रकार की नौकरियों के लिये दूर और निकट दृष्टि के नीचे लिखे मानक निर्धारित किये गये हैं :

नौकरी की श्रेणी	दूर दृष्टि		निकट दृष्टि	
	बेहतर आंख	बदतर आंख	बेहतर आंख	बदतर आंख
	(सुधारी हुई दृष्टि)		(सुधारी हुई दृष्टि)	

श्रेणी I और II

(1) तकनीकी 6/6 6/12 जे 1 जे 2

अथवा

6/9 6/9

(2) अतकनीकी 6/9 6/12 जे 1 जे 2

(नान टेक्निकल)

नोट : संबंधित मंत्रालय/विभाग उम्मीदवार को स्वास्थ्य परीक्षा के लिये भेजते समय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड को सूचित कर देगा कि उम्मीदवार तकनीकी नौकरी के लिये है अथवा अतकनीकी नौकरी के लिये ।

(घ) निकट दृष्टिता (मायोपिया) के प्रत्येक मामले में फण्डस परीक्षा की जानी चाहिये और नतीजे को रिकार्ड किया जाना चाहिये । यदि ऐसी विकृति जन्य (पैथोलॉजिकल) अवस्था पाई जाती है जिसके बढ़ने की और उम्मीदवार की कुशलता घटने की संभावना हो तो उस पुरुष अथवा महिला उम्मीदवार को अयोग्य घोषित कर दिया जावेगा ।

तकनीकी नौकरियों के लिये निकट दृष्टिता की कुल मात्रा जिसमें सिंलिडर भी सम्मिलित हैं 4.00 डी से अधिक नहीं होनी चाहिये ।

(च) **दृष्टि क्षेत्र**—सभी तरह की नौकरियों के लिये क्षेत्र की जांच कंपेंडेशन तरीके से की जानी चाहिये । जब इस परीक्षण से असंतोषप्रद या संशयास्पद नतीजे मिलते हैं तब दृष्टि क्षेत्र का निर्धारण परिसीमा (पेरीमीटर) पर किया जाना चाहिये ।

(छ) **रात्रि अंधता**—मोटे तौर पर रात्रि अंधता दो किस्म की होती है (1) विटामिन ए की कमी के कारण और (2) रेटिना के आंशिक (आर्गेनिक) रोगों के परिणाम स्वरूप इसका एक सामान्य कारण रेटिनाइटिस पिग्मेंटोसा रहता है । (1) में फण्डस तो सामान्य रहती है जैसा कि कम उम्र के और खराब पोषण मिलने वाले व्यक्तियों में बहुतायत से देखा जाना है और विटामिन ए को बड़ी मात्रा में देने पर हालत में सुधार हो जाता है । (2) फण्डस में खराबी आ जाती है और अधिकांश मामलों का पता तो केवल मात्र फण्डस की परीक्षा से ही चल पाता है । इस श्रेणी के रोगी बयस्क होते हैं जो कुपोषण के शिकार नहीं भी हो सकते हैं । शासन के उच्च पदों के उम्मीदवार इसी श्रेणी में होते हैं ।

तमोनुकूलन (डार्क एडेप्टेशन) परीक्षण से दोनों (1) और (2) की हालत मालूम की जा सकती है । विशेषकर जब फण्डस में खराबी नहीं होती है तब (2) के लिये इलेक्ट्रो रेटिनोग्राफी से परीक्षण आवश्यक रहता है । इन दोनों (डार्क एडेप्टेशन और रेटिनोग्राफी) परीक्षणों में न केवल बहुत समय लगता है बरन विशेष किस्म के उपस्करों की विशेष व्यवस्था आवश्यक होती है अतः सामान्य स्वास्थ्य परीक्षा के नेमी (रूटीन) परीक्षण में इनका किया जाना संभव नहीं रहता है । इन तकनीकी कारणों के कारण मंत्रालय/विभाग को निश्चित रूप से बतला देना चाहिये कि रात्रि अंधता के इन परीक्षणों को करना है अथवा नहीं । यह नौकरी की आवश्यकताओं और उन कर्तव्यों पर निर्भर करता है जो होने वाले सरकारी कर्मचारी को करना पड़ेगा ।

(ज) **रंग दृष्टि** (कलर विजन)—(i) स्वास्थ्य परीक्षा के लिये भेजते समय ही संबंधित मंत्रालय/विभाग को स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड को सूचित करना होगा कि उम्मीदवार क्या ऐसी तकनीकी नौकरी [जिसमें युद्ध क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) भी सम्मिलित है] के लिये हैं जहां के लिये रंग दृष्टि परीक्षा आवश्यक है अथवा अतकनीकी नौकरी के लिये हैं । संबंधित मंत्रालय/विभाग को ही यह निर्णय लेना पड़ता है कि किसो अतकनीकी नौकरी के लिये रंग दृष्टि परीक्षा

आवश्यक है अथवा नहीं और तदनुसार उन्हें स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड को स्वास्थ्य परीक्षा के समय सूचित कर देना होता है ।

(ii) रंग की अनुभूति का श्रेणीकरण उच्चतर और निम्नतर कोटि में किया जाना चाहिये । यह लालटेन के छिद्र के आकार पर निर्भर रहता है, इसका वर्णन नीचे की सारणी में किया गया है:—

श्रेणी	रंग अनुभूति की उच्चतर श्रेणी	रंग अनुभूति की निम्नतर श्रेणी
1. उम्मीदवार और लैम्प के बीच की दूरी	4.9 मीटर	4.9 मीटर
2. छिद्र का आकार	13 मिलीमीटर	13 मिलीमीटर
3. अनावरण (एक्सपोजर) का समय	5 सेकण्ड	5 सेकण्ड

ऐसी नौकरियों के लिए जिनका संबंध जनता की सुरक्षा से रहता है उदाहरणार्थ विमानचालक, ड्राइवर, गार्ड आदि, रंग दृष्टि की उच्चतर श्रेणी आवश्यक हो जाती है लेकिन अन्य नौकरियों के लिये रंग दृष्टि की निम्नतर श्रेणी यथेष्ट मानी जाती है ।

(iii) उस रंग दृष्टि को संतोषप्रद माना जा सकता है जिसमें सिगनल के लाल, हरे और सफेद रंगों को सरलता से और बिना किसी हिचकिचाहट के पहचान लिया जाता है । रंग दृष्टि के परीक्षण के लिए इसीहारा की प्लेटें जिन्हें अच्छे प्रकाश में दिखाया गया हो और उपर्युक्त लालटेन जैसे एड्रिज ग्रीन की लालटेन को बिल्कुल विश्वसनीय माना जा सकता है । साधारण तौर पर दोनों परीक्षणों में किसी भी एक को यथेष्ट माना जा सकता है तो भी सड़क, रेल और वायु यातायात से संबंधित नौकरियों के लिये लालटेन परीक्षण आवश्यक हो जाता है । ऐसे संशयास्पद मामलों में जहां एक उम्मीदवार दोनों परीक्षणों में से केवल एक परीक्षण में योग्य नहीं पाया जाता है, दोनों परीक्षणों का किया जाना आवश्यक हो जाता है ।

(झ) **दृष्टि तीक्ष्णता (एकुईटी) के सिवाय अन्य नेत्र विकार**

(i) कोई भी ऐसे आंगिक (आर्गेनिक) रोग को या अपवर्तन (रिफ्रेक्शन) संबंधी ऐसी दृष्टि को जो समय के साथ बढ़ सकती है और जिसके कारण दृष्टि तीक्ष्णता कम होने वाली है, एक अयोग्यता माना जाना चाहिये ।

(ii) **भंगापन** : ऐसी तकनीकी नौकरियों के लिये जहां द्विनेत्री दृष्टि आवश्यक रहती है भंगापन को अयोग्यता ही माना जाना चाहिये भले ही प्रत्येक आंख की दृष्टि तीक्ष्णता निर्धारित स्तर की हो । अन्य नौकरियों के लिये भंगापन का होना तब अयोग्यता में नहीं गिनना चाहिये जब दृष्टि तीक्ष्णता निर्धारित स्तर की हो ।

(iii) एक ही आंख ।

एक ही आंख का सामान्य प्रभाव तो यह होता है कि इससे त्रिविम (स्टीरियोस्कोपिक) दृष्टि या गहराई के अनुभव पर प्रतिकूल असर पड़ने लगता है । इस तरह की दृष्टि की अनेक सिविल पदों में जरूरत नहीं होती है । अतः पूर्णरूप से संतुष्ट हो जाने पर कि ऐसा उम्मीदवार पद विशेष के सभी कामों को ठीक से कर सकेगा

स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड ऐसे एक आंख वाले व्यक्तियों की मीफारिंग उन पदों के लिये कर सकता है परन्तु शर्त यह रहेगी कि कार्यक्षम आंख की दृष्टि तीक्ष्णता दूर दृष्टि के लिये 6.6 और निकट दृष्टि के लिये 0.6 होवे और अपवर्तन की त्रुटि धम या ऋण 4.00 डी से अधिक न होवे और कार्यक्षम आंख के फण्डस में कोई अपसामान्यता न दिखती हो।

(1) **कान्टेक्ट लेन्स** : किसी भी उम्मीदवार की स्वास्थ्य परीक्षा के दौरान कान्टेक्ट लेन्स के उपयोग की अनुमति नहीं रहेगी। यह आवश्यक है कि जब दूर दृष्टि के लिये आंखों का परीक्षण किया जा रहा हो तब अक्षरों पर प्रकाश 15 फुट केंडिल होवे।

7. रक्तदाब (ब्लड प्रेशर) :

रक्त के दाब के संबंध में बोर्ड अपने स्वतः के निर्णय का उपयोग करेगा। प्रकुंचन (सिस्टोलिक) दाब के सामान्य अधिकतम मान की गणना के लिये एक स्थूल विधि नीचे दी जा रही है :—

(i) 15-25 वर्ष तक की उम्र के नवयुवकों के लिये औसत दाब 100 में उम्मीदवार की उम्र जोड़ने से प्रायः मिलने लगता है।

(ii) 25 वर्ष से अधिक उम्र के उम्मीदवारों के लिये वह सामान्य नियम जिसमें 110 में उम्र का आधा जोड़ा जाता है काफी संतोषप्रद प्रतीत होता है।

बि० ध्यान : सामान्य नियम के रूप में 140 मि० मी० से अधिक के किसी भी प्रकुंचन दाब और 90 मि० मी० से अधिक के अनुशिथिलन (डायस्टोलिक) दाब के कारण संदेह होने लगना चाहिये और बोर्ड को उम्मीदवार की स्वास्थ्य सम्बन्धी योग्यता अथवा अयोग्यता के बारे में अंतिम राय देने के पहले उसे अस्पताल में भर्ती करा देना चाहिये। अस्पताल की रिपोर्ट को यह अवश्य बतलाना चाहिये कि रक्त के दाब की वृद्धि किसी उत्तेजना आदि के तात्क्षणिक कारण हुई है अथवा यह किसी आंगिक (आर्गेनिक) रोग के कारण है। ऐसे मामलों में हृदय और रक्त यूरिया उत्सर्जन परीक्षण के लिये एक्स-रे और इलेक्ट्रो कार्डियोग्राफ का उपयोग नेमी तौर पर अवश्य ही किया जाना चाहिये। स्वास्थ्य की दृष्टि से उम्मीदवार की योग्यता अथवा अयोग्यता सम्बन्धी अंतिम निर्णय केवल स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड पर ही रहेगा।

रक्त दाब नापने की विधि

नियम के रूप में केवल पारायुक्त मैनोमीटर सरीखे माप यंत्रों का ही उपयोग किया जाना चाहिये। किसी भी उत्तेजना अथवा शारीरिक श्रम के पन्द्रह मिनटों के अन्दर कोई नाप नहीं लिया जाना चाहिये। शर्त यह रहती है कि उम्मीदवार और खासकर उसकी भुजा बिल्कुल शिथिल अवस्था में रहनी चाहिये, उम्मीदवार या तो बैठा हुआ रह सकता है अथवा लेटा हुआ। भुजा को उम्मीदवार के बाजू में आरामदेह स्थिति में करीब-करीब आड़ी स्थिति में रखा जाना चाहिये। भुजा पर कंधे तक कोई वस्त्र नहीं रहना चाहिये। मापयंत्र के कफ में कोई हवा नहीं रहनी चाहिये, उसके बीच वाले रबर के हिस्से को भुजा के भीतर की तरफ लगाना चाहिये। इसकी निचली ओर कुहनी के मोड़ से एक या दो इंच ऊपर रखी जानी चाहिये। इसके बाद कपड़े की पट्टी बैग पर एक समान रूप से लपेट देनी चाहिये जिससे हवा भरने के कारण उसमें भार (बल्ज) न होने पाये।

कोहनी के मोड़ पर प्रगंड (ब्रेकियल) धमनी का स्थान उसमें होने वाली धड़कन से मालूम कर लिया जाता है और स्टेथेस्कोप की उम पर हल्के हाथों लेकिन बीचों बीच रखा जाता है। इसे कफ से नीचे हम तरह रखा जाता है कि स्टेथेस्कोप कफ पर न रहे। कफ में पारे के 200 मिलीमीटर दाब की हवा भरी जाती है और धीरे-धीरे हवा निकाल दी जाती है। पारे के स्तम्भ की उस समय की ऊंचाई पढ़ ली जाती है जब एक क्रम से धीमी आवाज सुनाई देने लगती है, यही प्रकुंचन (सिस्टोलिक) दाब रहता है। जब और अधिक हवा निकल जाने दी जाती है तब ध्वनि की तीव्रता बढ़ने लगती है। पारे का स्तर जिस पर सुस्पष्ट सुनी जाने वाली धड़कन मृतुमंद धीमी आवाज में बदल जाती है अनुशिथिलन (डायस्टोलिक) दाब बतलाता है। ये नाम काफी कम समय में लिये जाना चाहिये क्योंकि कफ का अधिक समय तक रहने वाला दाब उम्मीदवार में क्षेम पैदा करने लगता है जिससे रीडिंग के गलत हो जाने का डर रहने लगता है। यदि रीडिंग दुबारा लेने की आवश्यकता हो जावे तो ऐसा कफ पूरी हवा निकाल देने के कुछ मिनट बाद ही करना चाहिये। (कभी-कभी जब कफ से हवा निकाली जा रही होती है तब एक खास स्तर पर तो धड़कनें सुनाई देती हैं लेकिन दाब के कम होने पर ये धड़कनें गायब हो कर दाब के एक दूसरे निम्न स्तर पर फिर सुनाई देने लगती हैं। इस मूक अन्तराल (सायलेन्ट गैप) के कारण रीडिंग में त्रुटि हो सकती है।

8. (परीक्षक के सामने निकाले गये) मूत्र की परीक्षा की जानी चाहिये और परिणाम को रिकार्ड किया जाना चाहिये। यदि स्वास्थ्य परीक्षक बोर्ड को सामान्य रासायनिक परीक्षणों से उम्मीदवार के मूत्र में चीनी मिलती है तो बोर्ड को दूसरे दृष्टिकोणों से भी परीक्षा करनी चाहिये जो मधुमेह की ओर इशारा करते हैं। यदि बोर्ड यह पाता है कि ग्लायको-सुरिया के सिवाय उम्मीदवार का स्वास्थ्य वांछित स्तर का है तो वे उम्मीदवार को इस रिमार्क के साथ योग्य घोषित कर सकते हैं "यदि ग्लायकोसुरिया अमधुमेही है तो योग्य है। ऐसे केस को बोर्ड ऐसे निर्धारित चिकित्सा विशेषज्ञ के पास भेज देगा जिसके पास समुचित अस्पताल और प्रयोगशाला के सभी आवश्यक परीक्षण करेगा जिसमें रक्त शर्करा सह्यता का मानक परीक्षण (स्टेन्डर्ड ब्लड सुगर टालरेन्स टेस्ट) भी सम्मिलित रहेगा और अपनी राय स्वास्थ्य बोर्ड को भेज देगा। इस राय पर स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड अन्तिम राय बनावेगा कि उम्मीदवार योग्य है अथवा अयोग्य। उम्मीदवार को दुबारा बोर्ड के सामने स्वयं जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। औषध प्रयोग के प्रभावों को निष्प्रभावित करने के लिये यह आवश्यक हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिनों तक कड़े परीक्षण (स्ट्रिक्ट सुपरविजन) में अस्पताल में रोकना पड़े।

9. यदि परीक्षणों के फलस्वरूप यह पाया जाता है कि किसी महिला उम्मीदवार को 12 सप्ताह या अधिक का गर्भ है तो उसे प्रसव हो जाने तक के लिये अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जावे। प्रसव की तिथि के छह सप्ताह बाद योग्यता प्रमाणपत्र के लिये उसका परीक्षण फिर से किया जाना चाहिये परन्तु शर्त यह रहेगी कि उसे एक पंजीबद्ध (रजिस्टर्ड) चिकित्सक

(मेडिकल प्रेक्टिशनर) से स्वस्थता प्रमाण-पत्र (मेडिकल सर्टिफिकेट आफ फिटनेस) प्रस्तुत करना पड़ेगा।

10. नीचे लिखी अनिवार्य बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये—

- (क) कि उम्मीदवार प्रत्येक कान से अच्छी तरह सुन सकता है और कानों के रोग का कोई चिह्न नहीं होना चाहिये। यदि कानों में कोई दोष हो तो उम्मीदवार का परीक्षण कर्ण विशेषज्ञ द्वारा कराया जाना चाहिये। शर्त यह है कि सुनने का दोष यदि ऐसा है कि उसे आपरेशन द्वारा अथवा श्रवण सहायता यन्त्र (ऐड) की मदद से दूर किया जा सकता है तो इस कारण उम्मीदवार को अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता। आगे शर्त यह रहेगी कि उस पुरुष/महिला को कान का ऐसा रोग नहीं होना चाहिये जिसमें समय के साथ वृद्धि होने की सम्भावना हो।
- (ख) कि उस पुरुष/महिला को बोलने में कोई बाधा नहीं है,
- (ग) कि उस पुरुष/महिला के दांत अच्छी हाथ में हैं और आवश्यकता के अनुसार उस पुरुष/महिला के पास नकली दांत हैं जिससे वह ठीक से चबा सकता है (अच्छे से भरा गया दांत भी मजबूत दांत माना जावेगा)।
- (घ) कि उसकी छाती अच्छे से बनी है और उसका प्रसार भी यथेष्ट है, कि उसका हृदय और फेफड़े स्वस्थ ह।
- (च) कि किसी तरह के उदर विकार के चिह्न दृष्टिगोचर नहीं होते हैं।
- (छ) कि उसे हनिया (रपचर्ड) नहीं है।
- (ज) कि उसे हाइड्रोसील, गम्भीर किस्म का वृषण शिराप स्फीति (वेरिकोसील) अस्फीति (वेरिकोज) शिरा (वेन्स) अथवा बवासीर नहीं है।
- (झ) कि उसके अंग, हाथ और पैर अच्छे से बने और विकसित हैं और उसके सभी जोड़ बिना किसी बाधा के अच्छे से मुड़ सकते हैं।
- (ट) कि वह किसी चर्म रोग से बहुत समय से पीड़ित नहीं है।
- (थ) कि उसके शरीर में कोई जन्मजात विकृति अथवा दोष नहीं है।
- (द) कि उस पर तीव्र (एक्यूट) अथवा पुराने (क्रानिक) बीमारी के ऐसे लक्षण नहीं हैं जिनसे ऐसा लगे कि उसको गठन (कांस्टीट्यूशन) ही खराब (इम्पेयर्ड) हो गई है।
- (ध) कि उसके शरीर पर सफल टीके के चिह्न हैं।
- (न) कि उसे कोई संचारी (कम्यूनिकेबल) बीमारी नहीं है।

11. छाती की परीक्षा के लिये एक्स-रे-किरणों का उपयोग सभी के लिये किया जाना चाहिये जिससे हृदय और फेफड़े की किसी भी अपसामान्यता (एबनार्मैलिटी) का पता, जो सामान्य शारीरिक परीक्षण से मालूम नहीं हो पाती, चल जावे।

जब किसी दोष का पता चल जाता है तब प्रमाण-पत्र में उसका जिक्र अवश्य ही किया जाना चाहिये और स्वास्थ्य परीक्षक को अपनी स्पष्ट राय लिख देनी चाहिये कि यह दोष उन कर्तव्यों के पालन में साधक होगा अथवा बाधक जिन्हें उम्मीदवार को अपनी नौकरी के दौरान करना पड़ेगा।

नोट :—उम्मीदवारों को आगाह किया जाता है कि किसी भी स्थायी अथवा विशेष स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड के खिलाफ, जिसकी नियुक्ति उनकी उक्त पदों के लिये योग्यता अथवा अयोग्यता निर्धारित करने के लिये की गई है, कोई अपील का अधिकार उन्हें नहीं है। लेकिन यदि ऐसे प्रमाण उपस्थित किये जाते हैं जिनसे सरकार को विश्वास हो जाता है कि प्रथम बोर्ड के निर्णय में गलती की सम्भावना है तो सरकार को यह भी अधिकार है कि वह अपील करने की अनुमति दे सकती है। फलस्वरूप एक दूसरा बोर्ड उनके स्वास्थ्य की परीक्षा के लिये नियुक्त किया जा सकता है। जिस तारीख को प्रथम स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड का निर्णय उम्मीदवार को सूचित किया जाता है उसके एक माह के भीतर इस तरह के प्रमाण विचारार्थ प्रस्तुत कर दिये जाने चाहिए नहीं तो दूसरे स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड की प्रार्थना पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

पहले स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड के निर्णय में भूल की सम्भावना के प्रमाण स्वरूप यदि उम्मीदवार किसी अन्य स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र को प्रस्तुत करना चाहता है तो उस पर तब तक विचार नहीं किया जा सकेगा जब तक कि चिकित्सा व्यवसायी (मेडिकल प्रैक्टिशनर) इस पर इस तरह का नोट न देवे कि उसे अच्छी तरह मालूम है कि उम्मीदवार को मेडिकल बोर्ड ने उक्त नौकरी के लिये अयोग्य घोषित कर रखा है।

स्वास्थ्य परीक्षक (मेडिकल) बोर्ड की रिपोर्टें

स्वास्थ्य परीक्षक के मार्गदर्शन के लिये नीचे लिखी सूचना दी जाती है :—

(i) शारीरिक आरोग्यता का ऐसा मानदण्ड अपनाया जाना चाहिये जो सम्बन्धित उम्मीदवार की उम्र, सेवा-काल (लेंथ आफ सर्विस) आदि के लिए समुचित रियायत करता हो।

जन-सेवा में प्रवेश पाने के लिए कोई ऐसा व्यक्ति योग्य नहीं माना जायेगा जो सरकार अथवा नियुक्ति प्राधिकारी को पूर्णतया संतुष्ट न कर सकता हो कि उसे ऐसा कोई रोग, गठन सम्बन्धी विकार (कांस्टीट्यूशनल अफेक्शन) अथवा शारीरिक कमजोरी नहीं है जिसके कारण या तो वह अभी उस नौकरी के लिये अयोग्य है अथवा भविष्य में अयोग्य हो जाएगा।

यह समझ लिया जाना चाहिये कि योग्यता का प्रश्न न केवल वर्तमान में सम्बन्धित है बल्कि भविष्य में भी सम्बन्धित है और स्वास्थ्य परीक्षा के मुख्य ध्येयों में से एक यह भी है कि लगातार प्रभावशील सेवा बनाई रखी जा सके। जिन उम्मीदवारों को स्थायी नौकरी पर रखा जाना है उन्हें बीमारी के कारण जल्दी ही पेंशन न देना पड़े या अकाल मृत के समय भुगतान न करना

पड़े यह भी ध्यान में रखना पड़ता है। साथ ही साथ इसे भी ध्यान में रखा जाना है कि समस्या प्रभावशील सेवा को लगातार बनाए रखने से सम्बन्धित है अतः ऐसे उम्मीदवारों को अस्वीकार करने की सिफारिश नहीं की जानी चाहिये जिनमें ऐसे दोष हों जो बहुत ही कम केमों में लगातार प्रभावशील सेवा में बाधक पाए जाते हैं।

जब कभी किसी महिला उम्मीदवार की परीक्षा की जानी हो तब स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड में एक महिला डाक्टर को भी सदस्य के रूप में सहयोजित (कोआप्ट) किया जायेगा।

स्वास्थ्य परीक्षा (मेडिकल) बोर्ड की रिपोर्ट गोपनीय रखी जानी चाहिये।

जब किसी उम्मीदवार को सरकारी नौकरी पर नियुक्ति के लिए अयोग्य घोषित किया जाता है तब उसे अस्वीकृत किए जाने के कारणों की मोटी-मोटी बातें सूचित कर दी जायेंगी लेकिन मेडिकल बोर्ड द्वारा बतलाए गए दोषों का सूक्ष्म विवरण नहीं बतलाया जायेगा।

जब मेडिकल बोर्ड की राय यह रहती है कि किसी सरकारी नौकरी के उम्मीदवार की अयोग्यता गम्भीर नहीं है और उसे उपचार द्वारा औषध चिकित्सा अथवा शल्य चिकित्सा—हटाया जा सकता है तब मेडिकल बोर्ड को तदनुसार रिपोर्ट में लिख देना चाहिये। नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा बोर्ड की राय को उम्मीदवार को बतला देने में कोई आपत्ति भी नहीं रहती है, जब उम्मीदवार रोग से मुक्त हो जाता है तब यह अधिकारी पर निर्भर करेगा कि वह उम्मीदवार को हमारे मेडिकल बोर्ड के पास भेज देवे।

उन उम्मीदवारों के मामले में जिन्हें अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित किया जाता है, फिर से परीक्षण की अवधि निर्धारित कर दी जानी चाहिये; यह अवधि छह माह से अधिक नहीं होनी चाहिये। निर्धारित अवधि के पश्चात् जब उनकी फिर से परीक्षा ली जाती है तब उन्हें फिर से कुछ समय के लिये अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित नहीं किया जाना चाहिये परन्तु नियुक्ति के लिये उनकी योग्यता अथवा अयोग्यता के बारे में अन्तिम निर्णय लिया जाना चाहिये।

(क) उम्मीदवार का बयान और घोषणा।

मेडिकल परीक्षा के पहले ही उम्मीदवार को नीचे लिखा बयान देना चाहिये और उसी के साथ संलग्न घोषणा पर हस्ताक्षर अवश्य करना चाहिये। नीचे के नोट में वर्णित चेतावनी की तरफ उनका ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट किया जाता है।

1. अपना पूरा नाम लिखिये (घर्णाक्षरों में)

2. अपनी उम्र और जन्म-स्थान लिखिये।

2. (क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमिया, नागालैंड के आदिवासी जैसी किसी ऐसी प्रजाति (रेस) के सदस्य हैं जिनकी औसत ऊंचाई निश्चित रूप से कम होती है? उत्तर हां या नहीं में होना चाहिये। यदि उत्तर हां है तो प्रजाति का नाम लिखिये।

3. (क) क्या आपको कभी चेचक, विरामी अथवा अन्य किसी किस्म का ज्वर, ग्रंथियों का विषर्जन (एलांजमेंट) अथवा

पूयता (सुपरेशन) थूक में खून, दमा, हृदरोग, फेफड़े का रोग, मूर्च्छा, रुमेटिज्म, ऐपेण्डिसाइटिस.....आदि रोग हुए हैं?

(ख) क्या कोई अन्य रोग हुए हैं अथवा कोई दुर्घटना हुई है जिसके कारण बिस्तर पर पड़े रहना पड़ा है अथवा औषध या शल्य चिकित्सा करवानी पड़ी है?

4. आपको अंतिम बार टीका कब लगा था?

5. क्या आप किसी भी किस्म का अधीरता (नर्वसनेस) के शिकार हुए हैं? क्या यह अतिश्रम (ओवरवर्क) अथवा अन्य किसी कारण से हुई थी?

6. अपने कुटुम्ब के बारे में निम्नलिखित ब्योरा दीजिये:

यदि जीवित हैं तो	मृत्यु के समय	जीवित भाइयों	मृत भाइयों
पिता की उम्र और	पिता की उम्र	की संख्या,	की संख्या
उनके स्वास्थ्य की	और मृत्यु	उनकी उम्र	मृत्यु के समय
हालत	का कारण	और उनके	उनकी उम्र
		स्वास्थ्य की	और मृत्यु के
		हालत	कारण

यदि जीवित हैं तो	मृत्यु के समय	जीवित बहनों	मृत बहनों
माँ की उम्र और	माँ की उम्र	की संख्या,	की संख्या,
उनके स्वास्थ्य की	और मृत्यु	उनकी उम्र	मृत्यु के
हालत	का कारण	और उनके	समय उनकी
		स्वास्थ्य की उम्र और	
		हालत	मृत्यु के
			कारण

7. क्या पहले आपके स्वास्थ्य की परीक्षा मेडिकल बोर्ड द्वारा की जा चुकी है।

8. यदि ऊपर का उत्तर हां है तो बतलाइये कि किस नौकरी (नौकरियों) पद (पदों) के लिये आपकी परीक्षा की गई थी?

9. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था?

10. मेडिकल बोर्ड कब और कहाँ बैठा था?

11. मेडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम, क्या तुम्हें सूचित किया गया था या क्या तुम्हें मालूम है.....

में घोषणा करता हूँ कि ऊपर लिखे सभी उत्तर, जहाँ तक मुझे विदित है, सही और सत्य हैं।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर

मेरे सामने हस्ताक्षर किए गए

बोर्ड के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

नोट: उपरोक्त विवरण की यथातथ्यता के लिए उम्मीदवार जिम्मेदार ठहराया जाएगा। जानबूझकर किसी सूचना को दबाने के लिये उसे नौकरी तक से हाथ धोना पड़ सकता है।

यदि उसको नियुक्ति हो भी जाती है तो निवर्तन भत्ता (सुपरएनुएलन अलाउन्स अथवा उपदान (प्रेचुइटी) पर से उसके सारे दावों का अधिहरण (फ.रफीचर) हो सकता है।

(ख) (उम्मीदवार का नाम) सम्बन्धी स्वास्थ्य परीक्षा (मेडिकल) बोर्ड की रिपोर्ट/शारीरिक परीक्षा।

1. सामान्य विकास : अच्छा (गुड) — पर्याप्त (फेयर) —
स्वल्प (पुअर) — पोषण : कुश —
औसत — स्थूल —
(बिना जूतों के) ऊँचाई — वजन —
अधिकतम (बेस्ट) वजन —
कब — हाल में हुए वजन के परिवर्तन —
तापमान —

छाती का घेरा :—

(1) (पूरी सांस लेने के बाद) —
(2) (पूरी सांस छोड़ने के बाद) —

2. स्वचा : दृष्टिगोचर होने वाला कोई रोग —

3. आँख (1) कोई बीमारी
(2) रात्रि अंधता
(3) रंग दृष्टि संबंधी कोई दोष
(4) दृष्टि क्षेत्र (फील्ड आफ विजन)
(5) दृष्टि तीक्ष्णता (विजुअल एकुइटी)

दृष्टि	बिना चश्मों के	चश्मों के साथ	चश्मों का नम्बर		
			गोल	सिलि	अक्ष
तीक्ष्णता					

दूर दृष्टि :
दाहिनी आँख
बायी आँख

निकट दृष्टि :
दाहिनी आँख
बायी आँख

दूरदृष्टिता (स्पष्ट) :
(हायपर मेट्रोपिया (मेनीफेस्ट)
दाहिनी आँख
बायी आँख

4. कान : निरीक्षण — श्रवण : दाहिना कान —
बायाँ कान —

5. ग्रंथियाँ — ग्राइरड्ड —

6. दांतों की हालत —

7. प्रवसन (रेस्पिरेटरी) तंत्र : क्या शारीरिक परीक्षा पर प्रवसन अंगों में कोई अपसामान्यता (एबनॉर्मैटी) देखी गई है?

यदि हाँ, तो पूरी तरह समझाइये —

8. परिसंचरण (सर्कुलेटरी) तंत्र :

(क) हृदय : कोई आंगिक विकृति ?
दर — स्टेंडिंग
25 बार उलछने के बाद —
उछलने के 2 मिनट बाद —

(ख) रक्त का दाब : प्रकुंचन (सिस्टोलिक) —
अनुश्लिथलन (डायस्टोलिक) —

9. उदर : घेरा — स्पर्श सहनता (टेंडरनेस)
— हर्निया —

(क) स्पर्श गोचर (पेल्वेबिल) : मकृत (लीवर) —
प्लीहा (स्प्लीन) कृकक (किडनी) —
अर्बुद (ट्यूमर) —

(ख) बवासीर — नालग्नण (फिस्टुला)

10. तंत्रिका (नर्वस) तंत्र (सिस्टम) : अधीरता अथवा मानसिक निर्बलता के लक्षण —

11. चलन (लोकामोटर) तंत्र : कोई अपसामान्यता —

12. जनन मूल (जेनिटों यूनिटी) तंत्र : हाइड्रोसील, वृषण-शिरापस्फोति (वेरिको सील) आदि के कोश लक्षण —

मूत्र विश्लेषण :

(क) भौतिक रूप (एबोरीपेन्स) —
(ख) आपे० घनत्व —
(ग) ऐल्ब्युमिन (घ) शर्करा
(च) निर्मोक्त (कास्ट्रस) — (छ) कोशिका (सेल्स) —

13. छाती की एक्स-रे परीक्षा की रिपोर्ट —

14. क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई ऐसी खामी है जिससे वह संबंधित नौकरी के कर्तव्य भार को सक्षमता से वहन करने में अयोग्य हो सकता है ?

15. उन नौकरियों के नाम जिनके लिये उम्मीदवार का परीक्षण किया जा चुका है और जिनके कर्तव्य भार को लगातार रूप से और सक्षमता से वहन करने के लिए वह सब दृष्टियों से योग्य पाया गया है। किन नौकरियों के लिये वह अयोग्य समझा जाता है।

16. क्या उम्मीदवार युद्ध सेवा (फील्ड सर्विस) के योग्य है ?

नोट:—बोर्ड को अपने निष्कर्ष (फाइंडिंग) नीचे लिखी तीन श्रेणियों में से एक में रिकार्ड करना चाहिये :

- (i) योग्य
(ii) _____ कारण अयोग्य
(iii) _____ के कारण अस्थायी रूप से अयोग्य

अध्यक्ष (प्रेसीडेंट) _____

सदस्य _____

स्थान _____

तारीख _____

परिशिष्ट-III

इस परीक्षा के जरिये जिन पदों के लिए भर्ती की जा रही है उन पदों का संक्षिप्त व्यौरा :

I. इंजीनियर (श्रेणी I) बेतार (वायर लेस) आयोजना और समन्वय (को-ऑर्डिनेशन विंग)/मानीटरी संगठन, संचार विभाग :

(क) वेतन मान 400-400-450-30-600-635-670-40-द० रो० (ई० बी०)-35-950

(ख) इंजीनियर के पद धारी को इस पदक्रम (ग्रेड) में पांच वर्ष नौकरी कर लेने के बाद सहायक बेतार सलाहकार-बेतार-आयोजना और समन्वय स्कंध/इंजीनियर-इंचार्ज, मानीटरी संगठन (वेतनमान रुपये 700-40-1100-50/2-1250 तथा केवल सहायक बेतार सलाहकार के पद के लिये 100 रुपये का विशेष वेतन) के ग्रेड में खाली होने वाली जगहों के 50 प्रतिशत पर, पहुंचने की पात्रता पदोन्नति (प्रमोशन) द्वारा रहेगी। सहायक बेतार सलाहकार/इंजीनियर इंचार्ज के पद के ये प्रमोशन श्रेणी I के पदों के लिये संगठित विभागीय पदोन्नति समिति (डी० पी० सी०) द्वारा प्रवरण (सैलेक्शन) के आधार पर होंगे।

सभी सहायक बेतार सलाहकार और इंजीनियर इंचार्ज जो सहायक बेतार सलाहकार/इंजीनियर इंचार्ज के ग्रेड में पांच वर्ष नौकरी कर चुके होंगे, उप-बेतार सलाहकार (वेतनमान रुपये 1100-50-1400) के पदों पर पदोन्नति के लिये विचार किये जाने के पात्र रहेंगे। उप-बेतार सलाहकार के ग्रेड की खाली जगहों में से 75 प्रतिशत जगहों पर उस डी० पी० सी० की सिफारिश पर पदोन्नति द्वारा भरी जावेगी जिसका गठन श्रेणी I के पदों के लिये किया जाता है। उप-बेतार सलाहकार के ग्रेड की 25 प्रतिशत खाली जगहें सीधी (डायरेक्ट) भर्ती द्वारा भरी जावेगी।

II. जिन व्यक्तियों की नियुक्ति इंजीनियर के पद पर की जाती है उन्हें देश में कहीं भी तैनात किया जा सकता है।

(क) जिन व्यक्तियों की नियुक्ति इंजीनियर के पद पर की जाती है उन्हें आवश्यकता के अनुसार किसी भी रक्षा सेवा अथवा

भारत की रक्षा से संबंधित किसी भी पद पर काम करना पड़ सकता है। यदि प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है तो उसकी अवधि को मिलाकर रक्षा सेवा की अवधि चार साल से कम नहीं होवेगी।

परन्तु शर्त यह है कि ऐसे व्यक्तियों को (क) नियुक्ति की तारीख से दस वर्ष बीत जाने पर ऊपर बतलाई हुई सेवा करने की आवश्यकता नहीं रह जावेगी :

(ख) चालीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने के बाद ऊपर बतलाई हुई सेवा करने की आवश्यकता सामान्यतया नहीं रह जावेगी।

2. सहायक इंजीनियर (श्रेणी-2 राजपत्रित) और तकनीकी सहायक (श्रेणी 2 अराजपत्रित)—विदेश संचार व्यवस्था, संचार विभाग।

(क) जिन उम्मीदवारों को तकनीकी सहायक/सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्ति के लिये चुना जाता है उन्हें कम से कम दो साल की परीक्षा पर रखा जावेगा जिसे आवश्यकता के अनुसार बढ़ाया जा सकता है।

(ख) तकनीकी सहायक/सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त आफीसर को देश में कहीं भी तैनात किया जा सकता है।

(ग) तकनीकी सहायक/सहायक इंजीनियर के पदों पर अस्थायी रूप से नियुक्त व्यक्तियों पर वे सभी शर्तें तो लागू होती हैं जो उस बान्ड में लिखी हुई हैं जिसे इन अधिकारियों को निष्पादित करना होगा, साथ ही साथ उसकी नौकरी को उभय पक्षों में से कोई भी एक पक्ष एक महीने का नोटिस देकर समाप्त कर सकता है। विभाग को यह भी सुविधा रहेगी कि किसी अस्थायी कर्मचारी की सेवा को नोटिस के बवले एक महीने का वेतन और भत्ता देकर भी समाप्त कर सकता है परन्तु अधिकारी को ऐसा विकल्प उपलब्ध नहीं रहेगा।

(क) वेतन के मान —

(1) तकनीकी सहायक— रुपये 325-15-475-द० रो०- (ई० बी०)-20-575

(2) सहायक इंजीनियर—रुपये 350-25-500-30-590-द० रो० (ई० बी०)-30-800-द० रो०-30-830-35-900

(घ) उच्चतर ग्रेडों की पदोन्नति की संभावनाएं :

(1) तकनीकी सहायक : सहायक इंजीनियर के ग्रेड की, जिसके वेतन का मान रुपये 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800-द० रो०-30-830-35-900 है, 50 प्रतिशत खाली होने वाली जगहें विभागीय पदोन्नति के लिये सुरक्षित रखी जाती हैं। ऐसे सभी तकनीकी सहायकों पर जिन्होंने अपने ग्रेड में न्यूनतम तीन वर्ष की सेवा पूरी कर ली है। उपरोक्त पदोन्नति के लिये विचार किया जा सकता है। यह पदोन्नति गुणों के आधार पर (आन मेरिट) सैलेक्शन द्वारा की जावेगी।

(2) सहायक इंजीनियर: उप इंजीनियर इंचार्ज के ग्रेड की, जिसके वेतन का मान रुपये 400-400-450-30-600-35-670-द० रो०-35-950 है, 75 प्रतिशत खाली होने वाली जगहें विभागीय

पदोन्नति के लिये सुरक्षित रखी जाती हैं। ऐसे सभी सहायक इंजीनियरों के पद जिन्होंने अपने ग्रेड में न्यूनतम तीन वर्ष की पूरी कर ली है, उपरोक्त पदोन्नति के लिये विचार किया जा सकता है। यह पदोन्नति गुणों के आधार पर सैलेक्शन द्वारा की जावेगी।

(छ) जिन व्यक्तियों की नियुक्ति तकनीकी सहायक या सहायक इंजीनियर के पद पर की जाती है उन्हें आवश्यकता के अनुसार किसी भी रक्षा सेवा अथवा भारत की रक्षा से संबंधित किसी भी पद पर काम करना पड़ सकता है। यदि कोई प्रशिक्षण दिया जाता है तो उसकी अवधि को मिलाकर रक्षा सेवा की अवधि चार साल से कम नहीं होवेगी।

परन्तु शर्त यह है कि ऐसे व्यक्तियों को

(क) नियुक्ति की तारीख से दस वर्ष बीत जाने पर ऊपर बतलाई हुई सेवा करने की आवश्यकता नहीं रह जावेगी :

(ख) चालीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने के बाद ऊपर बतलाई हुई सेवा करने की आवश्यकता सामान्यतया नहीं रह जावेगी।

नोट : नौकरी की शेष शर्तें जैसे छुट्टी ट्रांसफर/वीरे पर यात्रा भत्ता, कार्यारम्भकाल/कार्यरम्भकाल वेतन, चिकित्सा सुविधाएं, यात्रा रियायत, पेन्शन और उपदान, नियंत्रण और अनुशासन तथा आचरण आदि उन अन्य केन्द्रीय शासन के कर्मचारियों के अनुसार ही रहेगी जिनकी हैसियत समान है।

3. सहायक स्टेशन इंजीनियर (श्रेणी-I) — महानिदेशक, आकाशवाणी (आल इंडिया रेडियो), सूचना और प्रसारण मंत्रालय

(क) नियुक्तियां दो वर्ष की परिवीक्षा पर की जावेंगी।

(ख) पद पर नियुक्त आफीसर को देश में कहीं भी तैनात किया जा सकता है और उसका स्थानान्तरण किसी भी समय सांघजनिक कार्पोरेशन में किया जा सकता है। इस तरह के स्थानान्तरण के फलस्वरूप उस पर वे ही सेवा शर्तें लागू की जा सकती हैं जो कार्पोरेशन के कर्मचारियों के लिये निर्धारित की गई हैं।

(ग) निम्नलिखित परिस्थितियों में, सरकार अधिकारी की नौकरी बिना कोई नोटिस दिये ही समाप्त कर सकती है :—

(1) परिवीक्षा अवधि के दौरान अथवा उसके समाप्त होने पर।

(2) अनधीनता (इनसबाडिनेशन), असंयम, अवचार (मिसकांडक्ट) के लिये अथवा सेवा संबंधी उन नियमों के भंग करने पर जो उस समय लागू थे अथवा ऐसे नियमों के अनुसार कार्य न करने पर।

(3) यदि वह स्वास्थ्य की दृष्टि से अयोग्य हो जाता है और काफी समय तक अस्वस्थता के कारण उसके कर्तव्यों के पालन में असमर्थ रहने की संभावना है। अस्थायी नियुक्ति की हालत में किसी भी समय, बिना कोई कारण बतलाये आफीसर की सेवाएं उभयपक्ष में से किसी भी एक के द्वारा एक माह का नोटिस देकर समाप्त की जा सकती हैं।

(घ) वेतन मान—रुपये 400-400-450-30-670-दो रो०-35-950।

(च) उच्चतर ग्रेडों को पदोन्नति की संभावनाएं :

(1) स्टेशन इंजीनियर के ग्रेड में पदोन्नति : ऐसे सब सहायक स्टेशन इंजीनियर जिन्होंने अपने ग्रेड में न्यूनतम पांच वर्ष नौकरी कर ली है आल इंडिया रेडियो के स्टेशन इंजीनियर के ग्रेड में पदोन्नति पाने के पात्र बन जाते हैं जिसका वेतनमान रुपये 700-40-1100-50/2-1250 है। यह पदोन्नति विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर सैलेक्शन द्वारा की जावेगी।

(2) वरिष्ठ (सीनियर) इंजीनियर के ग्रेड में पदोन्नति— सभी ऐसे स्टेशन इंजीनियरों पर जिन्होंने अपने संवर्ग (काडर) में न्यूनतम सात साल नौकरी कर ली है सीनियर इंजीनियरों के ग्रेड में पदोन्नति के लिये विचार किया जा सकता है। इसका वेतनमान रुपये 1300-60-1600 है। यह पदोन्नति विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिश पर सैलेक्शन द्वारा की जावेगी।

नोट :—नौकरी की शेष शर्तें जैसे छुट्टी, ट्रांसफर/दौरे पर यात्रा भत्ता, कार्यारम्भकाल/कार्यरम्भकाल वेतन, चिकित्सा सुविधाएं, यात्रा रियायत, पेन्शन और उपदान (ग्रेचुइटी), नियंत्रण और अनुशासन तथा आचरण आदि उन अन्य केन्द्रीय शासन के कर्मचारियों के अनुसार ही रहेंगे जिनकी हैसियत समान है।

4. तकनीकी अधिकारी (श्रेणी-1) और संचार अधिकारी श्रेणी (1)—नागर विमानन विभाग, पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय।

(क) नियुक्ति के लिए चुने गये उम्मीदवारों को दो साल की परिवीक्षा पर रखा जावेगा जिसके दौरान वे उस प्रयोगात्मक प्रशिक्षण को लेवेंगे जो प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार समय-समय पर निर्धारित किया जाता है। जिनके बारे में अच्छी रिपोर्ट आती हैं और जो निर्धारित विभागीय परीक्षा अथवा परीक्षाएं पास कर लेते हैं उन्हें अस्थायी संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी के रूप में नियुक्त किया जावेगा। संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी के ग्रेड में, ज्यों-ज्यों स्थायी पद उपलब्ध होते जावेंगे त्यों-त्यों उनकी पुष्टि (कन्फर्मेशन) पर विचार किया जावेगा।

(ख) यदि शासन की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का काम या आचरण असंतोषप्रद रहता है अथवा यह प्रतीत होता है कि वह कभी कार्यपटु नहीं हो पावेगा तो शासन उसे उसी समय कार्य-मुक्त कर सकता है।

(ग) परिवीक्षा की अवधि पूरी हो जाने पर शासन उस अधिकारी को उसके पद पर पुष्ट (कन्फर्म) कर सकती है अथवा यदि शासन की राय में उसका कार्य अथवा आचरण असंतोषप्रद रहा है तो शासन या तो उसे उस नौकरी से कार्यमुक्त कर सकती है अथवा उसकी परिवीक्षा की अवधि को उचित समय अवधि के लिये बढ़ा सकती है।

(घ) यदि शासन द्वारा उप नियम (ख), (ग) के अंतर्गत कोई कार्यवाही नहीं की जाती है तो परिवीक्षा की निर्धारित अवधि के बाद के समय की नियुक्ति मासिक नियुक्ति मानी जावेगी जिसे उभय पक्ष में से कोई भी एक पक्ष लिखित रूप से एक महीने का नोटिस देकर खत्म कर सकता है।

(च) यदि शासन, सेवा में नियुक्ति करने का अधिकार किसी अधिकारी को सौंपती है तो वह अधिकारी इस नियम के अंतर्गत शासन के किसी भी अधिकारी को सौंप सकता है।

(छ) इन नियमों के अंतर्गत नियुक्त अधिकारी छुट्टियों, वेतन वृद्धि और पेन्शन के उसी तरह अधिकारी रहेंगे जिस तरह केन्द्रीय शासन के अन्य अधिकारी उस समय लागू नियमों के अधीन रहते हैं। केन्द्रीय भविष्य निधि का नियमन जिन नियमों के अनुसार होता है उन नियमों के अनुसार ये भी इस निधि में सम्मिलित हो सकते हैं।

(ज) इन अधिकारियों का स्थानान्तरण भारत में कहीं भी किया जा सकता है और आपात स्थिति में इनका स्थानान्तरण भारत के अंदर या बाहर युद्ध क्षेत्र-सेवा के लिये कहीं भी किया जा सकता है। उन्हें उड़ने वाले वायुयानों पर काम करने के लिये भी नियुक्त किया जा सकता है।

(झ) जिन अधिकारियों की नियुक्ति इंजीनियरी सेवा (इलैक्ट्रिकी) परीक्षा के जरिये होती है उनकी सापेक्ष (रिलेटिव) वरिष्ठता (सीनियारिटी) सामान्यतया परीक्षा में उनके गुणानुक्रम (आर्डर आफ मरिट) पर निर्भर रहेगी। बिशिष्ट (डिस्टिंक्शुअल) मामलों में वरिष्ठता को स्थिर करने के निर्णय का अधिकार भारत सरकार ने अपने हाथों में रखा है।

(ट) संचार अधिकारियों/तकनीकी अधिकारियों की वरिष्ठ संचार अधिकारी/वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी के ग्रेडों में पदोन्नति उन जगहों पर निर्भर करेगी जो इन ग्रेडों में खाली होती है। ये पदोन्नतियां वरिष्ठता व योग्यता के आधार पर उन संचार अधिकारियों/तकनीकी अधिकारियों में से की जावेगी जिन्होंने अपने ग्रेड में न्यूनतम तीन वर्ष की सेवा पूरी कर ली है।

(ठ) नौकरी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन सेवा-शर्तों में परिशोधन (रिवीजन) किये जा सकते हैं। बाद में किये जाने वाले इन सेवा शर्तों के परिवर्तनों का प्रभाव यदि किहीं उम्मीदवारों पर प्रतिकूल पड़ता है तो वे किसी तरह की क्षतिपूर्ति के हकदार नहीं होंगे।

(ड) विमान विभाग के संचार अधिकारियों/तकनीकी अधिकारियों के पदों के वेतनमान नीचे दिये जा रहे हैं :

- (1) संचार अधिकारी (श्रेणी-1)
रुपये 400-400-450-30-600-35-670 द० रो०
-35-950
- (2) तकनीकी अधिकारी (श्रेणी-2)
रुपये 400-400-450-30-600-35-670 द० रो०
-35-950

(ढ) जिन व्यक्तियों की नियुक्ति संचार अधिकारी/तकनीकी अधिकारी के पदों पर की जाती है, उन्हें आवश्यकता के अनुसार किसी भी रक्षा सेवा अथवा भारत की रक्षा से संबंधित किसी भी पद पर काम करना पड़ सकता है। यदि कोई प्रशिक्षण दिया जाता है तो उसकी अवधि को मिलाकर रक्षा सेवा की अवधि चार साल से कम नहीं होगी।

परन्तु शर्त यह है कि ऐसे व्यक्तियों को

(क) नियुक्ति की तारीख से दस वर्ष बीत जाने पर ऊपर बतायी हुई सेवा करने की आवश्यकता नहीं रह जावेगी।

(ख) चालीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने के बाद ऊपर बतायी हुई सेवा करने की आवश्यकता सामान्यतया नहीं रह जावेगी।

5. केन्द्रीय शासन के अधीन अन्य पदों के वेतनमान नीचे दिये जा रहे हैं :—

श्रेणी 1	रुपये 400-950
श्रेणी 2	रुपये 350-900

पोतपरिवहन तथा परिवहन मंत्रालय

(परिवहन पक्ष)

नई दिल्ली, दिनांक 29 दिसम्बर 1969,

सं० 19-टी (14)/68.—श्री तुलसी दास यादव, संसद सचिव, प्रो० के० टी० मरचेन्ट जिन्होंने त्याग पत्र दे दिया है, के स्थान में इस मंत्रालय के संकल्प सं० 19-टी (14)/68 दिनांक 3 जून 1969 के अन्तर्गत गठित सड़क सुरक्षा अध्ययन दल के अध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं।

घाबेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधों को प्रेषित कर दी जाए और इसे सर्वसाधारण की सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाये।

के० नारायणन, संयुक्त सचिव

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

नई दिल्ली-1, दिनांक 24 दिसम्बर 1969

फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

सं० 7/63/69-एफ० आई० (एन० ए०)—भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संकल्प सं० 7/1/69-एफ० आई० (एन० ए०), तारीख 7 फरवरी, 1969, जो में सरकारी संकल्प संख्या 7/1/69 एफ० आई० (एन० ए०) तारीख 5 अप्रैल, 7 जून तथा 6 नवम्बर, 1969 द्वारा संशोधित किया गया, में अधिसूचित फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों सम्बन्धी नियमावली के नियम 3 और 6 के अनुसार, फिल्मों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारार्थ प्रविष्टियां आमन्त्रित की जाती हैं। प्रविष्टियां 1969 के कैलेंडर वर्ष में सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रमाणित की गई निम्नलिखित श्रेणियों की भारतीय फिल्मों के सम्बन्ध में ही भेजी जा सकेंगी:—

(1) फिल्म कला के रूप में

- (1) वर्ष की सर्वोत्तम फीचर फिल्म।
- (2) परिवार नियोजन पर सर्वोत्तम फीचर फिल्म।
- (3) राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम फीचर फिल्म।
- (4) वर्ष की सर्वोत्तम बाल फिल्म।

(2) फिल्म सूचना साधन के रूप में

- (5) सर्वोत्तम सूचना फिल्म (डाकुमेंट्री) ।
 (6) सर्वोत्तम शैक्षणिक फिल्म ।
 (7) सर्वोत्तम सामाजिक फिल्म (जो समकालीन सामाजिक समस्याओं का चित्रण तथा उनका निष्पक्ष विश्लेषण करती हो) ।

(8) सर्वोत्तम प्रेरक फिल्म

- (1) व्यवसायिक
 (2) अव्यावसायिक

(3) विशाल प्रकार की छोटी फिल्मों

- (9) सर्वोत्तम प्रयोगात्मक फिल्म ।
 (10) सर्वोत्तम कार्टून (एनीमेशन) फिल्म ।

2. उपरलिखित तथा अन्य श्रेणियों की फिल्मों के बारे में प्रविष्टियाँ निर्माता (निर्माताओं) या उस (उन) द्वारा विधिवत अधिकृत किसी अन्य व्यक्ति (व्यक्तियों) द्वारा 31 जनवरी, 1970 तक भेजी जा सकती हैं। प्रविष्टियाँ उपरिनिर्दिष्ट नियमावली से संलग्न परिशिष्ट में दिए गए फार्म में, दो प्रतियों में भेजनी चाहिए। 35 मि० मी० में 1000 मीटर और 16 मि० मी० में 400 मीटर से अधिक लम्बी फीचर फिल्मों और छोटी फिल्म की प्रत्येक प्रविष्टि फार्म के साथ 100 रुपये की और इससे कम लम्बाई की फिल्मों की प्रत्येक प्रविष्टि फार्म के साथ 50 रुपये की ट्रेजरी रसीद भी भेजनी चाहिए। उक्त राशि केन्द्रीय सरकार के खाते में मुख्य शीर्षक "एल-2-मिसलेनियस" के अन्तर्गत जमा करवानी चाहिए।

3. विभिन्न श्रेणियों की फिल्मों के बारे में प्रविष्टियाँ नीचे दिए गए अधिकारियों के पास भेजनी चाहिए:-

- (क) प्रादेशिक अधि- (1) हिन्दी (उर्दू, हिन्दुस्तानी कारी, केन्द्रीय और भोजपुरी, राजस्थानी, फिल्म सेन्सर और मैथिली जैसी संबंधित बोर्ड, 91-बाल-बोलियों सहित), पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती, मराठी, केशव रोड, बम्बई (कोंकणी सहित), सिन्धी और अंग्रेजी की फीचर फिल्मों 6।

- (2) सभी भाषाओं की डाकु-मैन्ट्री फिल्मों ।

- (3) प्रेरक फिल्मों (व्यावसायिक और अव्यावसायिक) ।

- (4) सभी भाषाओं की बाल फिल्मों ।

- (5) सभी भाषाओं की शैक्षणिक फिल्मों ।

- (6) सभी भाषाओं की सामा-जिक फिल्मों ।

- (7) सभी भाषाओं की प्रयो-गात्मक फिल्मों ।

- (8) सभी भाषाओं की कार्टून फिल्मों ।

- (ख) प्रादेशिक अधि- बंगला, [उड़िया और] असमिया कारी केन्द्रीय की फीचर फिल्मों । फिल्म सेन्सर बोर्ड आकाशवाणी बिल्डिंग एडन गार्डन्स, कलकत्ता ।

- (ग) प्रादेशिक अधि- तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और कारी केन्द्रीय मलयालम की फीचर फिल्मों । फिल्म सेन्सर बोर्ड ब्लॉक 3, पांचवी मंजिल, सेंट्रल बिल्डिंग, 35-हैडोस रोड, मद्रास-1 ।

प्रिन्टें संबंधित प्रादेशिक अधिकारी द्वारा बताए गए स्थानों पर भेजनी होगी ।

4. केन्द्रीय समिति के देखने के लिए भुनी गई फिल्म के प्रवेशक को अपने खर्च पर फिल्म की प्रिन्ट तथा उसके कथासार की अतिरिक्त 15 प्रतियों जिस के साथ कलाकारों की सूची तथा गीतों की पुस्तकें, हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों में हों, के अतिरिक्त विस्तृत कथोपकथन की अपेक्षित संख्या में प्रतियाँ, 6 फोटो, हिन्दी और अंग्रेजी में स्क्रिप्ट की प्रतियाँ और फिल्म से संबंधित प्रचार सामग्री भी भेजनी होगी ।

5. पुरस्कारार्थ प्रविष्टि के लिए बाल फिल्म की अधिकतम लम्बाई 35 मि० मी० में 3,400 मीटर या 16 मि० मी० में 1,360 मीटर होगी । सूचना फिल्म (घूत) के मामलों को छोड़कर, "फिल्म सूचना के साधन के रूप में" तथा "विशेष प्रकार की छोटी फिल्मों" की श्रेणियों के अन्तर्गत प्रविष्टि होने वाली फिल्म की अधिकतम लम्बाई 35 मि० मी० में 1000 मीटर या 16 मि० मी० में 400 मीटर होगी । बाल फिल्म के रूप में प्रविष्टि फिल्म फीचर फिल्म के रूप में और फीचर फिल्म के रूप में प्रविष्टि फिल्म बाल फिल्म के रूप में प्रविष्टि नहीं हो सकेगी ।

6. पुरस्कार जीतने वाली फिल्में सम्भवतः पुरस्कार वितरण समारोह के बाद सरकार द्वारा आयोजित किए जाने वाले फिल्म उत्सवों में प्रदर्शित की जाएंगी ।

क० क० खाना, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT*New Delhi, the 5th January 1970*

No. 1-Pres/70.—The President is pleased to confer the "TERRITORIAL ARMY DECORATION" for meritorious service on the undermentioned commissioned officers of the Territorial Army :—

Major GOPALAPILLAI MADHAVAN NAIR (TA-40175), Artillery.

Major MOHINDER SINGH (TA-40203), Artillery.

MajorINDERJEET TANEJA (TA-40255), Artillery.

Major GAUTAM DEV (TA-40276), Artillery.

Major TEJ BAHADUR SARDANA (TA-40323), Artillery.

Major KANWAR SAWAI SINGH SHEKHAWAT (TA-40384), Artillery.

Captain VIRINDER SAIN KAPUR (TA-40447), Artillery.

Captain GOVINDARAJULU RAMANUJAM (TA-40533), Infantry.

NAGENDRA SINGH
Secretary to the President.

PLANNING COMMISSION**RESOLUTION****COMMITTEE OF EXPERTS ON UNEMPLOYMENT ESTIMATES***New Delhi, the 29th December 1969*

No. L&E(E)12-7/68.—In continuation of Resolution No. L&E(E)12-7/68, dated the 23rd June, 1969 the term of appointment of the Committee of Experts on Unemployment Estimates is extended upto March 31, 1970.

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be published in the Gazette of India and communicated to all concerned.

B. D. PANDE
Secretary, Planning Commission.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS**RULES***New Delhi, the 17th January 1970*

No. 8/62/69-CS-II.—The rules for a competitive examination to be held by the Union Public Service Commission in June 1970, for selection of (1) Released Emergency Commissioned Officers/Short Service Commissioned Officers who were commissioned in the Armed Forces after 1st November 1962 and (2) Ex-servicemen, for the purpose of filling temporary vacancies reserved for them in the Services/posts covered by Category I and Category II respectively, as follows, are published for general information, in pursuance of the provisions contained in rule 5 of the Released Emergency Commissioned Officers and Short Service Commissioned Officers (Reservation of Vacancies) Rule, 1967, and rule 4 of the Ex-servicemen (Reservation of Vacancies in Central Civil Services and posts Class III and Class IV) Rules, 1969. The Released Emergency Commissioned Officers and Short Service Commissioned Officers (Reservation of Vacancies) Rules, 1967, and the Ex-servicemen (Reservation of Vacancies in the Central Services and Posts Class II and Class IV) Rules, 1969, aforesaid shall cease to be in force on and from the 29th January, 1971, and at July 1971; respectively unless extended by Government.

CATEGORY I**Class II Services/posts**

- (i) Indian Foreign Service (B)—(Grade II of the Stenographers' Sub-Cadre);

- (ii) Central Secretariat Stenographers' Service—Grade II (for inclusion in the Select List of the Grade);
- (iii) Armed Forces Headquarters Stenographers' Service—Grade II;
- (iv) Posts of Stenographer in the office of the Election Commission, Delhi;
- (v) Posts of Stenographer in the office of the Central Vigilance Commission, Delhi;
- (vi) Posts of Stenographer in the Department of Parliamentary Affairs, Delhi;
- (vii) Posts of Stenographer in the Department of Tourism, Delhi; and
- (viii) Posts of Stenographer in other Departments and Offices of the Government of India not participating in the Central Secretariat Stenographers' Service/I.F.S. (B)/Armed Forces Headquarters Stenographers' Service.

CATEGORY II**Class III Services/posts**

- (i) Railway Board Secretariat Stenographers' Service—Grade II;
- (ii) Posts of Stenographer in the Directorate General, Research Designs & Standards Organisation, Lucknow;
- (iii) Posts of Stenographer in the Directorate General, Ordnance Factories, Calcutta; and
- (iv) Posts of Stenographers in other Departments and Offices of the Government of India not participating in the Railway Board Secretariat Stenographers' Service.

Subject to the provisions of rule 2, a candidate may apply for admission to the examination in respect of any one or more of the Services/posts mentioned above. He may specify in his application as many of these Services/posts as he may wish to be considered for.

N.B. I.—Candidates are required to specify clearly in their applications the order of preferences for the Services/posts for which they wish to be considered. They are advised to indicate as many Services/posts as they wish to, so that having regard to their ranks in the order of merit, due consideration can be given to their preferences when making appointments.

N.B. II.—No request for addition to or alteration in the order of preferences for the Services/posts originally indicated by a candidate in his application will be considered unless such a request is received in the office of the Union Public Service Commission on or before 31st August, 1970.

2. (a) Emergency Commissioned Officers/Short Service Commissioned Officers will be eligible to compete only for vacancies reserved for them in the posts of Stenographer in Class II Services/posts included in Category I.

(b) Ex-Servicemen will be eligible to compete only for vacancies reserved for them in the posts of Stenographer in Class III Services/posts included in Category II.

3. The number of vacancies to be filled on the results of the examination will be specified in the Notice issued by the Commission.

Reservations will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government of India.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Scheduled Castes/Tribes Lists (Modification) Order, 1956, read with Scheduled Castes and Scheduled Tribes Orders (Amendment) Act, 1956, the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order 1956, the

Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959 the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964 the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order, 1967, the Constitution (Goa, Daman and Diu, Scheduled Castes Order, 1968 and the Constitution (Goa, Daman and Diu), Scheduled Tribes Order, 1968.

4. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix I to the Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

5. Subject to the provisions of these Rules all Emergency Commissioned Officers/Short Service Commissioned Officers who were commissioned in the Armed Forces after 1st November, 1962, and who have been released prior to the date of this notification or are due to be released thereafter till the end of 1970 will be eligible to appear at this examination.

NOTE 1.—For the purpose of these Rules, “release” means :

- (i) release as per the Scheduled year of release,
- (ii) invalidment owing to as disability attributable to or aggravated by military service, from the Armed Forces after a spell of service, and not during or at the end of training, or during or at the end of Short Service Commission granted to cover the period of such training prior to being taken in actual service, nor does it cover cases of officers released on account of misconduct, or inefficiency or at their own request.

NOTE 2.—The expression “scheduled year or release” means :—

- (i) in so far as it relates to the Emergency Commissioned Officers, the year in which they are due for release in accordance with the phased programme approved by the Government of India in the Ministry of Defence; and
- (ii) in so far as it relates to the short Service Commissioned Officers, the year in which their normal tenure of 5 years as Short Service Commissioned Officers is to expire.

NOTE 3.—The candidature of a person is liable to be cancelled, if after submitting his application, he is granted permanent Commission in the Armed Forces, or he resigns from the Armed Forces, or he is released therefrom on account of misconduct, inefficiency or at his own request.

NOTE 4.—Engineers and Doctors employed under the Central Government or State Governments or Government owned industrial undertakings who are required to serve in the Armed Forces for a minimum prescribed period under the Compulsory Liability Scheme and who are granted Short Service Commission under the relevant rules during the period of such service will not be eligible for admission to this examination.

NOTE 5.—Officers belonging to the Volunteer Reserve Forces of the Armed Forces and called upon for temporary service will not be eligible for admission to this examination.

6. Subject to the provisions of these Rules, all Ex-Servicemen will be eligible to appear at this examination.

NOTE.—For the purpose of these Rules, “Ex-Servicemen” means a person who has served in any rank (whether as a combatant or not) in the Armed Forces of the Union for a continuous period of six months and who has been released otherwise than by way of dismissal or discharge on account of misconduct or inefficiency.

Explanation.—For the purposes of these Rules, “Armed Forces of the Union” shall include the Armed Forces of the former Indian States but does not include members of the following Forces, namely :—

- (a) Assam Rifles;

(b) Lok Sahayak Sena; and

(c) General Reserve Engineer Force.

7. (1) A candidate must be either :—

- (a) a citizen of India, or
- (b) a subject of Sikkim, or
- (c) a subject of Nepal, or
- (d) a subject of Bhutan, or
- (e) a Tibetan refugee who came over to India, before the 1st January, 1962, with the intention of permanently settling in India, or
- (f) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Ceylon and East African countries of Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) with the intention of permanently settling in India.

Provided that a candidate belonging to categories (c), (d), (e) and (f) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

Certificate of eligibility will not, however, be necessary in the case of candidates belonging to any one of the following categories :—

- (i) Persons who migrated to India from Pakistan before the nineteenth day of July, 1948, and have ordinarily been residing in India since then;
- (ii) Persons who migrated to India from Pakistan on or after the nineteenth day of July, 1948, and have got themselves registered as citizens of India under Article 6 of the Constitution;
- (iii) Non-citizens in category (f) above who entered service under the Government of India before the commencement of the Constitution, viz., 26th January, 1950, and who have continued in such service since then. Any such person who re-entered or may re-enter such service with break after the 26th January, 1950, will, however, require certificate of eligibility in the usual way.

Provided further that candidates belonging to categories (c), (d) and (e) above will not be eligible for appointment to the Indian Foreign Service (B)—(Grade II of the Stenographers' Sub-Cadre).

(2) A candidate in whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination and he may also provisionally be appointed subject to the necessary certificate being given to him by the Government.

8(A) An Emergency Commissioned Officer/Short Service Commissioned Officer seeking admission to the examination under rule 5 above, must not have attained the age of 24 years on the 1st January of the year in which he joined the pre-Commission training in the Armed Forces or got the Commission (where there was only post-Commission training)

(B) The age limit of 24 years will be relaxable up to the age of 35 years in respect of such of the Emergency Commissioned Officers/Short Service Commissioned Officers as had been regularly appointed as Stenographers (including language Stenographers)/Clerks/Stenotypists in the various Departments/Offices of the Government of India or in the Office of the Election Commission and the Central Vigilance Commission and had rendered not less than 3 years continuous service as Stenographers (including language Stenographer/Clerk/Stenotypist on the 1st January of the year in which they joined the pre-Commission training or got the Commission (where there was only post Commission training and would have so continued but for joining the Armed Forces, or have rendered on 1st January, 1970, not less than 3 years continuous service as regularly appointed Stenographers including language Stenographers)/Clerks/Stenotypists in the various Departments/offices of the Government of India or in the office of the Election Commission and the Central Vigilance Commission and continue to be so employed.

Provided that the above age relaxation will not be available to persons appointed as Stenographers, on the basis of

earlier examinations, held by the Union Public Service Commission, in :—

- (i) Central Secretariat Stenographers' Service; or
- (ii) Railway Board Secretariat Stenographers' Service; or
- (iii) Indian Foreign Service (B); or
- (iv) Armed Forces Headquarters Stenographers' Service.

NOTE.—Service rendered by R.M.S. Sorters employed in Subordinate offices of P. & T. Department shall be treated as service rendered in the grade of Clerk for purpose of Rule 8(B) above.

(C) An Ex-Serviceman seeking admission to the examination under rule 6 above, must have attained on 1st January, 1970, the age of 18 years and must not have attained an age exceeding 24 years by more than his total service in the Armed Forces increased by three years.

NOTE.—The period of "call up service" of an ex-Serviceman in the Armed Forces shall also be treated as service rendered in the Armed Forces for purpose of rule 8(C) above.

(D) The upper age limit in all the above cases, will be further relaxable :—

- (i) up to a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;
- (ii) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January, 1964;
- (iii) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from East Pakistan and has migrated to India on or after 1st January, 1964;
- (iv) up to a maximum of five years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry, and has received education through the medium of French at some stage;
- (v) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964 under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vi) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Ceylon and has migrated to India on or after 1st November, 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vii) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Goa, Daman and Diu;
- (viii) up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);
- (ix) up to a maximum of three years if a candidate is a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (x) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (xi) up to a maximum of three years in the case of Defence Services personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof; and
- (xii) up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel, disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof, who belongs to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes.

(E) The age limit prescribed in sub-para (A) above will also be relaxable :—

- (i) up to a maximum of three years if a candidate who joined the pre-Commission training in the Armed Forces or got the Commission (where there was only post-Commission training) in 1963, is a *bona fide* displaced person from Pakistan;
- (ii) up to a maximum of eight years if a candidate who joined the pre-Commission training in the Armed Forces or got the Commission (where there was only post-Commission training) in 1963, belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a *bona fide* displaced person from Pakistan;
- (iii) up to a maximum of four years, if a candidate, who joined the pre-Commission training in the Armed Forces or got the Commission (where there was only post-Commission training) in 1963 or 1964 or 1965, is a resident of the Andaman and Nicobar Islands; and
- (iv) up to a maximum of three years if a candidate, who joined the pre-Commission training in the Armed Forces, or got the Commission (where there was only post-Commission training) in 1963 or 1964 or 1965, is an Indian citizen and is a repatriate from Ceylon.

N.B.—(i) The candidature of a person who is admitted to the examination under the age concession mentioned in Rule 8(B) above, is liable to be cancelled, if after submitting his application, he resigns from service or his services are terminated by his department, either before or after taking the examination. He will, however, continue to be eligible if he is retrenched from the service or post after submitting his application.

(ii) A Stenographer (including language Stenographer/Clerk/Stenotypist who was on deputation to an ex-cadre post with the approval of the competent authority at the time of his joining the pre-Commission training in the Armed Forces or the Commission where there was post-Commission training or is on deputation to an ex-cadre post with the approval of the competent authority, on release from the Armed Forces will be eligible to be admitted to the examination, if otherwise eligible.

9. No candidate shall be permitted to compete more than two times at the examination, the restriction being effective from the examination held in 1969.

NOTE.—If a candidate actually appears in any one or more subjects, he shall be deemed to have competed at the examination for all the Services posts included in Category I or Category II, as the case may be, (cf. Rule 2), to which he is admitted by the Commission.

10. Candidates must have passed one of the following examination or must possess one of the following certificates :—

- (i) Matriculation examination of any University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India;
- (ii) an examination held by a State Education Board at the end of the Secondary School Course for the award of a School Leaving Secondary School, High School or any other Certificate which is accepted by the Government of that State as equivalent to Matriculation certificate for entry into services;
- (iii) Cambridge School Certificate Examination (Senior Cambridge);
- (iv) European High School Examination held by the State Governments;
- (v) Tenth Class certificate of the Higher Secondary Course of Sri Aurobindo International Centre of Education, Pondicherry;
- (vi) Tenth Class Certificate from the Technical Higher Secondary School of the Delhi Polytechnic;
- (vii) Tenth Class Certificate from a recognised Higher Secondary School or from a recognised school preparing students for the Indian School Certificate Examination;

- (viii) Junior Examination of the Jamia Millia Islamia, Delhi in the case of *bona fide* resident students of the Jamia only;
- (ix) Bengal (Science) School Certificate;
- (x) Final School Standard Examination of the National Council of Education, Jadavpur, West Bengal (since inception);
- (xi) the following French Examination of Pondicherry :
 - (i) 'Brevet Elementaire' (ii) Brevet d'Enseignement Primaire de Langue Indienne (iii) Brevet D'etudes du Premier Cycle' (iv) Brevet D'Enseignement Primaire Supérieur de Langue Indienne' and (v) 'Brevet de Langue Indienne' (Vernacular).
- (xii) Indian Army Special Certificate of Education;
- (xiii) Higher Education Test of the Indian Navy;
- (xiv) Advanced Class (Indian Navy) Examination;
- (xv) Ceylon Senior School Certificate Examination;
- (xvi) Certificate granted by the East Bengal Secondary Education Board, Dacca;
- (xvii) Secondary School Certificates granted by the Board of Secondary Education at Comilla/Rajshahi/Khulna in East Pakistan;
- (xviii) School Leaving Certificate Examination of the Government of Nepal;
- (xix) Anglo-Vernacular School Leaving Certificate (Burma);
- (xx) Burma High School Final Examination Certificate;
- (xxi) Anglo-Vernacular High School Examination of the Education Department, Burma (Pre-war);
- (xxii) Post-War School Leaving Certificate of Burma;
- (xxiii) the 'Vinit' examination of the Gujarat Vidyapith, Ahmedabad;
- (xxiv) Pass in the 5th Year of 'Lyceum' a Portuguese qualification in Goa, Daman and Diu;
- (xxv) General Certificate of Education Examination of Ceylon at 'Ordinary' level provided it is passed in six subjects including English and Mathematics and either Sinhalese or Tamil;
- (xxvi) General Certificate of Education Examination of the Associated Examination Boards, London at 'Ordinary' Level provided it is passed in five subjects including English; and
- (xxvii) The Junior/Secondary Technical School Examination conducted by any of the State Boards of Technical Education.

NOTE 1.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply provided, the qualifying examination is completed before the commencement of this examination. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible, but the admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination, as soon as possible, and in any case not later than two months after the commencement of this examination.

NOTE 2.—In exceptional cases, the Commission may treat a candidate, who has not any of the qualifications prescribed in this rule, as educationally qualified provided that he possesses qualifications, the standards of which, in the opinion of the Commission justifies his admission to the examination.

11. (a) No male candidate who has more than one wife living or who having a spouse living marries in any case in which such marriage is void by reason of its taking place during the life-time of such spouse, shall be eligible for appointment to any of the Services/posts, appointments to

which are made on the results of this competitive examination unless the Government of India, after being satisfied that there are special grounds for doing so, exempt any male candidate from the operation of this rule.

(b) No female candidate whose marriage is void by reason of the husband having a wife living at the time of such marriage or who has married a person who has a wife living at the time of such marriage shall be eligible for appointment to any of the Services/posts appointments to which are made on the result of this competitive examination unless the Government of India, after being satisfied that there are special grounds for doing so, exempt any female candidate from the operation of this rule.

(c) A person married to a foreign national shall not be eligible for appointment to the Indian Foreign Service (B).

(d) A person with more than three children will not be eligible for appointment to I.F.S. (B).

12. A candidate serving in the Armed Forces must submit his application for this examination to the Officer Commanding of his unit who will forward it to the Union Public Service Commission.

All other candidates in Government service must submit their applications for this examination to their Head of department or office concerned who will forward it to the Union Public Service Commission.

13. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient discharge of his duties as an officer of the Service. A candidate who after such medical examination, as may be prescribed by the competent authority, is found not to satisfy these requirements, will not be appointed. Only such candidates as are likely to be considered for appointment will be medically examined.

NOTE.—In the case of the disabled *ex-Defence Services* personnel, a certificate of fitness granted by the Demobilisation Medical Board of the Defence Services will be considered adequate for the purpose of appointment.

14. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

15. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

16. Any attempt on the part of a candidate to obtain support for his candidature by any means may disqualify him for admission.

17. A candidate who is or has been declared by the Commission guilty of impersonation or of submitting fabricated documents or documents which have been tampered with or of making statements which are incorrect or false or of suppressing material information or otherwise resorting to any other irregular or improper means for obtaining admission to the examination, or of using or attempting to use unfair means in the examination hall, or of misbehaviour in the examination hall, may, in addition to rendering himself liable to criminal prosecution,—

(a) be debarred permanently or for a specified period :—

(i) by the Commission, from admission to any examination or appearance at any interview held by the Commission for selection of candidates; and

(ii) by the Central Government from employment under them.

(b) be liable to disciplinary action under the appropriate rules, if he is already in service under Government.

18. After the examination—

(a) the candidates competing for Services/posts included in Category I will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate; and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examina-

tion shall be recommended for appointment for inclusion in the select list of Grade II of the Central Secretariat Stenographers Service; and

- (b) the candidates competing for Services/posts included in Category II will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate; and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for appointment with due regard to the number of vacancies available to be filled on the results of the examination.

Provided that any candidate belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes who though not qualified by the standard prescribed by the Commission for any Service/Post is declared by them to be suitable for appointment thereto for inclusion in the select list of Grade II of the Central Secretariat Stenographers Service with due regard to the maintenance of efficiency of administration, shall be recommended for appointment to vacancies reserved for members of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes as the case may be.

19. If on the result of the examination a sufficient number of qualified candidates is not available to fill the vacancies reserved for released Emergency Commissioned Officers/Short Service Commissioned Officers in Category I Services/posts and for Ex-servicemen in Category II Services/posts, the unfilled vacancies shall be filled in the manner prescribed by the Government in this behalf from time to time.

20. Due consideration will be given at the time of making appointments on the results of this examination, to the preferences expressed by a candidate at the time of his application, for the various Services/posts included in the Category (cf. rule 1) in respect of which he has been admitted to the examination, (cf. Col. 24 of the application form).

21. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion, and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

22. Success in the examination confers no right to appointment, unless Government are satisfied, after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is suitable in all respects for appointment to the Service/post.

23. Brief particulars relating to the Services/posts to which recruitment is being made through this examination, are given in Appendix II.

M. K. VASUDEVAN, Under Secy.

APPENDIX I

1. The competitive examination comprises :

- (a) Written examination in two subjects as shown in para 2 below carrying a maximum of 200 marks.
- (b) Shorthand tests in English as shown in para 3 below, for those who qualify at the written examination, carrying a maximum of 300 marks, of which 50 marks shall be assigned to the Evaluation of the Record of Service in the Armed Forces in the case of Emergency Commissioned Officers and Short Service Commissioned Officers.

2. The subjects of the written examination, the time allowed and the maximum marks allotted to each subject will be as follows :

Subject	Time allowed	Maximum Marks
(ii) General Knowledge	3 hours	100
(i) English	3 hours	100

3. (i) Candidates will be given two dictation tests in English one at 120 words per minute for seven minutes, and

another at 100 words per minute for ten minutes, which they will be required to transcribe in 45 and 50 minutes, respectively.

(ii) Candidates who satisfy the minimum qualifying standard in the dictation at 120 words per minute will rank above the candidates who obtain the same standard in the dictation at 100 words per minute, persons in each group being arranged *inter se* in order of their merit as disclosed by the aggregate marks awarded to each candidate.

(iii) Candidates will be required to transcribe their shorthand notes on typewriters, and for this purpose they will be required to bring their own typewriters with them.

4. The syllabus for the written examination will be as shown in the schedule to this Appendix; and the question papers for the written examination will be the same as for the corresponding subjects in the scheme of the regular Stenographers' Examination which will be held concurrently.

5. All question papers must be answered in English.

6. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances will they be allowed the help of a scribe to write down answers for them.

7. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all subjects of the examination.

8. Only those candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written test as may be fixed by the Commission in their discretion will be called for shorthand test.

9. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

10. Deduction up to 5 per cent of the maximum marks for the written subjects will be made for illegible handwriting.

11. Credit will be given for orderly, effective and exact expression, combined with due economy of the words in all subjects of the examination.

SCHEDULE

Standard and syllabus of the examination

NOTE.—The standard of the question papers in Part A will be approximately that of the Matriculation examination of an Indian University.

English.—The paper will be designed to test the candidates' knowledge of English Grammar and Composition, and generally their power to understand and ability to write correct English. Account will be taken of arrangement, general expression and workmanlike use of the language. The paper may include questions on essay writing; precis writing, drafting; correct use of words; easy idioms and prepositions. direct and indirect speech, etc.

General Knowledge.—Some knowledge of the Constitution of India, Five Year Plans, Indian History and Culture, general and economic geography of India, current events, everyday science and such matters of every day observation as may be expected of an educated person. Candidates' answers are expected to show their intelligent understanding of the questions and not detailed knowledge of any text book.

APPENDIX II

Brief particulars relating to the Services/posts to which recruitment is being made through this examination.

A. The Central Secretariat Stenographers' Service

The Central Secretariat Stenographers' Service has at present four grades as follows :—

Selection Grade.—Rs. 350-25-500-30-590-EB-30-800-EB-30-830-35-900. (Persons promoted from Grade I are allowed a minimum salary of Rs. 500 in the scale).

Grade I.—Rs. 350-25-650-EB-30-770 (Persons promoted from Grade II are allowed a minimum salary of Rs. 400).

Grade II.—Rs. 210-10-270-15-300-EB-15-450-EB-20-530.

Grade III.—Rs. 130-5-160-8-200-EB-256-EB-8-280.

(2) Persons recruited to Grade II of the Service will be on probation for a period of two years. During this period, they may be required to undergo such training and to pass such examinations as may be prescribed by Government.

(3) On the conclusion of the period of probation, Government may confirm the person concerned in his appointment or, if his work or conduct, in the opinion of Government, has been unsatisfactory, he may either be discharged from the Service or his period of probation may be extended for such further period as Government may think fit.

(4) Persons, recruited to Grade II of the Service will be posted to one of the Ministries or Offices participating in the Central Secretariat Stenographers' Service Scheme. They may, however, at any time be transferred to any other such Ministry or office.

(5) Persons recruited to Grade II of the Service will be eligible for promotion to the next higher grade in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(6) Persons appointed to Grade II of the Service in pursuance of their option for that service will not after such appointment have any claim for transfer or appointment to any post included in the cadre of the Indian Foreign Service (B) or the Railway Board Secretariat Service Scheme.

B. Railway Board Secretariat Stenographers' Service

(a) The Service conditions of Stenographers employed in the Ministry of Railways so far as recruitment, training, promotion, etc. are concerned, are regulated by the Railway Board Secretariat Stenographers' Service Scheme which is on the lines of the erstwhile Central Secretariat Stenographers Scheme. This scheme is now being further revised on the lines of the Central Secretariat Stenographers' Service Rules which have been issued recently.

(b) The Railway Board Secretariat Stenographers' Service is confined to the Ministry of Railways and Staff are not liable to transfer to other Ministries as in the Central Secretariat Stenographers' Service.

(c) Officers of the Railway Board's Stenographers' Service recruited under these rules;

- (i) will be eligible for pensionary benefits; and
- (ii) shall subscribe to the non-contributory State Railway Provident Fund under the rules of that fund as are applicable to Railway Servants appointed on the date they join service.

(d) The candidates appointed to the Railway Board Secretariat Stenographers' Service will be entitled to the privilege of Passes and Privilege Ticket Orders in accordance with the orders issued by the Railway Board from time to time.

(e) As regards leave and other conditions of service, staff included in the Railway Board's Secretariat Stenographers' Service are treated in the same way as other Railway Staff but in the matter of medical facilities they will be governed by rules applicable to other Central Government employees with Headquarters at New Delhi.

C. Indian Foreign Service (B)—Grade II of the Stenographers Sub-cadre

The scale of Grade II of the SSC of the Indian Foreign Service (B) is Rs. 210-10-270-15-300-E.B.-15-450-E.B.-20-530. The officers appointed to Grade II of the SSC of the I.F.S. (Branch 'B') will be governed by the I.F.S. Branch 'B' (RCSP) Rules 1964, I.F.S. (PLCA) Rules, 1961 as made applicable to I.F.S. 'B' officers and such other rules and orders as may be made applicable to them by the Government of India.

The Indian Foreign Service Branch (B) is confined to the Ministry of External Affairs and Indian Missions abroad. The officers appointed to this service are normally not liable to transfer to other Ministries except the Ministry of Foreign Trade and Supply (Department of Foreign Trade). They are, however, liable to be posted abroad against the posts borne on the strength of other Ministries and also liable to be posted to International Commissions etc. They are liable to serve anywhere in India or outside India, including non-family stations.

During service abroad IFS (B) officers are granted foreign allowance in addition to their basic pay at rates which may be sanctioned from time to time, depending upon the cost of living etc. of the countries concerned. In addition the following concessions are also admissible during service abroad, in accordance with the IFS (PLCA) Rules, 1961, as made applicable to IFS (B) officers :—

- (i) Free furnished accommodation according to the scale prescribed by the Government.
- (ii) Medical Attendance Facilities under the assisted Medical Attendance Scheme.
- (iii) Annual return air passage for children between the ages of 8 and 21, studying in India to visit their parents during the long vacation subject to certain conditions.
- (iv) An allowance for the education of children up to a maximum of two children between the ages of 5 and 18 at rates prescribed by Government from time to time.
- (v) Outfit allowance in connection with service abroad, in accordance with the prescribed rules and at rates fixed by Government from time to time. In addition to ordinary outfit allowance, special outfit allowance is admissible to officers posted in countries, where abnormally cold climatic conditions exist.
- (vi) Home leave passage for officers and their families in accordance with the prescribed rules.

The revised leave Rules, 1933 as amended from time to time will apply to members of the service, subject to certain modifications. For service abroad, except in some neighbouring countries, officers, are entitled to an additional credit of leave to the extent of 50 per cent of leave admissible under the Revised Leave Rules.

While in India, officers are entitled to such concessions as are admissible to other Central Government Servants of equal and similar status.

Officers of the IFS (B) are governed by the General Provident Fund (Central Services) Rules 1960, as amended from time to time and by orders issued thereunder.

Officers appointed to this service are governed by the Liberalised Pension Rules, 1950, as amended from time to time and by orders issued thereunder.

D. Armed Forces Headquarters Stenographers' Service

The AFHQ Stenographers' Service has, at present, two grades as follows :—

Stenographers Grade I (Class II—Gazetted)—Rs. 350-25-650.

Stenographers Grade II (Class II—Non-Gazetted)—Rs. 210-10-270-15-300-E.B.-15-450-E.B.-20-530.

The posts in Grade I are filled by promotions from among Grade II Stenographers. Direct recruitment is made in Grade II only.

2. Persons recruited direct as temporary Stenographers Grade II will be on probation for a period of 2 years. Unsatisfactory record of service during this period may result in discharge of the probationer from service. During probation, a member of the Service may be required to undergo such training and to pass such tests as the Government may, from time to time, prescribe.

3. Stenographers Grade II recruited to AFHQ will be generally posted to any office of the Armed Forces Headquarters and Inter-Service Organisations located in Delhi/New Delhi. They will also be liable to be posted to such other Stations outside Delhi/New Delhi, where offices of Armed Forces Headquarters/Inter-Service Organisations may be located.

4. Stenographers Grade II will be eligible for promotion to the post of Stenographer Grade I in accordance with the rules in force from time to time.

5. Leave, Medical aid and other conditions of service are the same as applicable to other ministerial staff employed in Armed Forces Headquarters and Inter-Service Organisations.

E. Election Commission, India

The posts of Stenographers in the Election Commission carry a scale of pay of Rs. 210-10-270-15-300-E.B.-15-450-E.B.-20-530 like the posts of Stenographers in the Central Secretariat Stenographers' Service. These posts are, however, not included in the Central Secretariat Stenographers' Service Scheme and the persons appointed to these posts will have no claim to be appointed in posts included in the cadre of the CSS.

F. Department of Tourism

The posts of Senior Stenographers in the Department of Tourism are sanctioned in the revised scale of Rs. 210-10-290-15-320-E.B.-15-425 and belong to General Central Service Class II (Non-Gazetted)—Ministerial. Senior Stenographers with at least five years service are eligible for promotion in the post of personal Assistant in the pay scale of Rs. 320-15-470-E.B.-15-530. Candidates appointed on the results of this examination will ordinarily be required to serve in the Headquarters establishment of the Department but may be required to serve any where in India.

G. Department of Parliamentary Affairs

The scale of pay for the posts of Stenographer in the Department is Rs. 210-10-270-15-300-E.B.-15-450-E.B.-20-530.

Candidates appointed to the Service by selection through the competitive examination shall be on probation for a period of two years.

H. Central Vigilance Commission, India

The posts of Stenographers in the Central Vigilance Commission carry a scale of pay of Rs. 210-10-270-15-300-E.B.-450-E.B.-20-530 like the posts of Stenographer in the Central Secretariat Stenographers' Service, but these posts are not included in that Service.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE & COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

(COMPANY LAW BOARD)

New Delhi, the 3rd January 1970

ORDER

No. 53(1)-70-CLII.—In pursuance of sub-clause (ii) of clause (b) sub-section (4) of Section 209 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Company Law Board hereby authorises Shri L. D. Vankataraman, Deputy Director, Inspection, Madras, an officer of the Government of India, in the Ministry of Industrial Development, Internal Trade and Company Affairs (Department of Company Affairs) for the purposes of the said Section 209.

H. D. PANJWANI, Under Secy.
to the Company Law Board.

MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 1st January 1970

RESOLUTIONS

No. 3-5/69-FD.—In amplification of the Resolution of the Government of India in the then Ministry of Agriculture No. 6-20/49-F, dated the 19th June, 1950, as amended from time to time, the Government of India have decided that (i) the Minister-in-charge of Forests, Haryana State, and (ii) the Chief Commissioner, Chandigarh Administration, shall also be the members of the Central Board of Forestry constituted thereunder.

411GI/69

2. Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

3. Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

The 2nd January 1970

No. 3-5/69-FD.—In partial modification of the Resolution of the Government of India in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Department of Agriculture), No. 3-4/66-FD, dated 5th July, 1966, the Government of India have decided that the existing entry "(i) Northern Zone" in respect of the Standing Committee of the Central Board of Forestry, reconstituted thereunder, shall be substituted as follows:—

"(i) Northern Zone: Jammu & Kashmir, Punjab, Haryana, Himachal Pradesh & Rajasthan (Delhi & Chandigarh will also be grouped with this zone for pre-Standing Committee meetings)."

2. Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

3. Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

Sd/- (ILLEGIBLE)

Dy. Secy.

DEPARTMENT OF COMMUNICATIONS

New Delhi, the 17th January 1970

No. 8-CD(28)/69.—The following amendment may be made in the Rules published in the Government of India, Department of Communications Notification No. 8-CD(28)/69, dated 25-10-69:—

In sub-rules (b) and (d) of Rule 6, the words "in full (i.e. in all papers) and not partly by examination and partly by exemption(s)" shall be deleted.

S. S. PRUTHI, Under Secy.

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (Transport Wing)

New Delhi, the 29th December 1969

RESOLUTION

No. 19-T(14)/68.—Shri Tulsidas Jadhav, M.P., is appointed as Chairman of the Study Group on Road Safety constituted, under this Ministry's Resolution No. 19-T(14)/68, dated the 3rd June, 1969, in place of Prof. K. T. Merchant who has resigned.

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India, for general information.

K. NARAYANAN, Jt. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

New Delhi, the 22nd December 1969

RESOLUTION

No. DW.V-1(8)/69.—Further to this Ministry's Resolution No. DW.V-1(8)/69, dated the 18th July 1969, Government are pleased to allow a period of one more month with effect from the date of issue of this Resolution, for submission of the final Report by the Committee constituted to review the recommendations of the Committee headed by Shri A. C. Mitra on the control of flood and drainage problems of deltaic areas of Krishna, Godavari and Guntur districts, in the light of this years experience.

ORDER

ORDERED that this Resolution be published in the Gazette of India and copies communicated to all persons concerned.

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to the Government of Andhra Pradesh, with the request to publish the same in the State Gazette for general information.

ORDERED also that a copy of this Resolution be Communicated to all the Ministries of the Govt. of India, the Planning Commission, the Prime Minister's Secretariat, Military Secretary to the President, the Lok/Rajya Sabha Secretariat, the Department of Parliamentary Affairs and the Comptroller and Auditor General of India.

P. R. AHUJA, Jt. Secy.

MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING

New Delhi-1, the 24th December 1969

PUBLIC NOTICE**NATIONAL AWARDS FOR FILMS**

No. 7/63/69-FI(NA).—In pursuance of rules 3 and 6 of the Rules concerning National Awards for Films notified in the Resolution of the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting No. 7/1/69-FI(NA), dated the 7th February, 1969 as amended subsequently vide Government Resolutions No. 7/1/69-FI(NA), dated 5th April, 7th June and 6th November, 1969, entries for the National Awards for Films are hereby invited in respect of the following categories of Indian films certified for public exhibition during the calendar year 1969 :—

I. FILM AS ART

- (1) Best feature film of the year.

3. Entries in respect of the various categories of films should be addressed to the authorities indicated below :—

- (a) The Regional Officer, Central Board of Film Censors, 91, Walkeshwar Road, Bombay-6 :

- (b) The Regional Officer, Central Board of Film Censors, All India Radio Building, Eden Gardens, Calcutta :

- (c) Regional Officer, Central Board of Film Censors, Block III, V. Floor, Central Bldg., 35-Haddows Road, Madras :

The prints will be delivered at such places as advised by the Regional Officer concerned.

4. The entrant of a film selected for viewing by the Central Committee will submit, at his cost, the required number of copies of the detailed dialogue, 6 stills, script in English and Hindi, as well as publicity material relating thereto in addition to the print and 15 additional copies of the synopsis complete with cast and song books both in English and Hindi.

5. The maximum length of a children's film for the purpose of entry for the award shall be 3,400 metres in 35 mm or 1,360 metres in 16 mm. The maximum length of a film

- (2) Best feature film on family planning.
- (3) Best feature film on national integration.
- (4) Best children's film of the year.

II. FILM AS COMMUNICATION

- (5) Best Information film (documentary).
- (6) Best educational/instructional film.
- (7) Best social documentation film (dealing with an objective analysis and presentation of a contemporary social problem).
- (8) Best promotion film
 - (i) Commercial
 - (ii) Non-commercial.

III. SPECIAL SHORT FILMS CATEGORY

- (9) Best experimental film.
- (10) Best animation film.

2. The entries in respect of feature films as mentioned above as well as in other categories may be made by the producer(s) or any other person(s) duly authorised by him (them) in this behalf, upto 31st January, 1970. The entries should be made in duplicate in the form prescribed in the Schedule annexed to the Rules referred to above. The entry forms in respect of feature films and short films shall be accompanied by a treasury chalan of Rs. 100/- in the case of films exceeding 1000 metres in length in 35 mm and 400 metres in 16 mm and of Rs. 50/- in the case of films shorter in length than the above mentioned limit respectively. The above amount should be credited to Central Government Account under the Major Head "LII—Miscellaneous".

- (i) Feature films in Hindi (including Urdu, Hindustani and connected dialects like Bhojpuri, Rajasthani and Maithili), Punjabi, Kashmiri, Gujarati, Marathi (including Konkani), Sindhi and English.

- (ii) Documentary films in all languages.
- (iii) Promotion films (commercial and non-commercial).
- (iv) Childrens films in all languages.
- (v) Educational/instructional films in all languages.
- (vi) Social documentation films in all languages.
- (vii) Experimental films in all languages.
- (viii) Animation films in all languages.

Feature films in Bengali, Oriya and Assamese.

Feature films in Tamil, Telugu, Kannada and Malayalam.

to be entered under the broad categories "Film as Communication" and "Special Short Films Category" shall be 1,000 metres in 35 mm or 400 metres in 16 mm except in the case of Information Film (Documentary). A film entered as a children's film will not be eligible for entry as a feature film or vice-versa.

6. The films winning the Awards are likely to be exhibited at a festival of films to be organised by Government following the function for distribution of the Awards.

K. K. KHAN, Under Secy.